हमीरगढ़
राम सरूप अणखी

राम सरूप अणखी हिन्दी एव पजाबी के चर्चित कथाकार ह। कहानी एक गॉव की (काठ खडक सिह) परतापी सुलगनी रात जख्मी अतात ओर सरदारो जस उपन्यास हिन्दी म प्रकाशित ह। हमीरगढ अणखी का नया उपन्यास है।

इस उपन्यास की कहानी पजाब के मालवा क्षेत्र म घटित होती ह। मनजीत कोर के माध्यम से इस रचना म पजाब का ग्रामीण जीवन बहुत गहराइ के साथ प्रस्तुत हुआ है। वह एक दिलेर ओर साहसी आरत है जो जिन्दगी के साथ जूझना जानती है। उठती जवानी म उसकी देही पर जा दाग लगा था उसका समाधान वह अपने ढग से ही करती जा रही ह। जिन्दगी के अन्तिम पलो तक उसक पास कोइ गुस्सा नहीं रह गया है। बस तसल्ली ही तसल्ली है। पारिवारिक सुख के सामन यादे धीरे-धीरे पीछा छोडती जा रही है।

हमीरगढ़

(उपन्यास)

राम सरूप अणखी

अनुवाद

घनश्याम रजन

स्वास्तिक प्रकाशन

कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

मग्घो उर्फ मनजीत कोर के नाम

1

पिछले पहर बरसात का पहला बादल बरस गया। कच्ची मिट्टी का साधी सोधा गध अच्छी लग रही थी। हवा बह रही थी। पीपल के पत्ते एक दूसरे स टकराते तो वातावरण आर खुशगवार हो उठता।

दिन छिपते ही जलकोर ने भेस दुही और चूल्हे पर दूध औटाने को रख दिया। उसने राम को निर्देश दिया कि वह आग धीमी धीमी हा रखे। ध्यान रखे कि आग बुझने न पाए और तेज भी न हो। अगर दूध बाहर निकल गया तो तरे कान खीच दूगा।

छान बीनकर चावल पहल ही भिगो दिए थे। दूध दो बार उबाल खा चुका तो जलकौर ने पानी निथारकर चावल पतीले मे छोड दिए और कलछी चला दी। उसने फिर राम की ओर देखकर कहा समझ गया न मेरी बात? यही बेठे रहना। तेरी यही ड्यूटी है बस। फिर डिब्बा लेकर सामने आ जाएगा कहेगा पहले मुझ दो चाची।

पूडे पकाते समय मोसम फिर पलट गया। आसमान म बादल थे। लगता था फिर बरसेगा। चूल्हे के ऊपर दीवार मे कील गाडकर लालटेन टाग रखी थी। साफ सुथरी चिमनी की सफेद रोशनी थी जेसे गेस जलती हो। जलकार क माथे पर पसीना था। गुड घोलकर गूधा हुआ पतला पतला आटा परात म ऐसा भरा रखा था जैसे मन भर का हा। वह तवे पर कटोरी भरकर आटा उलटती और फिर पीपल के चोडे मोटे पत्ते स पूडा फलाने लगती। पूडे के चारो ओर सरसो का तल टपकाती। कपास की लकडी क सिर पर कपडे की पट्टी लिपटी थी। तेल उसी से टपकाती थी ओर चुपडती थी। तवे पर तल पडते ही पूडा छन्न छन्न करता। छन्न छन्न मे स उठती सुगध घर क कान कोने म तेरने लगती तो सभी के पेट मे भूख जागने लगती। सुगध पडास के घरा मे पहुचती ता वे भी मुडेरो पर से झाकने लगते। जलकौर आवाज दती अरे भाइ गम गम लेत जाआ। ठडे खडक हो जाएगे तब खाने से क्या फायदा। अपने बतन लाआ। खुद खीर ला आर खुद ही पूडे उठाओ।

आस पास और कोई नही था। उधर वराड मे बठा भजना राम स कुछ पूछ जा रहा था।

भर राम आ श्याम कहा मर गए नासपीटा? आ जाआ अब ता। खाला। काम खत्म हा। इश्वर का रथ भा ता दखो। इसका काइ पता नहा कब बरसने लग जाए। तब चूल्ह चाक म बठना मुश्किल हा जाएगा। जलकोर स्वय हा बोल जा रही थी।

चाचा का बडबडाहट सुनकर राम चूल्ह के पास आया। थाली म खीर एक कटार म दा पूड रखकर वराड म ले आया। वराडे मे मिट्टी के तेल का छाटा लैम्प जल रहा था। भजना खाट पर पालथी मारे बैठा रोटी की प्रतीक्षा कर रहा था। थाली ओर बाटी पकडकर वह बाला अच्छा खासा अधेरा कर दिया ससुरे ने। वहा मडी मे अब तक पता नही क्या कर रहा ह?

आ जाएगा काइ फिकर की बात नही हे बापू! तुम रोटी खाओ। वह जाएगा कहा। दूसरे लडका का टोली म चला गया होगा। दारू पीने लगे हागे। और क्या?

राम दूसरी बार आया तो गिलास मे पानी दे गया।

श्याम कहा हे आज रे? वह भी खा लेता छुट्टी करता। जलकोर ने कहा।

तुम्ह नही पता चाची वह तो मडी गया है।

कब भाग गया? यहा से ता तेरे चाचा के साथ खेत मे गया था। दोनो साथ साथ गए थे।

चाचा ही बता रह है खत से ही चला गया था वह।

ला बताआ कमूत को मडी का कितना शौक है। जब भी मडी लगती है जाता जरूर हे।

राम ने अपनी थाली मे दो-तीन कल्छी खीर डाली दो पूडे थाली मे ही एक ओर रख लिए। पम्प से गिलास मे पानी भरा ओर वही चौतरे पर ही एक ओर बैठकर खाने लग गया।

तेरा चाचा नही दिखाइ दे रहा हे रे?

मडली मे बठा होगा आर क्या। जानवरो को चारा दे गया है। अब छुट्टी है, चाहे जब आए।

वराड मे खाट बिछाकर बाप बेटे श्याम की बाते कर रहे थे। अधेरा बहुत घना था। उन्ह इस बात की चिता थी कि वह अब तक आया क्या नही? इसके बाद अब कब आएगा? सोचते हो सकता ह दूसरे गाव के किसी लडके के साथ उधर-के-उधर ही उसके गाव न चला गया हा। यार दास्त एक दूसरे के साथ अक्सर उनके गाव चले ही जाया करते ह। श्याम के साथ भी तो कइ लडके दूसरे गाव से यहा आकर रात काटते ह। चिता ता उन्ह इस बात की थी कि श्याम राजी-खुशी से हो।

आर फिर दरवाजे का पल्ला खटका। राम ने दोडकर किवाड खोल दिया। भीतर स कुडा लगा हुआ था।

श्याम यह बखत ह आन का? राम ने ऊची आवाज मे पूछा। पर यह क्या यह ता उसका चाचा गुरमेल था।

आया नही अभी तक? उल्ट गुरमल न प्रश्न किया।

नही अभी तक तो उसका काइ पता नहा ह। पता नहा कहा ह। गम न चिनातुर होकर कहा।

खेत स अच्छा भला गया था। कह रहा था मडा जाना ह। अब क्या समझा जाए? गुरमेल आगन की आर जात हुए कह रहा था।

उसकी प्रतीक्षा करते करते जलकोर खीर पूडे खा रहा थी। बाली तुम कहा फस हुए थे। समय पर खाना तो खा लिया करो। कब से तुम्हार इतजार म बठी हू। अब आ रहा हो अब आ रहा हो। फिर पूछा श्यामा कहा है?

मडी गया था। अब क्या पता? गुरमेल ने साधारण रूप से उत्तर दिया। जस उसे कोई चिता न हो।

और अब सब खा पीकर स्वय अपनी अपना खाट बिछाकर लेटे थ। जलकार बतन माज रही थी। गाव का शोरगुल खत्म हो गया था। कही-कही से किसा कुत्ते के भौकने की आवाज सुनाई देती थी। या फिर उजडे घरो के उल्लू बोलत थे। दोना बल और भेस चारा भूसा खाकर बैठ गए थे ओर आराम से लेटे हुए थे। आधी रात का समय था। आसमान मे बादल एकत्रित होकर बैठ गए थे। ना कही जात नजर आ रहे थे और ना अपना रग बदल रहे थे। चाद की चादनी मटमैली सी होकर धरती पर बिछ गइ थी। किसी ने दरवाजा खटखटाया। एक बार सुना नही ता बाहर से किसी ने फिर कुडा खटखटाया। भजना ने पूछा कौन हे भइ?

मै तो ताऊ हरनेक हू। दरवाजा खोलो।

भजना धीरे धीरे उठकर दरवाजे तक गया ओर भीतर का कुडा खोल दिया। गली मे दो लडके खडे थे। बचना भी बाहर गली मे आ गया। उसने पहचान लिया ये अपने ही रिश्तेदारो के लडके थे।

भीतर आ जाओ। भजने ने कहा।

बस ताऊ। हरनेक बोला।

तो फिर वह तुम्हारे साथ नही था। वह कहा हे?

हमारे साथ ही गया था ताऊ। वह तो भर्ती हो गया। सैनिक आए थ उस ल गए। हरनेक ने नि सकोच कह दिया।

कहा ले गए हे?

कह रहे थे पहले तो अम्बाले जाएगे।

भजन केवल तहमद और चादर लपेटे था। नगे पेर उसने सिर मे उगलियो से कघी करके जूडा बाधा ओर दाढी खुजलाने लगा। जसे उसके सभी अरमान मर गए हा। क्या हो गया भर्ती श्यामा? उसे काहे का दु ख था, उसने स्वय से प्रश्न किया।

फिर एक निरर्थक सा प्रश्न किया तुम क्या नही हुए भर्ती?

नही हम उनमे जाकर नही खडे हुए। हम तो गाव मे ही ठीक हे ताऊ। हरनेक

न ~तर ~िया।

अपन गाव वहा आर कान था' भजन ने झूठ ही स्वय को आश्वस्त करना चाहा।

एक करनल था। मजबी का लडका आर एक यह अपना श्यामा था। उन्होने दोना का रख लिया। ये हर तरह से ठीक थ। हम खडे खडे देखते रहे थ। इस बार हरनक क साथ वाला लडका बाला।

अच्छा भइ हम मोच रह थे कि भइ आया क्या नही। इतनी रात हो गइ हे वह कहा होगा। भजना दरवाजे स भीतर आ गया।

हरनक आर दूसरा लडका अपने घर चले गए।

भजना खाट पर जाकर लेट गया। उसे नीद नही आइ। खुल हुए वराडे मे हवा आ रही थी। गली वाली दीवार मे झरोखे भी थ। पर भजन के मन मे एक तीखी हुमस भरन लगी। उसकी मा जीवित होती तो इस समय वह ऐसे बेठन देती मुझे। अभी भजती जाआ अभी लकर आओ मेरे लाल को कही से भी। पर उसने सोचा, यदि उसकी मा जीवित हाता तो वह भर्ती ही क्यो होता। फिर तो हम जमीन बटवाकर अलग खेता करते। अब तक श्यामा खुद मुखियार होता। घर ओर खेती बाडी का सभी काम सम्भालता। छोटा पढ रहा था पढता रहता।

भजने की पत्नी दस वष हुए मोतीझरे की बीमारी से मर गइ थी। तब राम पाच छ वष का था। स्कूल जाना प्रारम्भ ही किया था। दूसरे लडका के साथ गुरदयाल कोर उसे छाट आती थी। उसे अपन बटे को स्कूल मे पढाने का कितना चाव था। ओर फिर वह खाट पर पड गइ। खाट ऐसी पकडी कि फिर उठ ही न सकी। राम नित्य स्कूल जाता रहा। उस भी पढन का बहुत शाक था।

गुरदयाल कोर तो मरने वाली थी मर गइ पर राम ने पढाइ नही छाडी। पहने गाव क प्राइमरी स्कूल से चार कक्षाए पास की फिर बुढलाडे जाने लगा। बुढलाडा हमीरगढ स डढ माल की दूरी पर था। गाव के अन्य बालक भी बुढलाडे पढन जाया करते थे। उहा बालको क साथ वह भी जाता था। वही मिडल स्कूल था। राम साभाग्यशाली था कि जब उसन आठवा पास किया तो बुढलाड का वही स्कूल मिडल से हाइस्कूल हा गया।

अब जब श्यामा सेना मे भर्ती हुआ तब राम दसवी म था। पढन म वह तेज था। शाकियातार स कभी कभी खेती बारी के काम मे भी हाथ बटा लेता था।

गुरमल आर श्यामा खेत पर मक्का की मढ डाल रहे थ। सुबह सुबह ही गए थ। उस दिन बुढलाडे म पशुआ का मडी लगी था। गाव के लडके झुड वनाकर मडी म जाया करत थ श्यामा भा जाता था पर खत जाना भी जरूरा था। उस दिन यह नही करत ता मक्का क दान आर फूट आते। खती क आजार स उनकी जड उखाडनी थी। गत दा दिन ता उनका आर आवश्यक काम था। वह भी जरूरी था। श्यामा ने तो कहा था कि

ाादना गत ह। चला चाचा अभा कर आए पर गुरमेल तयार नहा हुआ। कहने लगा बिनालो के बीज बोते बोते तो मरी हालत खराब हा गइ हे। तुझ मटी की पटी ह। ना जाना कल मटी मडी तो तीन दिन तक रहेगी परसा चल जाना। आज ना म आराम स साऊगा।

गुरमेल जिद्रा धसाता ओर श्यामा सामने स रस्सा घसीटता। वह उस जमान म धसा भी नही पाता था कि श्यामा पहले ही रस्सा घसीट लेता था। एसा हान पर वह श्यामा को गालिया देता। कभी-कभी जिद्रा इतना ज्यादा जमान मे गहरा धस जाता कि श्यामा खीच ही न पाता। वह पूरा जोर लगा देता। इस पर भी वह उसको गालिया दता खीच बे अपने बाप को। मा चोद रोटी नही खाता हे क्या?

कभी वे स्थान अदला बदली कर लेते। गुरमेल सामने से रस्सा खीचता आर श्यामा जिद्रा जमीन मे धसाता। श्यामा उसे बहुत गहरा धसा देता तो गुरमेल स वह खिच ही न पाता। इस समय भी वह गाली देता। श्याम अभी जिद्रा जमीन मे धसा भी नहा पाना था कि गुरमेल सामने से खाली रस्सा खीच लेता था। एक बार तो ऐसा हुआ कि श्यामा न जिद्रा अभी धरती पर भी नही लगाया था कि गुरमल ने खाली रस्सा घसीट लिया जिससे वह चारो खाने चित्त होकर दूर जा गिरा। वह पडे पडे ही गाली बकने लगा। मा बहन एक कर दी। उठा और जिद्रे के रस्से मे से डडा निकाल कर श्यामा के दो तीन जड दिए। श्यामा कुछ नही बोला। गुमसुम एक जगह ही खडा रहा। गुरमेल भाके जा रहा था 'साला खेती करेगा। बेटी के खसम तुझसे कुछ नही होगा। भूखा मरेगा। यह भी कोइ काम है भला। तुझसे यह भी नहीं होता। फिर वह कडककर बोला जा भाग जा। देख मडी जा के। तेरा मन यहा हो तभी तो करे न काम। ध्यान तो भेनचोद का कही और है।

वह फिर भी यथावत खडा रहा। आखे लाल थी और उनमे पानी भर आया था। पता नही क्या कहना चाहता था। पता नही क्या सोच रहा था। पर उसके मन मे क्रोध का एक बगूला अवश्य था जो बारूद की तरह फटने वाला था। गुरमेल उसकी चुप दृष्टि स जेसे डर गया था उसने जिद्रा उठाया ओर शीशम के पेड के नीचे जा बेठा। सिर का चारखाने का दुपट्टा बिछाकर लेट गया। बेमतलब की खीझ ने उसे निढालकर दिया था। कुछ समय बाद उसने करवट बदलकर देखा। श्यामा वहा नही था। वह उठकर बेठ गया। चारो ओर निगाह दोडाई। श्यामा वहा कही भी नही था। गाव लौट गया था बुढलाडे की ओर चला गया हो। गुरमेल कोइ अनुमान नही लगा सका।

गुरमेल ने खीर पूडे खाए और चुपचाप अपनी खाट बिछाकर लेट गया। जलकार ने भाजन करने क वाद बतन माजे थे ओर फिर उन्हे सजाकर रख दिए थ। फिर वह भी लेट गइ। सुबह तडके उठन पर राम स पता लगा कि श्यामा सना म सिपाहा भर्ती हो गया है। जलकौर भर्ती होने स दु खित हुई। उसक कोई औलाद नही थी। वह श्याम ओर राम को बेटो जसा ही समझती थी। यद्यपि उसका स्वभाव रूखा था गालिया देती

ग्न्ना था खाव्वता भा था पर भातर स दाना लडका से माह करता थी। आर उनका कान था। लटका का भा काव नहा था। गुरग्याल कार के मरने क वाद अब तो चाचा हा ¯नका मा था।

नलकाग न चिनित हाकर पूछा कहा तुम्हा न ता नहा कह दिया लडके स कुछ ना ¯ाकर भर्ती हो गया।

म क्या कहता। उसका मन किया हा गया भर्ती। गुरमेल न ऊटपटाग उत्तर दिया।

तुमन किसा वात पर उस झिडका ता हागा हा। नही तो अचानक वह एसा कदम ना उठाता। भर्ती हाने के लिए उसन कभी घर म बात ही नहा की।

मे क्या करू फिर। वहुत हज करती हे तो उस वापस ले आ जा के। अम्बाले मे ह ना दाड जा। वह अपन आगे उसकी नही चलने दे रहा था।

उसकी मा होता ता अभी तडफ तडफ उठती। उसी की छाती फटती। चाचा दुश्मन हा गया। बाप क्या कहे उसे तो टुकड तोडन हे। वह वराडे की ओर गई तो देखा भजना घुटनो मे सिर दिए खाट पर बैठा था। वह बोली तुम जाओ अम्बाले किसा का साथ ल जाओ। नम्बरदार चला जाएगा या ओर कोई होशियार आदमी हो। लडके का वापस ल आआ। फौजी तो उसकी कचूमर निकाल देगे। वह फिर आदमी नही रह जाएगा।

2

शाम को तो नम्बरदार मिला नही दूसरे दिन सुबह ही उठकर भजना उसके घर गया। वह कही जाने के लिए तयार हो रहा था। भजने का मन उदास था। मुह से मक्खी नही उडाइ जा रही थी। उसने नम्बरदार से पूरी बात बता दी। भजने को जलकौर से इस बात की भनक लग गइ थी कि श्यामा गुरमेल से लड झगडकर गुस्से मे भर्ती हो गया है। यही बात उसने नम्बरदार से बता दी।

तो अब क्या किया जाए? नम्बरदार न पूछा।

क्या कर सकत हे नम्बरदार जी हमे अम्बाला चलना चाहिए। वह कौन अपनी इच्छा से भर्ती हुआ ह। चाचा के साथ कहा सुनी हुइ और मडा मे जाकर फौजिया के पास चला गया। हम किसी न किसी तरह से उसे जाकर लौटा लाए।

म तुम्ह वताऊ वह अब नहा लोटेगा। एक बार भर्ती कर लेन पर फाजी उसे नहा छाडग। मन पहल भा एसा सुना ह।

क्या नम्बरदार जी वह पशु हे क्या? भइ काजी हौज वाल हाककर ल गए तो नही छोडत। अनुनय विनय करने स ता काजी हाज वाले भी पशु छाड देते ह यह तो

आत्मा ह। हम खुशामद करग ता य श्यामा का उठग क्या नहा। हम अम्बाला चलत ह। तुम भा हमारे साथ चला। म अनपढ हू, तुम्ह ता सब पता ह। चार अक्षर भा पढ़ त ह। फिर नम्बरदार हा गाव क मुखिया।

अच्छा तरा बात मान ला। पर आज नहा जा सकग।

क्या आज क्या हा गया? बुढलाडा चलग। दस बज वाला गाडा स। बठिड हात हुए साध अम्बाला।

आज हम मानसा जाना ह। तहसीलदार स एक काम ह। म ता तयार बठा हू। तुम पाच मिनट आर न आते ता म घर स निकल गया था।

तो फिर कब चलाग?

परसा चलेग पक्का। म आज रात का भा नही लाटूगा। मुझ लगता ह मानसा स आगे जाना पडेगा। कल लाटूगा। तब परसा चलग।

तब ठीक ह। आर किसी स हा न कर लना। हम यह काम करना ह। ससुर यू ही घर से निकल गया। भजने की आवाज म भारापन था।

वह घर लोटा तो चाचा भतीज म क्लेश हा रहा था। गुरमल कह रहा था आज स्कूल मत जा खेत पर चल। मक्की की मढ मेर साथ निकलवा चल के। एक दिन म नही कुछ हो जाएगा।

राम कह रहा था पहले भी तुम मुझे खेत पर ले जाते रहे। मेरी गेरहाजरिया लग रही है। हाजरी कम हो गइ तो हेडमास्टर इम्तहान क समय मेरी फीस नहा भजग।

कोइ बात नही एक दिन मे कोई फक नही पडता।

पडता क्यो नही हे। इसी तरह एक एक दिन करके तुम मरा साल मरवाआगे।

गुरमेल गुस्से म आ गया। उसन राम को चाटा मार दिया। कडकती आवाज म बाला साला बडा पढइया हे! काम कोन करेगा तरा बाप?

जाओ मे नही जाऊगा। वह भी तैश म आ गया।

अरे तुम क्यो लड रहे हो? मै निकलवा दूगा जसे-तेसे। अभी इस काबिल ता हू मे। इसे स्कूल जाने दे मेलू! भजना कलप उठा था।

तुम केसे साथ द दोगे। पट पकडकर तो बठ रहत हा। काम करने स ता आर परेशान हो जाओगे। काम से ज्यादा तो पेसे तुम्हारे इलाज म लग जाएग। पहले हा लग रहे ह। तुम चुपचाप बठे रहो। आज तो राम हा जाएगा। फिर चाह कभी न जाए। गुरमेल अडा बेठा था।

अच्छा जा चला जा रे काइ बात नही। आज चला जा। एक दिन म तर स्कूल का कुछ नही हो जाएगा। जलकोर ने राम का पुचकारत हुए कहा।

राम न किताब कापिया वाला बस्ता घुमाकर सदूक पर द मारा। बाला अच्छा ता चलो अभी। जैसे वह उसी समय खेत पर जान को तयार हा।

अर अभी कहा जाएगा? चाय से दो राटिया ता खा ले। जलकार बाली।

ग्न्ना था खाम्नना भा था पर भातर स दाना लडका स माह करता थी। आर उनका क्मान था। लड़का का भा काव नहा था। गुरदयाल कार क मरन क बाद अव तो चाची ना उनका मा था।

नलकाग न चिनित हाकर पूछा कहा तुम्हीं न तो नहा कह दिया लडके स कुछ ना नाकर भर्ती हा गया।

म क्या कहता। उसका मन किया हा गया भर्ती। गुरमल ने ऊटपटाग उत्तर दिया।

तुमन किसा वात पर उस झिडका ता हागा हा। नही तो अचानक वह एसा कदम ना उठाता। भर्ती हान क लिए उसन कभी घर म बात ही नही की।

म क्या करू फिर। वहुत हज करती है तो उसे वापस ले आ जा के। अम्बाले मे ह ना दाट जा। वह अपने आगे उसकी नही चलने दे रहा था।

उसकी मा हाती ता अभी तडफ तडफ उठती। उसी की छाती फटती। चाचा दुश्मन हा गया। बाप क्या कहे उसे तो टुकडे तोडन हे। वह वराडे की ओर गई तो दखा भजना घुटनो म सिर दिए खाट पर बैठा था। वह बोली तुम जाओ अम्बाले किसी का साथ ल जाओ। नम्बरदार चला जाएगा या ओर कोइ होशियार आदमी हो। लडके का वापस ल आआ। फौनी तो उसकी कचूमर निकाल देगे। वह फिर आदमी नही रह जाएगा।

2

शाम को ता नम्बरदार मिला नही दूसरे दिन सुबह ही उठकर भजना उसके घर गया। वह कही जान के लिए तयार हो रहा था। भजने का मन उदास था। मुह से मक्खी नही उडाइ जा रही थी। उसने नम्बरदार से पूरी बात बता दी। भजने को जलकौर से इस बात की भनक लग गइ थी कि श्यामा गुरमेल से लड झगडकर गुस्से मे भर्ती हो गया है। यही वात उसने नम्बरदार से बता दी।

तो अब क्या किया जाए? नम्बरदार न पूछा।

क्या कर सकत ह नम्बरदार जी हम अम्बाला चलना चाहिए। वह कोन अपनी इच्छा से भर्ती हुआ ह। चाचा के साथ कहा सुनी हुइ ओर मडी मे जाकर फौजियो के पास चला गया। हम किसी न किसी तरह से उसे जाकर लौटा लाए।

म तुम्ह वताऊ वह अव नही लोटेगा। एक बार भर्ती कर लेन पर फाजी उस नहा छाडग। मने पहल भी एसा सुना ह।

क्यो नम्बरदार जी वह पशु ह क्या? भइ काजी हौज वाल हाककर ले गए तो नहा छोडते। अनुनय विनय करने स तो काजी हाज वाल भी पशु छोड देत है यह तो

आत्मा ह। हम खुशामद करग ना न श्यामा का आग क्या नहा। हम अम्बाला चलन ह। तुम भा हमारे साथ चला। म अनपढ हू, तुम्ह ता सब पता ह। चार अक्षर ना पत ह। फिर नम्बरदार हा गाव क मुखिया।

अच्छा तरा बात मान ली। पर आज नहा ना सकग।

क्यो आज क्या हा गया? बुढलाडा चलग। दस बज वाला गाडा स। वहिं हान हुए साध अम्बाला।

आज हमे मानसा जाना ह। तहसीलदार स एक काम ह। म ता तयार बठा ह। तुम पाच मिनट ओर न आते तो म घर स निकल गया था।

ता फिर कब चलोग?

परसा चलेगे पक्का। म आज रात का भा नहा लाटूगा। मुझ लगता ह मानसा से आगे जाना पडेगा। कल लोटूगा। तब परसा चलगे।

तब ठीक ह। ओर किसी से हा न कर लेना। हम यह काम करना ह। ससुर यू ही घर से निकल गया। भजने की आवाज म भारापन था।

वह घर लोटा ता चाचा भतीज मे क्लेश हा रहा था। गुरमल कह रहा था आज स्कूल मत जा खेत पर चल। मक्की की मढ मेर साथ निकलवा चल के। एक दिन म नही कुछ हो जाएगा।

राम कह रहा था पहले भी तुम मुझे खत पर ले जाते रहे। मेरी गेरहाजरिया लग रही है। हाजरी कम हो गइ तो हेडमास्टर इम्तहान के समय मरा फास नही भेजेगे।

कोइ बात नही एक दिन मे कोइ फक नही पडता।

पडता क्यो नही हे। इसी तरह एक एक दिन करके तुम मेरा साल मरवाओग।

गुरमेल गुस्से मे आ गया। उसने राम को चाटा मार दिया। कडकता आवाज म बोला साला बडा पढइया हे! काम कोन करेगा तेरा बाप?

जाओ म नही जाऊगा। वह भी तेश म आ गया।

अरे तुम क्यो लड रहे हो? मै निकलवा दूगा जेसे-तेस। अभी इस काबिल ता हू मे। इसे स्कूल जाने दे मलू! भजना कलप उठा था।

तुम केसे साथ द दोगा। पट पकडकर ता बठ रहत हो। काम करन स ता आर परशान हो जाओगे। काम से ज्यादा ता पेसे तुम्हारे इलाज म लग जाएगे। पहले हा लग रहे हे। तुम चुपचाप बठे रहो। आज तो राम हा जाएगा। फिर चाह कभी न जाए। गुरमल अडा बठा था।

अच्छा जा चला जा रे कोइ बात नही। आज चला जा। एक दिन मे तर स्कूल का कुछ नही हो जाएगा। जलकार न राम का पुचकारते हुए कहा।

राम न किताब कापियो वाला बस्ता घुमाकर सदूक पर द मारा। बाला अच्छा ता चलो अभी। जसे वह उसी समय खेत पर जान को तेयार हा।

अर अभी कहा जाएगा? चाय से दो रोटिया तो खा ले। जलकार बाली।

ना ~। गुरमल ठडा सा पडत हुए खाट पर बठ गया।

बठ ग नू भा खा ले। जलकार ने दूर खड राम से कहा।

मुस भूख नहा ह। नहा म नहा खाऊगा। गुस्सा उमक भातर गले तक भरा हुआ था।

गुरमल राटा खाते खात बाला अगाछे म बाध द खत पर जाकर म खुद खिला दूगा। वहा जाकर मे इसे मना लूगा। इसकी राटी की चिता तू मत कर।

एक अगाछ म जलकौर ने पाच रोटिया बाध दी। दो गाठ प्याज ओर आम का अचार भा उसी मे रख दिया। चाय का सामान अलग बाध दिया। आधी बोतल दूध भी। कहा खत का काम आज निबटाकर आना। इसका पढाइ का काम हे। यह भी सच हे कि या ता स्कूल जाया करे या खेत। एक ही काम होगा दो ता होते नही। जरा जोर से बालकर वह राम को भी सुनाकर कह रही थी।

चाचा भतीजा खेत क लिए चले गए तो वह गोबर कूडा का काम करने लगी। भजना चारा काटने की मशीन के पास छत के नीचे खाट डालकर लेट गया। वह मट्ठे के साथ दो बेसनी रोटी खा चुका था।

पहले तो उसने दो चार बार खखारा फिर जलकौर को आवाज दी इधर तो आना। यह देख। यहा हाथ रख।

वह सने हुए हाथ लिए छाजन के नीचे आई और पूछने लगी हा क्या हे?

यहा यहा दबा तो कलेजा। भजना खाट पर सीधा एक हाथ से अपना कलेजा दबाए पडा था।

जलकोर ने चारा काटने वाली मशीन के गटे बोरे से अपने हाथ पोछे और सीधे हाथ की हथेली उसक कलेजे पर रख दी। फिर धीरे धीरे दबान लगी। उसका कलेजा जार जोर से धडक रहा था। जैसे उसके पेट मे कोई मशीन रखी हो।

यही एक बार फिर दबा। भजन को आराम लग रहा था।

जलकोर ने अपन दोना पजे भजने के कलेजे मे गडा दिए। भजने को सास नही आ रही था। उसकी आख बुझ रही थी। जलकोर की छाती का उभार भजने की नाक पर झुका हुआ था। उसे जलकोर के बदन से जानी पहचानी गध आने लगी। बोला अब इधर का पेट दबा। फिर बाला अब इधर का। फिर उसने कहा कि वह दोनो हाथा क पना स उसका पेडू दबा दे। कमर दबा दे। फिर बोला एक बार कलेजा फिर दबा द घूम से। फिर बम।

जलकार ने उसके कलज मे कसकर घूस से दबाव दिया। उसका पूरा बदन भजने पर झुका हुआ था। भजने का पेट पाला हा गया। बोला अब वस कर। आर इसके साथ हा उसन जलकार का अपनी छाती स भाच लिया।

एक क्षण का ता वह दबी घुटी उसकी देह स लिपटी पडी रही फिर बोली 'मरजाने। इसीलिए बुलाया था मुझ। अब छाड। मेरा सारा काम पडा है।

अर काम ता हा जाएगा। तू कान सा । भजन का सास फूल रहा था। आर फिर वह बोला, जा दरवाजे म भीतर का कुडा लगा आ।

नही यह काम नही।

तुझ मेरी कसम।

तुम्हारा ता रोज का यही काम हे। कोन सा पट दुखता ह तुम्हारा।

भजना बेठ गया। दीवार से लगी खडी जलकोर क परा क पास बठकर उसका पिडलिया दबाने लगा। बोला ऐसे ना कर बिल्कुल नहा।

अच्छा छोडो दूर हटो। वह दरवाज का कुडा लगाने क लिए छाजन से बाहर निकली।

वह ऐसे ही करता था। जलकौर पहले ही समझ जाती थी। जिस दिन भजने का इरादा होता वह चारा काटने की मशीन के छाजन मे पडी खाट की अदवाइन कसने लगता। ओर कोइ घर मे न होता तो वह जलकोर को बुलाता कि वह आकर उसका कलेजा दबाए। वह खीझती गालिया बकती पर किसी जादू-टोन के असर की तरह वह सब कुछ करती रहती।

दोनो भाइयो के पास दस किल्ले जमीन थी। बाप क मरने के पश्चात भी उन्होने खेती नही बाटी। जब भजने की पत्नी गुरदयाल कोर मरी तब से तो दोनो घरो का सम्मिलित रहना जरूरी हो गया। तीनो बाप बटे की राटी का सवाल था। दु ख मे वे सब एक थे।

असली बात यह थी कि यदि वे अलग होते तो पाच पाच किल्ले से दोनो घरो का गुजारा होना कठिन था। पाच किल्ले की खेती कुछ नही होती। दस किल्ले की खेती ठीक थी। उनका निभाव एक साथ होता जा रहा था। भीतर की बात यह भी थी कि भजने को जलकोर के बिना चलता भी नही था। यही उसकी सबसे बडी कमजोरी थी। इसी कमजोरी के कारण वह अपनी पाच किल्ले जमीन छोडे बेठा था। घर का पूरा प्रबध जलकौर के हाथ मे था। एक प्रकार से गुरमेल भी उसके अधीन था। उसस पूछकर हर काम करता था। कही जाना होता या कोई ओर खच होता तो जलकार से मागकर पेसे ले जाता। भजने और बालको को भी वही पैसे देती। अपनी समझ मे वह दानी बूढी बनकर रहती।

भजने की अपनी कमजोरी के कारण ही वह अपने बेटा की ओर उचित ध्यान नही दता था। नही तो क्या मजाल थी गुरमेल श्यामा का इस प्रकार मारता-पीटता ओर इससे उकताकर वह फौज मे भर्ती हो जाता। राम अच्छा भला स्कूल म पढ रहा ह पर गुरमेल उसे इस प्रकार जबदस्ती खीचकर खेत मे ले जाता ह जैसे राम का अपना कोइ जोर न हो अपनी कोइ इच्छा ना हो।

कभी कभी भजना सोचता गुरमेल के तग करने से ही श्यामा घर से निकल गया हे। इस तरह कही राम भी न भाग-जाए। पर ऐसा वह कभी-कभी ही सोचता था। उसकी

कमजारा उस एस का दूर रखता थी।

चाहिए ता उस यह था कि वह बडे बेटे श्यामा का विवाह कर देता। घर मे बहू आ जाती ता उन्हे रोटा का सुविधा हा जाती। राम पढ रहा था पढता रहता। एक साझी रखकर वह खती का काम करत। पर केवल पाच किल्ले जमीन होने के कारण यह सम्भव नही था। श्यामा की टाइ किल्ले पर कोई सगाइ भी तो कही से नही आई थी।

जलकार जब ब्याह कर आइ थी तो उसका स्वभाव चचल सा था। उछलती-कूदती नाचती डालता रहती थी। यू ही दात निपोरती रहती। बोलती रहती। भजने से घूघट भी काढती था आर उसस चुहलबाजी भी कर लेती थी। गुरमेल तो उसका पति था ही वह भजने का भी अपन बस मे करने का यत्न करती। पूरे परिवार को सलाह मशविरा देती रहती जैसे वहा सबसे हाशियार हो समझदार हो आविष्कारक हो। गुरदयाल कौर विनम्र और सुशाल थी। सीधी सादी बुढिया जैसी औरत। कम बोलती थी सोचती बहुत थी। वह देवरानी को हसते खेलते देखकर खुश ही होती थी। जलकौर भजन से मसखरी करती तो गुरदयाल कोर साचती उम्र है करने दो। दिन बीतने पर खुद ही समझ मे आ जाएगा। कभी-कभी प्यार से उसे समझाती अरी ऐसे मत कहा कर तेरे बाप जैसा है।

जलकोर बोलते समय सोचती नही थी। उत्तर देती तुम्हारा होगा यह बाप मेरा क्यो होने लगा। फिर धृष्टता करने लगती। गाने लगती जेठ को मट्ठा नही दूगी देवर चाहे भैस चूस ले। फिर गहरी सास भरती हाय रे मेरा तो देवर भी कोई नही है।

गुरदयाल कौर भी हसने लगती देवर का क्या करेगी तू, भजने को देवर से भी अधिक बनाए फिरती हे।

हा री मेरा ता जठ भी यह देवर भी यह। मचलते हुए कहती अरी सच ससुर भी यह।

उनका ससुर नही था।

वह जब भजने के बहुत ही पेर काटने लगी तो उसने एक दिन उसकी अकड तोड दी। यही वह चाहती थी। ऐसा हाने से ही वह भजने को अपने काबू मे करना चाहती थी। ऐसे सबध होने से वह सोचती थी कि भजन गुरदयाल कौर की अपेक्षा उसकी बात अधिक माना करेगा। वह नइ नवेली है और गुरदयाल कौर खूसट। वह थी बेचारी जली भूनी सी। जलकोर का भरा भरा शरीर गेद की तरह मढी हुई छाती। ठोस। उगली न घसती। तब ता वह भजने के लिए खिलौना थी। गुरदयाल कोर का पीछा ही जैसे छुट गया। दा बालक इश्वर ने दे दिए तो दे दिए। उसके बाद भजने ने उसके साथ सहवास नही किया। वह भजने के साथ के लिए तरसती हुई मर गई। पानीझारा तो एक बहाना था। वास्तव मे उसे यह उम्रभर का रोग था कि उसके पति को देवरानी ने बस मे कर लिया ह। वह देवरानी की उगलिया पर नाचता हे। वह मन ही मन जलकौर को गालिया देती मुह से कुछ नही कहती थी। कहती बाझ ने मेरा आदमी खा लिया। तभी तो भगवान न कोइ आस औलाद नही दी। पापिन मै तो कहती हू कीडे पडकर मरेगी।

काड पडगे तर जो मुझ सता रहा ह। भनना का कामता रहता। मन म हा व ्ुआ दता ठीक हे भजना भगवान इन्साफ करेगा।

दूसर दिन भी रात को नम्बरदार गाव नहा लाटा। भनना वचन था कि कब नम्बरदार आए आर कब वह अम्बाले जाए। तीसरे दिन नम्बरदार दिन ढलन पर घर आया। भनना उनके घर कइ बार चक्कर लगा आया था। नम्बरदार का पत्नी न कहा भनना अब तुम मत आना। यू ही परेशान हो रह हो। नम्बरदार जब आ जाएगे तभा तुम्ह घर पर बता देगे। पोता उसी समय तुम्हारे घर चला जाएगा।

काफी रात गए नम्बरदार का पोता भजने क पास आया आर बाला बाबा न कहा हे बाबा वह थके हुए हे। सुबह नही जा सकते। परसा इतवार ह। जान स काइ फायदा नही। सोमवार को जरूर चलेगे। दस वाली गाडी बुढलाडा स बेठग।

दूसरे दिन सुबह ही भजना नम्बरदार के घर गया। बोला नम्बरदार जी तुम्हारा बात मैने मान ली है चलेगे तो सोमवार को ही। पर हम एक काम आर करे वहा स जाखल धूरी होते हुए चले।

कैसे? नम्बरदार ने कान खड किए।

रात को एक बजे दिल्ली वाली गाडी जाती है। बुढलाडा मे बठकर जाखल उतर जाएगे। जाखल से फिर एक गाडी सुबह तडके ही मिलेगी धूरी लुधिआना को जाने वाली। धूरी उतरकर वहा से कोई अम्बाले वाली पकड लेगे। एक गाडी ऐसी हे मन पता किया ह।

भजना तू तो मूर्ख है यार रात भर कहा मारे मारे डोलगे जागरण करते हुए। बुढलाडा से इधर बठिडा ठीक हे। बठिडा से अम्बाला। पिछले पहर वही पहुच जाएगे मुझे पता है। जाते ही श्यामा का पता लग जाएगा। भगवान भला कर। अपना काम हा जाएगा। भगवान पर भरोसा रख।

ठीक हे कहकर भजना घर लोट आया।

वे अम्बाले पहुच। रगरूट श्याम सिह पुत्र भजन सिह ग्राम हमीरगढ थाना बुढलाडा जिला बठिडा का पता लग गया। वह सचमुच बुढलाडे से भर्ती हाकर अम्बाला छावनी मे आ गया था। पर अब वह अम्बाला छावनी मे नही था। प्रशिक्षण के लिए आगे किसी अन्य स्थान पर भेज दिया गया था। अम्बाला छावनी वाले यह नही बता रहे थे कि वह कहा ह। नम्बरदार ओर भजना सूखा सा मुह लेकर गाव वापस आ गए।

3

गुरमल घर म बखेडा किए रहता कि अब खेती का इतना काम वह अकेले कसे कर। श्यामा भर्ती हो गया साझी भा कोइ नही ह। भजन हमेशा बीमार रहता हे। राम स्कूल जाता है। उससे खेती का यह काम धधा नही होता है। या तो नोकर रख दो या फिर राम

को स्कूल से हटा लो।

जलकार कहना अब इस रितु म तुम्ह कान नौकर मिलगा। जिन जिनका नाकर रखना था वे सब वही लग गए हे। अब तुम नाकर ढूढ रहे हो?

अरे भइ म चला चलूगा खत पर मुझस जो हो सकेगा कर दिया करूगा। पहले क्या मै नही करवाता था। पर भई सच बात तो यह हे कि मुझसे भारी वाला काम तो होता नही हे। छोटा मोटा काम कर दिया करूगा। तुम इस बार तो किसी प्रकार चला लो। अगले साल देखा जाएगा। नौकर रख लेना या साझी रख लेना। भजना ने कहा।

तुम्हे तब पता नही था श्यामा पर चढ चढ बैठते थे। चला गया वह। अब रह गए न अकेले। जलकौर ने उत्तर दिया।

अकेला क्यो हू। तीन हे। इन दोनो को गिनती मे क्यो नही लेती। यू कहो कि ये दोनो कुछ नही करते ओर अकेला रह गया मे। फिर गुरमेल ने विनम्र होते हुए कहा मैने उससे क्या कह दिया था। मे तो उसे समझाता रहता था, भई यह काम कर यह मत कर। वह सीखता ही नहीं था। अकडता रहता रूठकर बेठ जाता। वह काम के प्रति ईमानदार नही था। मुझसे सहन नही होता था। भाग गया वह। फिर जोर-जोर से बोलने लगा फौज मे क्या उखाड लेगा वह। वहा भी काम करना पडेगा। फौजी तो बूटो की ठोकरे मार-मारकर जान निकाल लेते है। वह कौन सा बेचारा है। वहा से अब कहा जाएगा। वह तो भागने भी नही देगे। यहा मुझसे जूतिया खाता था वहा परायो के बस मे है सीधा कर देगे वे तो। सभी बल टूट जाएगे। गुरमेल जेसे श्यामा को झिडक रहा था।

बहुत ज्यादा बकवास मत किए जाओ खाली-मूली। कितनी जमीन है तुम्हारे पास दस किल्ले ना! जिस दिन बहुत काम हो उस दिन दिहाडी पर ले जाया करो आदमी और क्या चाहिए। जलकौर ने सुझाव दिया।

अरे म चला करूगा तेरे साथ। तू चिता मत कर। चल उठ आज चलता हू, क्या काम हे आज। भजन ने उत्तेजित होकर कहा।

कभी-कभी तो राम भी चला जाएगा तो कोई बात नही। राम अगर किसी दिन स्कूल नहीं जाएगा तो क्या हुआ। क्या बालक को कभी हारी बीमारी नही होते। जलकौर ने उसे शात करना चाहा।

उस दिन इतवार था। राम घर पर ही था। वह बोला छुट्टी वाले दिन चाचा मै चला जाया करूगा। महीने मे चार तो इतवार होते है। दो चार छुट्टिया और हो जाती है। और बताओ!

लो अब ता राम तुमसे खुद ही कह रहा है। बस? आज ले जाओ इसे जहा ले जाना हो।' जलकौर राम पर प्रसन्न हो गइ। उसे लगा जैसे राम की बात से गुरमेल को भी कुछ सहारा मिला होगा।

आश्विन मास की ऋतु थी। इन दिनो जाटो को मरने की फुसत नही होती। सावन की फसल की कटाइ का काम समाप्त करना पडता है और फिर ये गेहू बोने के दिन होते

ह। गुरमेल इसालिए खीझा हुआ था। उनका दस किल्ल का खत एक हा नगह था। मकइ क छार अभी खत्म नही हुए थे। ना हा कपास क डठल उखाडे गए थे। गेहू बान वाला जमीन एक ही बार जोती गइ थी। दूसरी बार फिर जातना था आर फिर तीसरी बार नोतकर हगा लगाना था। तब कही जाकर गेहू बोया जाना था। गुरमेल खेत पर नाता ता इतने सारे काम देखकर उसका बदन कापने लगता। श्यामा के रहते उसे इतनी चिता नहा रहती थी। अब उसे श्यामा याद आता था। एक प्रकार से उसे श्यामा के काम याद आते थ।

उस दिन कपास के ठूठ उखाडने थे। सुबह का समय था। जलकोर हाथ का काम छाडकर स्वय चमरटुलिया मे गई। उसने कहा था मै जाती हू। लेकर आती हू कोइ दिहाडी पर काम करने वाला। तुम दोनो भाइ तो औरतो से भी गए गुजरे हो । घर से बाहर निकलती हुई बोली राम तू चाय बनाने को रख। अब पीकर जाना। अपने आप दो दो रोटिया उठाओ और खा लो। दोपहर की रोटी मे खेत पर लेकर आऊगी।

जो लोग दिहाडी पर खेतो मे चले गए थे उनसे रात को कह दिया गया था। यह बात जलकोर को भी पता थी, इस समय कौन होगा घर पर। फिर भी वह दो चार घर गई। उसकी बात सुनकर उनकी बुढिया हस पडती बेटी जलकोर अब तुझे याद आया दिहाडिया। रात को आना था। अधेरा था तो भजन सिह को भेजती या गुरमेल सिह कह जाता आदमी चला जाता। अब तो कोई मुश्किल से ही मिलेगा।

बस्ती के रास्ते मे एक चौतरे पर चार पाच लोग खेस लपेटे बैठे थे। चमारो की एक बुढिया जलकौर के साथ चल दी। बुढिया ने ही पूछा कोई आदमी खाली है दिहाडी पर जाने वाला।

अब आदमी कहा है ताई। किसके यहा जाना है?

इनके यहा, भजन सिह के यहा। यह उनकी बहू खडी है। इनको चाहिए।

काम क्या है? उसी आदमी ने फिर पूछा।

काम तो कपास के डठल उखाडने है कोई मेहनत का काम नही है। तुममे से कोइ चला चले।' जलकोर को बोलते समय हया-शर्म नही लगती थी।

बोलने वाला आदमी ने पास बैठे एक अधेड से व्यक्ति से पूछा अब तो तेरा सिर ठीक ह ना ?

अब कुछ आराम है अब नही दु ख रहा है। बुखार भी नही है। रात को था।

तब तू चला जा। कितना तो दिन निकल आया हे। काम तो आसान हे। खुर्पी मार मारकर खोदे जाते है डढल। बैठे बैठे ही इकट्ठा किए जाआ। कोइ खास काम नही है। शाम को दवाइ भर के पैसे कमा लाएगा।'

भान सिह उठकर खडा हो गया। बोला चला मै चलता हू। घर से डॉक्टर की दी गोलिया ल आता हू। दोपहर को वही खा लूगा। फिर पूछने लगा सीधे खेत का चलना हे जलकौर कि पहले घर चलना है?

चाय पीकर जाना। वे तीनो भी तो घर पर ही हे।

जलकौर भान सिह का लकर घर पहुची तो वे नाश्त की रोटी खाकर चाय के कटोरे पकड बेठे थ। गुरमेल ओर राम ने मिस्सी राटिया मक्खन दही और मट्ठे से खा ला था। भजना बेसनी राटी चाय म डुबा डुबोकर खा रहा था। ना तो उसे दही मट्ठा माफिक था ओर ना घी मक्खन। भान सिह ने भी एक बेसनी रोटी चाय से खा ली। दो खुरपे घर मे थ दा उन्होने पडोस स माग लिए। वह जब तक खत पर पहुच तब तक अच्छा-खासा दिन चढ आया था। आस पास क खेत वाले उनकी ओर खडे हो होकर देखने लगे। मुस्कराते होगे आ गया भइ भजन सिह का लश्कर इस समय।

गुरमेल ने काम शुरू करने से पहले आस पास के खेतो पर निगाह फेकी। दो खेता म दो हल चल रहे थे। वह ठीक समय पर गेहू बो रहे थे। दीवाली बीते दो तीन दिन हो चुके थे। यही तो दिन थे गेहू बोने के। इसके बाद तो बोने का मौसम ही नही बचता। एक खेत मे छलियो का खलिहान लगा था। चार पाच जने छडियो से छलिया कूट रहे थे। दूर बठी दो तीन बूढी औरते टहनियो से छलिया तोड रही थी। कपास के ठूठ किसी खेत मे नही थे। इधर उधर ठूठ के ढेर लगे थे। वही निकम्मे थे जिनके खेत के ठूठ आज निकाले जा रहे थे। गुआर की फलियो वाली क्यारिया भी एक बार जोती जा चुकी थी। मक्के का खेत कब का जोत दिया गया कब का बो भी दिया गया। ऐसे ही कपास वाले खेत पता नही कब जोते जाने थे। पूरी की पूरी आठ किल्ले की भूमि मे अगर गेहू बोया जाए तब ही उनका निर्वाह हो सकेगा। पर अभी तो कितने ही काम पडे थे। गुरमेल काम शुरू होने से पहले ही खीझने लग गया।

उन्होने सिर के अगौछे पगडी ओर लुगी उतारकर सिर पर लपेट लिए नीचे कच्छा-जाघिया तो पहने ही थे। गुरमेल और राम खूब फुर्ती से डठल उखाड रहे थे। भजना ओर भान सिह बैठे बैठे आगे बढ रहे थे। दो दो लोगो ने एक एक क्यारी सम्भाल ली थी। चाचा भतीजा तेजी से काम कर रहे थे। भजना और भानसिह ढीले-ढाले थे। उखाडे गए डठलो के ढेर लगते जा रहे थे। दोपहर का खाना आया तब तक वे आधा खेत साफ कर चुके थे। रोटियो का टोकरा नीचे रखकर जलकौर ने पूरे खेत की ओर निगाह फेकी। फिर आस पास के खेतो की ओर उसकी निगाह गइ और फिर वह उन चारा को गोर से देखने लगी। उन्होने बहुत सा काम निबटा लिया था। उसका चेहरा खिल उठा। आखो मे चमक आ गई। होठ बद नही रह सके। उसने राम का नाम लेकर आवाज दी आ जाओ भई अब। रोटी खा लो। और कुछ दम मार लो।'

शीशम के पेड के पास बैठकर वे रोटी खाने लगे। जलकौर सबको स्नेह से रोटी खिला रही थी। वह कभी और रोटी के लिए पूछती कभी दाल और कभी पानी। सब काइ रोटी खा चुके ता जलकौर ने पतीली चार बाटिया चाय गुड ओर दूध की बोतल राम को देकर टाकरे मे शेष बतन भाडे रखे और गाव को चल पडी।

चाय पीकर वे फिर जुट गए। चाचा भतीजा जब क्यारी खत्म कर लेते तब तक दोनो दूसरा की क्यारी अभी काफी पडी रहती। गुरमेल को भजने पर तो तरस आता कि

वह बामार हाकर भी काम कर रहा ह। खुशा भी हाती कि चला वह कुछ ता हाथ पर मारने लगा है घर पर खाली तो नही बठा ह। पर चमार पर गुस्सा आता कि कनर का जात दिहाडी पूरी लेगा काम आध आदमा का भा नही कर रहा ह।

दिन छिपता जा रहा था अभी तीन क्यारिया बाकी रह गइ था। गुरमल चाह जितने ललकारे मारता रहा अर मार लिया पाला। दखते क्या हा। दिन ढलन स पहल ही निबटा देग सब' कहते कहते वह भान सिह की आर दखता भान सिह थाडा हाथ तेज चला दे भाई। तुम्हारी दखादेखी भजना पीछे रह गया हे। जुट जा कस क। उडा द सब। बस थोडा ही रह गया है अब तो'

डठल उखाडे जा रहे थे। गुरमेल बोला भान सिह तुम इधर आ जाआ मर साथ। राम अपने बाप के साथ ठीक ह।

इस प्रकार व्यवस्था करने से वे साथ-साथ चलने लगे।

दो क्यारिया बचती थी कि भान सिह पीठ के बल गिर पडा। वही लेट गया। हाय हाय करने लगा। गुरमेल दौडकर पानी लाया। भान ने बेठकर ओक लगाकर पानी पिया। तब उसे राहत मिली। उसने अपना गीला हाथ मुह पर फेरा। माथा तप रहा था। उसे दोबारा बुखार ने आ घेरा था। दोपहर को टिकिया भी खाइ थी। पर अब फिर बुखार था। वह काम छोडकर बैठ गया। धीरे धीरे बोला मेलू भाइ जितना देना हो द देना अब मुझसे नही होता। मै तो जैसे-तैसे गाव जा रहा हू।

गुरमेल ने भान सिह का हाथ पकडकर देखा-गम था। बोला तुझे तो बुखार है रे जाओ फिर ऐसे मे कैसे काम करेगा। पेसे घर दे आऊगा। तुम चिता मत करना। पूरे पेसे दूगा। अब जाओ तुम'

भान सिह को जाता देखकर भजने की भी हिम्मत टूट गई। वह भी थक गया था। पर वह धीरे धीरे काम किए जा रहा था। कभी गाव की ओर देखता कभी सिर के कपड की लड ठीक करता कनखियो से गुरमेल का भी भापता। गुरमेल न उसे ताड लिया। बाल भाई तुम भी जाओ। अब तो थोडा ही रह गया ह। तुम नहाओ धाओ जाकर। हम कर लेगे अब।

एक क्यारी और शेष बची थी। दिन भी डूबने डूबने को था। गुरमेल की खुरपी चारा काटने वाली मशीन के फल की तरह चल रही थी। वह सब काम खत्म कर देना चाहता था। झोटा ले लेकर काम कर रहा था। निबटाए जा रहा था। राम भी उसकी हिरसकर रहा था। बहुत चेष्टा करता पर वह अपने चाचा के जितना काम नही कर पा रहा था। गुरमेल तो अनुभवी किसान था। राम तो अभी नया नया छोकरा था। उसे किसानी के काम का इतना अनुभव नही था। जाटो की भाषा मे पाडा भी था।

अरे शाबाश रामा ओर जोर लगा के। उखाड दे। अरे मार लिया पाला' गुरमेल पर जैसे कोइ भूत सवार हो गया था। उसे काम निबटाने का बुखार चढा हुआ था।

तभी राम जोर से चीख उठा हाय रे चाचा अरे मर गया।

अर क्या हा गया तुम? गुरमल दोडकर उसक पास गया।

गम क बाए हाथ की दा अगुलिया कपास क हरे सूखे पत्ते पर पडी तडप रही था। वह अपना एक हाथ दूसरे हाथ स दबाए हुए था। दोनो हाथ लहू लुहान थे। गुरमेल दाडकर शाशम क पड के नीचे गया। अपना साफा फाडकर लम्बी चोडी एक पट्टी पानी म भिगा ला। उसन राम के हाथ म कसकर पट्टी बाध दी। खून पट्टी म से भी बाहर रिस रहा था। वह उसे शीशम के नीचे ले गया। एक पट्टी और गीली करके उस पर बाधी। खुरपिया आर बतन भाडे लेकर गुरमेल गाव वापस आ गया। जी कडा करके राम भी उसके पीछे पीछे चला आया। गुरमेल बहुत भयभीत था। काम की जल्दी मे लडके पर वज्रपात हो गया। व घर पहुचे ता अधेरा हो गया था।

घर मे काढी शराब लाइ गइ। गुरमेल ने जबरदस्ती एक कटोरी राम के गले से नीचे उतार दी। फिर एक कटोरा और। उसके हाथ की पट्टिया खोली और मलमल की एक पट्टी लेकर उसे शराब मे भिगो ली। बीच की ओर उसके पास की दोनो उगलियो आधी आधी कट गइ थी। खुरपी बहुत तेज थी। अब खून बहना बद हो गया था। पर मास गाजर की तरह लाल था। शराब मे भीगी पट्टी उसने राम की उगलियो पर रख दी। और उसे उगलियो पर ही लपेट दी। ऊपर से एक सूखी पट्टी ओर बाध दी। कटे पर शराब सूइयो की तरह लग रही थी। राम दात से जीभ दबाए था। शराब पीने के कारण वह चिल्लाया नही। पर दर्द बहुत था। उसके माथे पर पसीना आ गया।

लो अब लेट जा। सुबह तडके ही बलाढे चलेगे। गुरमेल ने कहा।

फिर गुरमेल ओर भजन ने भी दा-दो कटोरी शराब पी ली। राम को एक कटोरी ओर दे दी। दारू पीकर गुरमेल जोश मे बोल रहा था जैसे जिद्द किए बैठा हो। भजना गुम सुम-सा बेठा था। उसे बेटे का हाथ कट जाने का बहुत दु ख था। मन मे कलप रहा था बहन चो कमाइ करेगा उगलिया कटवाकर बैठ गया है ससुरा!

जलकौर गुरमेल को गालिया देने लगी क्यो भौके जा रहा हे कुत्ते अब। पहले बडे को लडकर घर से निकाल दिया इस पर यह वज्र गिरवा लाया। सब तेरी करतूतो से हुआ है। अपनी तो कोइ औलाद है नही। भाइ के बच्चो को सभाल ले पापी!

क्यो मे क्या करता हू भाइ के बच्चो के साथ? अब मैने तो नही मारा इसे खुरपा। खुद ही कटवा लाया अपनी उगलिया बताओ इसमे मै क्या करू?

4

उगलिया कट जान के कारण राम महीना सवा महीना स्कूल नही गया। जब जख्म भर गए तब भी वह कपडा लपटे रहता। गदा मिट्टी पडने का डर था। वैसे भी उसे शम सी लगती थी। एक दिन पेट की जेब म हाथ डालकर वह बुढलाड स्कूल गया। उसका नाम

काटा जा चुका था। आर दसवा की परीक्षा का फीस जमा हा चुका था। वह पहल अपन कक्षा अध्यापक से मिला ओर फिर प्रधानाध्यापक स। दोना हा उस पर हस रह थ। कह रह थे इतने दिन कहा रहकर मोज करता रहा? पपर देने का इरादा होता ता स्कूल आता। अब तो तेरी उपस्थिति भी पूरी नही हे। अगल साल आना।

उसने जेब मे से हाथ नही निकाला। वह नही चाहता था कि उस पर काइ तरस खाकर उसे लज्जित करे। वह वापस लौट आया। सहपाठियो स भी ठीक से नहा मिला। बाया हाथ हर समय पैट की जेब मे रखे रहा।

बुढलाडे के रेलवे स्टेशन पर आकर वह रेल की पटरी पर हो लिया। अभी भी उसका हाथ जेब मे था। सीधे हाथ से वह पटरी पर से पत्थर उठाता आर दूर फेक देता। पत्थर से पत्थर पर निशाना लगाता हुआ चलता रहा। उसका दिमाग कुछ भी नहा सोच पा रहा था। उसका भविष्य अधकारमय था। उसे अपनी मा की याद आई। वह जीवित होती तो वह उसके बारे मे कुछ सोचती। चाची जलकोर भी मा के जैसा ही मोह करती है। पर जलकौर मा नही बन सकती वह सोचता। आधे रास्ते तक वह ऐसे ही पत्थरो से खेलता हुआ चला गया। दो पत्थर उठाता। एक दूर फेक देता। फिर उसको दूसरे पत्थर का निशाना बनाता। पत्थर-से पत्थर कभी-ही कभी लगता। आम तोर पर पत्थर कही दूसरी ओर जा गिरता। आगे निकल जाता या पीछे रह जाता। आगे जाकर वह एक पुलिया पर बैठ गया। उसने अपना बाया हाथ पैट की जेब से बाहर निकाल लिया। हाथ को घुटने पर रखकर गौर से देखने लगा। यह उसके सीधे हाथ की ज्यादती थी। बाए हाथ की दो अगुलिया काटकर दूर कर दी। पता भी नहीं लगा कब काटी गइ। उसने कपास के डठलो को जड के बहुत पास से पकडा था। उसे एक ओर करके देखा भी नही था कि खुरपा कहा मारना है। डठल पकडा ओर खुरपा चला दिया। उसे चाहिए था कि डठल को जरा ऊपर से पकडता। असल मे उसकी निगाह चाचा की ओर हो गइ थी। जो चारा काटने की मशीन की तरह खुरपा चला रहा था। उससे चाचा की तरह तेजी से कपास के डठल नही उखाडे जा रहे थे। ऊपर से चाचा ललकारे जा रहा था। हीन भावना के कारण और थकावट के कारण उसकी सुध बुध ठिकाने नही थी।

अब वह बैठे-बैठे सोच रहा था कि अगले साल दसवी कक्षा मे उसे कौन भर्ती करवाएगा। चाचा तो पहले ही उसको पढाने के लिए सहमत नही है। वह तो चाहता है कि मे खेत मे काम करू। उसकी ही तरह। चाची ठडे छीटे दे सकती है। वह मुझे पढा सकती है। पेसे दे सकती। पर अब क्या पता? बापू की तो चलती ही कुछ नही। इतना ही हे कि वह पाच किल्ले का मालिक है। जमीन का मालिक होने के कारण ही उसे रोटी मिलती है। आराम मिलता है। घर गृहस्थी मे उसका कोइ और दखल नही है।

वह पुलिया से उठा ओर धीरे धीरे आगे बढने लगा। गाव सामने था। केवल वृक्षा की ओट थी। वृक्षो के भीतर जाकर तो फिर गाव ही गाव था। गाव के तीन भाग है। गढी मे इनका घर है। यह गढी ही गाव का प्रमुख भाग है। उसका मन अपने घर जाने

रहा नहा था। जस उस घर स उस कोइ लगाव न हो। उस घर म उसकी कोइ प्रतीक्षा नहा कर रहा था। चाचा चाची उसके कोइ नही लगते थ। उसके लिए वह एकदम पराए थ। बापू पराया था। बापू का उसके साथ काइ सहानुभूति नही थी। पता नही क्या उसका वापू इस घर स चिपका बेठा ह। पाच किल्ले की आमदनी म से एक रोटी खाता ह केवल आर उस क्या मिलता ह ठेगा। बापू की अक्ल पर पदा पडा हुआ हे राम साच रहा था। उसकी अक्ल काम करती होती तो बडा क्यो भागता घर से। वह भाई से अलग हो जाता। श्यामा का विवाह कर देता जैस तसे। पाच किल्ल क्या थोडे होते है। सगाइ तो हो ही जाती। उसकी बहू घर आ जाती। खाने पीने का आराम हो जाता। इसी क लिए वह भाइ भोजाइ के साथ चिपका हुआ ह।

वह रेल की पटरी से नीचे उतर गया। बाइ ओर से गाव जाने का यह बढिया रास्ता था। पक्की मिट्टी का रास्ता। जैसे सडक हो। वह अभी पद्रह बीस कदम ही चला होगा कि बाए हाथ को वृक्षो के झुड मे से जाने वाला रास्ता आ गया। वह एक दम रुक गया। जस उसे किसी अदृश्य शक्ति ने राक लिया हो। रास्ते के शुरू मे खूब घना वण का वृक्ष था। रेल की पटरी की ओर एक छोटा कीकर का पेड था और कीकर की जडो म करीर था। उसका जी किया कि वह वृक्षा के झुड वाले रास्ते पर चल दे घर जाए ही ना। घर मे उसका ह क्या? एक क्षण को उसने उलटा कर सोचा वृक्षो के झुड वाली ओर भी क्या ह? कीकर बेर झरबेरियो की झाडिया जड करीर और पीपल बरगद के सघन जगल मे बाबे की कुटिया है। कुटिया मे साधु रहता हे बाबा चिब्भडदास। घर, जाने पर उसे चाचा के साथ खेती का काम करवाना पडेगा। वह पढ लिख जाता दसवी पास कर लेता ता किसी सरकारी नौकरी के काबिल हो सकता था। खेती से पीछा तभी छूट सकता था जब उस सरकारी नौकरी मिलती। अब पढाई तो उसकी समझो खत्म हो गइ। खेती के काम से उसे घृणा है। खेती के काम मे तो मिट्टी के साथ मिट्टी होना पडता है। आदमी दिन देखता है न रात पशु बना रहता है। मिट्टी ढोता हे।

उसका ब्याह भी नही हो सकता। लूले लडके से कोन करेगा रिश्ता। लूले लडके को तो कोइ लूली लगडी या अधी कानी ही मिल सकती हे। ऐसी अपाहिज लडकी से तो वह ऐसे ही भला ह। उसे घर को जाने वाला रास्ता खराब खराब लगा। इससे अच्छा साधु हो जाए। आनद करे। वृक्षो वाला रास्ता उसे अपनी ओर खीच रहा था। वह इसी रास्ते की ओर चल पडा। साधु बनने या ना बनने के बारे मे फिर साचेगे। पहले बाबा चिब्भडद्दास के पास चलता हू। रोटी वही खाऊगा। कुछ देर बैठकर आराम करूगा। बाबा के अमृत वचन सुनूगा।

चिब्भडदास ऊचे तख्तपोश पर गाव तकिए का सहारा लेकर बठे थ। नीचे लाल गद्दे पर दूध सी सफद चादर बिछी हुइ थी। सीधे हाथ मे छोटी माला थी। वह माला भी फेरते जा रहे थ आर बाते भी करते जा रहे थे। दोनो हाथो की अगुलियो मे दो दो अगूठिया थी। ये अगूठिया सोने की नही थी। अन्य किसी धातु की थी। उनमे काले

सफद नग जडे हुए थे। दाढा केस रखकर सिर पर गेरूए रग की पगटा था गल म गेरूए रग का ही लम्बा चौडा चोगा था। परो म केनवस की जूता थी जा इस समय उन्हाने उतारकर तख्तपोश के नीच रख दी थी। तख्तपाश से थाडी दूर पर बारिया बिछी हुइ थी। श्रद्धालु जन बाबा के पाव स्पश करते नमस्कार करत आर बारा पर जाकर बठ जाते। बाबा हर आने जाने वाले का हाल चाल पूछते। अत मे आशाप देत राम भला करे बने रहो।

राम ने बाबा चिब्भडदास के पैरो म अपना सिर रख दिया। कुछ क्षण उटाया हा नही। उनके पाव दबाने लगा। बाबा को आराम मिल रहा होगा। उन्हान लडके का मना नही किया। उसके चेहरे की ओर बाबा ने गार से देखा। इस लडके को उन्हान पहल कभी नही देखा था। पर लगता हमीरगढ का ही था। क्योकि नीचे बारियो पर बेठे दा-तीन लोग उसकी ओर देखकर मुस्कराए थे। वे लाग हमीरगढ के ही थे। अवश्य ही उसे जानते होगे।

किस गाव का है छोरे? चिब्भडदास ने पूछा।

राम पैर दबाने मे मस्त था। उसने सुना नही। उन लोगा मे से एक बाला यह तो महाराज जी गढी पत्ती के भजन सिह का बेटा है पढा लिखा हे। पिछले दिनो इसका हाथ कट गया था जी। बहुत लायक है जी।'

राम के हाथ बाबा के पैरो जैसे ही सुदर थे। गोरे-गोरे गुलाबी गुलाबी। बाबा बोले कितनी प्यारी सूरत है छोरे की। एक हाथ ने काम खराब कर दिया। फिर पूछने लगे कैसे कट गई भई तुम्हारी ये दो अगुलिया?

वह बाबा के पैर छोडकर नीचे बोरी पर बेठ गया ओर बताने लगा। बताते बताते रो पडा।

रो मत बेटा रोते क्यो हो? तुम्हारी शेष तीन ही पजा जैसा काम करेगी। जो परमात्मा ने कर दिया ठीक है। मन को शात रखा करो। मन लगाकर पढो। फिर पूछा किस कक्षा मे पढते हो भाई?

'दसवी मे हू जी' उसने सीधे सीधे उत्तर दिया। रोना बदकर दिया। वह ता जैसे ही उसका दिल उमड आया था।

बाबा ने एक सेवक को आवाज दी मोदना, इसे एक गिलास दूध लाकर दो भई। विद्यार्थी का पुण्य मिलेगा।

मोदन उसे जबरदस्ती एक गिलास गर्म दूध पकडा गया। राम ले नही रहा था। दूध पीकर राम को सतुष्टि मिली। सुबह से उसने कुछ खाया पिया नही था। दिन ढलने को आ गया था। फिर बाबा ने पूछा रोटी खा लो?

धन्यवाद। राम के मुह से ऐसे ही निकल गया।

उस रात वह वहीं रुक गया। मोदन किसी अन्य गाव का रहने वाला था। बाता बाता मे ही राम उसके साथ खुल गया। दो लोग और थे। वे दानो वृद्ध थे। वे भी किसी अन्य

गाय क थ। मठ की सेवा करत थ और सुबह शाम भोजन कर लेत थे। मठ म दो तीन दुधारू गाए भी था। उस सुबह शाम मोदन हमीरगढ से दूध भिक्षा म ल आता था। बाटिया मठ म ही सिकती था। दाल सब्जी भी यही पकती थीं। मठ मे दो हेंडपम्प भी लगे हुए थे। एक पम्प भाजनालय के पास था ओर दूसरा कुछ दूर खुले मेदान मे था। भोजनालय क पास वाल पम्प का पानी भोजन तैयार करने मे उपयोग मे लाया जाता था। मेदान वाल पम्प स सभी लाग पानी लेते थे। नहाते धोते थे। दो पक्के तालाब थे। पक्का फर्श था। बाबा की कुटिया से अलग हटकर सरकडे का छप्पर था। इस छप्पर के नीचे दस खाटे पड सकती था। जेठ असाढ मे महीने मे छप्पर खुला रहता था जाडो मे सब ओर से टाट के पर्दे लटका दिए जाते थे। कुटिया के पास हा बाबा पृथ्वीदास की समाधि थी। कहत ह यह कोइ पहुचा हुआ साधु था। अब इस समाधि पर चढावा चढाया जाता था। मगलवार क दिन चूरमा बाटा जाता था। कपडे और पैसे का चढावा भी चढता था। पूरा हमीरगढ बाबा पृथ्वीदास को मानता था। उनकी मुरादे पूरी होती थी। यह स्थान गाव से आधा पोना मील पूव की ओर था।

राम दूसरे दिन भी मठ मे रहा। रात को भी। तीसरे दिन चिब्भडदास उससे पूछने लगे तुम तो सुना था कि पढ रहे हो।

जी हा।

तब स्कूल नही गए? तीन दिनो से तो यही हो।

यू ही नही गया।

यू ही कैसे भइ?

मेरा नाम कट गया था। दसवी की फीस भी नही जमा हुई मेरी।

फीस क्यो नही गई?

मेरा हाथ कट गया था ना' इतने दिन मै स्कूल ही नही जा पाया। बाद को उन्होने नाम काट दिया। अब कहते है कि उपस्थिति कम हो गई है अत इम्तहान की फीस नही जमा की जा सकती।

अच्छा यह बात है। अगर फीस के लिए पैसे की जरूरत हो तो यहा से ले जाओ भइ। पैसो की कमी मत समझना।

जी नही। पैसो की तो कोई बात नही है।

राम का मन और उदास हो गया। चिब्भडदास उसका कितना हित सोच रहे थे। वह क्या लगता है उनका। चिब्भडदास कोन थे उसे कुछ पता नही था। उनसे तो उसका लहू का भी कोई सबध नहीं था। दो दिनो मे ही वह उनके कितना निकट हो गया। वह उसकी पढाइ की कितनी चिता कर रहे थे। एक ओर उसका चाचा ह गुरमेल। उसका बापू हे भजन सिह। उसकी चाची हे जलकौर। तीनो मे से कोइ भा उसको ढूढने नही आया। भइ मै यहा क्यो बेठा हू? घर क्यो नही गया? यदि किसी को मेरा मोह होता मेरी चिता होती तो दौडे दौडे आता। जब मरा ही किसी को ख्याल नही हे तो मेरी पढाइ की

क्या चिता होगा। यह सब सोच सोचकर उसमे घर त्याग देने की भावना जाग्रत होने लगा।

दो दिन ओर बीत गए। वह तन मन से मठ की सेवा में लगा रहता। इधर उधर चक्कर की तरह घूमता रहता। चिब्भडदास के मुह से आधी बात निकलती तो वह सब कुछ समझ जाता। बताए गए काम को चटपट करने लगता। रात को सोते समय चिब्भडदास के पाव दबाता। उनके कपडे धोता। नहाने के लिए पानी गर्म करके देता। इतनी सेवा करता जैसे इश्वर ने चिब्भडदास की सेवा के लिए ही उसको इस ससार में भेजा हो।

चिब्भडदास ने एक दिन उससे पूछा क्यो भइ रामदास तुम्हारे पिता को पता है कि तुम यहा आए हो?

जी क्या पता।

तुम बताकर नही आए हो?

जी नही। बताता क्या और किससे बताता। यदि उनमे से किसी को भी मेरे प्रति ममता होती तो मुझे लेने न आते।

बाबा चिब्भडदास से हुए इस वार्तालाप के बाद राम फिर उदास हो गया। बाबा पहले उसकी पढाइ के लिए चिंतित थे अब उसके भूत के बारे में कितना सोचते है। जन्म देने वाले उसकी इतनी चिता क्यो नही करते? चाचा नहीं तो बापू तो उसकी खैर-खबर लेता।

उन दिनो किसानो को कोई खास काम नही होते थ। गेहू की फसल उग आई थी। मौसम बदल गया था। खेती मे थोडा ही काम होता था। भूमि में पानी दिया जा चुका था। खेतो मे लोग केवल चक्कर लगाने ही जाते थे।

गुरमेल को राम का पता तो दूसरे दिन ही लग गया था पर उसने कोइ परवाह नही की। ना ही उसे इस बात की चिता थी कि वह स्कूल जाता है या नही जाता ना ही यह जरूरत थी कि वह खेत मे जाकर उसके साथ कोई काम करवाए क्योकि खेतो मे कोइ काम रहा ही नही था। गेहू की फसल को पहला पानी वह लगा चुका था और अब तो फुसत ही फुर्सत थी। भजना और जलकौर के लिए भी यह साधारण बात था कि राम घने वृक्षो के बीच बाबा चिब्भडदास के मठ मे बैठा है।

ज्यो ज्यो दिन बीतते जा रहे थे राम का मोह घरवालो के प्रति ओर भी कम होता जा रहा था।

5

फागुन चेत की ऋतु थी। गेहू के खेत पूरी तैयारी पर थे। दूर तक हरियाली ही हरियाली बिछी हुइ थी। नहर का पानी लगता ओर इजन (मोटर) चलते थ। मोटर की धुक धुक मे पाइप का पानी खेत मे गिरता तो एक विचित्र तरह का दृश्य उपस्थित करता था।

नन सर्दी म सूरज अपन जसा ऊष्णता वाटता था। मढा पर से हाकर जाते हुए किसाना का त्यागिया म से उठती हुई भाप सासा मे समाती हुइ लगता। वे दान दुनिया की सुध भूल जात। गेहू की बालिया दखकर किसानो क मन स आढतिया का भय जस गायब हा गया लगता।

गुरमेल का जिस दिन काम की तेजा होती या काम का भार अधिक लगता उस दिन वह एक या दो दनिक श्रमिक खत मे ले जाता। भजना भी उसक साथ हाथ पर हिला लता। असल म भजना का शरीर मजबूत था। उसकी पसली का दद इतना तज नही था कि वह खत मे ही न जा सके ओर वह ऊपर का काम भी न कर सके। उसे घर म जलकौर क पास रहन का भ्रम था केवल। बाहर खेत आदि मे जाने के लिए जलकार ही उससे कहा करती थी। उसके कहने पर ही वह कभी कभी खेत पर जाता था। गुरमल ता भजना पर वेसे ही खोरियाया रहता था। यदि वह पाच किल्ले का स्वामी न हाता तो गुरमेल उसे हाथ पकडकर घर से बाहर कर देता। इतना निकम्मा आदमी कच्छा मे हाथ देकर घर म बैठा रहता ह। भीतर ही कही छिपा रहेगा। पता नही कोन सा भजन-कीतन करता रहता है। छाती से ठोढी ऊपर करके ऐसे सिर उठाता ह और देखता हे जेसे कछुआ आस पास देखकर गदन बाहर निकालता हो। गुरमेल उसकी सभी चालाकिया समझता था। जब तक वह घर मे चलता फिरता या खेत पर जाने की तैयारी करता रहता भजना तब तक उकडू बना बैठा रहता किसी कोने मे। जैसे ही वह घर से बाहर निकलता और भजना को विश्वास हो जाता कि वह खेत पर चला गया है तभी वह शेर हो जाता ओर वह आगन मे अच्छा भला चलने फिरने लगता। खासता खासता ओर जलकौर के साथ चुहलबाजी करता बाते करता। पानी गम करके नहाने का उपक्रम करता होता। गुरमेल ने कई बार उसे ऐसा करते हुए देखा था। ऐसा तब होता था जब वह खेत जाने पर काइ चीज भूल जाने के कारण तभी लौट आता और भजना ऐसा करते हुए पकडा जाता।

श्यामा की रगरूटी खत्म हो चुकी थी ओर उसे पक्की जगह पर नियुक्त कर दिया गया था। पहली छुट्टिया म वह घर आया। उसने चाची को सिर नवाया पाव स्पश किए। फिर चाची ने उसे छाती से लगाया। खूब प्यार किया। रोने लग गई। कह रही थी हमारे पास क्या था भई। तू भर्ती हो गया छोटा साधु हो गया। चलो रह गए हम तो वही अकेले क अकेले।

पूछन लगी तू यह तो बता कि तुझे दु ख क्या था क्यो गया तू फौज मे? तेरे चाचा के साथ म गुजारा किए जा रही हू, तू भी किए जाता। तू तो जाकर भर्ती हो गया। बता म कहा चली जाऊ निकल जाऊ घर से?

श्यामा भयभीत हुआ खाट पर बठा था। चाची सचमुच उसके लिए रो रही थी।

वह बाला चाची मुझसे खेती का यह काम नही होता था। मै वहा ठीक हू अब फोज मे। माज करता हू।

अर भाइ तरी मर्जी ह। तरा मन खुश रहना चाहिए। हम ता जितना अपग जाना ह ढाए जा रहे हे।

वह उसके पास से पाढी पर स उठा और तुरत हा हाटा म स दिन क गम गम दूध की दो पल्ली कटारे म डालकर ल आइ। उसम शक्कर भा घाल दा था। एमा दूध श्यामा ने पता नही कितन दिना के बाद आज फिर से दखा था। दूध पाकर उस अथाह मानसिक शाति मिलने लगी। अपने घर जसा शाति उसक लिए बाहर और कहा नहा थी। भर्ती होकर रगरूटी करत समय भी ता वह कितना दु खा रहता था। परेट के समय सावधान विश्राम तेज चल पीछ मुड करवाता हुआ हवलदार कान सा उसक साथ कम सख्ती करता था। एकदम जिद्दी आदमी था वह। जरा सा भा कोइ भूल हा जाता ता टखने पर बूट की ठोकर मार देता था। बहुत निदयी था। जस बछड का डडा स मार-मारकर कोइ चरवाहा हाकता हो। यहा चाचा की झिडकिया थी। यह तो अपना था। अब श्यामा को चाचा की झिडकिया याद नही रही थी। वह जब इस गाव से दूर चला गया था तब यह घर उसे अपनी ओर आकर्षित करता था। गाव की माटी उसे पुकारती था। इसीलिए तो जब उसे लम्बी छुट्टिया मिली तो वह भागा भागा घर आ गया। हमीरगढ देहलीज पर पहुचत ही उसे लगा था जैसे उसकी मा ने उसे अपने कलजे से लगा लिया हो। गाव की मिट्टी चुटकी मे भरकर उसने अपने माथे से लगाई थी।

पिछले पहर का समय था। आगन की धूप उदास होने लगी थी। बात करक और रो धोकर जलकौर घर के अन्य काम धधो मे लग गइ। श्याम वर्दी पहन पहन ही खाट पर सो गया। उसे नीद आ गई थी। चमचमाती हुइ काली सदूकची चौतरे पर की छोटी दीवार पर रखी हुइ थी। भजना चुपचाप घर मे आया। वह कभी कभी इस समय चापाल पर जाकर लोगो मे बैठ जाया करता था। वहा पर तेज धूप थी। निठल्ले लोगा की बात सुनता रहता था। उसने पहले सदूक की ओर देखा फिर खाट पर टेढे पड व्यक्ति की ओर देखा। जलकौर की ओर देखा तो वह हसकर बोली अपना श्यामा है पहचाना नही।

वह खाट के पेताने जाकर बैठा तो श्यामा की आखे खुल गइ। वह उठ बेठा। भजने ने उसके कधे पर हाथ रखा। श्यामा ने उसे प्रणाम किया। दोनो जने कुछ कुछ बाते करने लगे। भजना ने पूछा कब आया? कहा हे? कितने दिनो की छुट्टी हे? कितनी तन्खाह हे तेरी? मन तो लग गया है ना?

श्याम अपने बापू के छोटे-छोटे प्रश्नो का सक्षेप म उत्तर देता गया। बातो स लगता ही नही था कि वे बाप बेटा हे या कि उनमे कोइ भावनात्मक रिश्ता भी ह। वे ता ऐसे थे जैसे लट आ रही गाडी की प्रतीक्षा मे किसी रेलवे स्टशन की बेच पर बेठे दो अजनबी यात्री बाते कर रहे हो।

चाची राम साधु क्यो हो गया? अब वह कहा रहता हे? श्यामा ने पूछा।

भजना जैसे इस प्रश्न के उत्तर से खारिज हो। वह चुप था। उत्तर देने का दायित्व
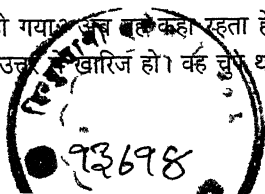
नस जलकार का था। वह बाला जसे तू भग्ता हुआ नस हा वह साधु हा गया।

म जव गया था तब तो वह पट रहा था।

पढाव मढाव सब बीच म हा खतम हा गइ बेचार का। पूछ लेना स्वय ही बता वगा तुम्ह। घन वृक्षा वाला जगह पर रहता हे। पृथ्वीदास क मठ म। हा आना वहा। मे साग धग्ता हू।

घर ता आता हागा?

नहा। जिस दिन से गया है एक बार भी नहा आया। ना कोइ लेन गया उसे। ना उसका बापू, ना चाचा।

तुम्हे जाना था चाचा।

मर मन म ता कइ बार आया मइ जाऊ। जाऊगी अपने आप वह अब नही आएगा।

उसा दिन शाम ढलने पर श्यामा सादे कपडो मे मठ मे गया। रहन सहन मे अब वह पहल वाला श्यामा नहा था। पूनी करके पेचदार पगडी बाधी थी। पैट मे साफ सुथरी कमीज डाला। गम जर्सी पहनी। पैरो मे काले बूट ओर सफद मोजे पहने थे। बाए हाथ मे घडी बधी हुइ थी। दाढी फिक्सर लगाकर चिपकाइ थी ओर मूछे नोकदार थी। वह पढा लिखा आदमी लगता था। वह मठ मे गया तो किसी ने उसे पहचाना ही नही। राम ने भी नही पहचाना उसे। उसने मुस्कराकर राम को महाराज जी कहा था। राम ने उत्तर दिया सतिनाम भाइ। पप से पानी की बाल्टी लेकर लगर की ओर जाते हुए राम की उसन कलाइ पकड ली। बाला बाबे बात नही करते हो?

घुटनो तक का भगवा चोला सिर पर भगवे रग की ही पगडी लपेटे था और पावा मे रबर की चप्पले थी। रामदास की कलाइ पकडकर जैसे उस दुनियादार व्यक्ति ने बहुत बडी अवज्ञाकर दी हो पर राम ने उसे बोली से पहचान लिया। बाल्टी उसी जगह रखकर श्यामा को अपने आलिगन मे ले लिया। वे एक दूसरे को छोड नही रहे थे। देखने वाले दूसर लोग आश्चय कर रहे थे कि यह कोन हे रामदास जिसे अपनी बाहो मे भरे हे।

आलिगन मुक्त हुए तो दोनो की आखे प्यालो की तरह भरी हुइ थी। वे एक दूसरे की दशा पर रो रहे थे। कैसी बुरी दशा हो गई थी उनकी। जैसे दोनो ही मनुष्य न रहे गए हो। एक फाजी दूसरा साधु। ओर फिर लगर से कुछ दूर बैठकर वे बाते करने लगे। अधेरा हो गया था। राम अपना बाया हाथ श्यामा की आखो से बचा बचाकर रख रहा था। उसे अनुभव हुआ कि श्यामा को उसके हाथ के बार मे पता नही है। पता होता तो वह पहले यही बात छेडता। बात छेडकर दु खी भी होता।

श्यामा ने कहा राम अगर मा जीवित होती ता हमारी यह दशा ना होती।

मा जीवित होती तो भाइ दुनिया दूसरी होती। तब तो बापू भी ध्यान रखता। वह भी तो एक प्रकार से जीवित मनुष्य नही रहा। फिर राम ने गहरी सास भरी और बोला

मा जावित हाता ता हम चाचा स नमीन वटवाकर भलग खना करत। नग विवाह हा नाता म पढाइ करता रहता।

पढाइ क्या बन्कर दी तूने

मरा नाम कट गया था। दाबारा उन्हान मग दाखिला नहा किया।

क्या?

कहने लग उपस्थिति कम हा गइ ह। इसलिए पपरा का फीस नहा ना सकना।

कहा था तू, क्या घट गइ उपस्थितिया।

राम न अपना बाया हाथ पीठ क पीछ किया हुआ था। सामन लाने म उम वह बहुत झिझक रहा था।

श्यामा ने फिर पूछा नाम क्या काटा गया था?

म महीना सवा महीना स्कूल नहा जा सका था।

क्यो?

बाया हाथ सामने आए बिना रह ना सका।

श्यामा की आखा के सामने राम का हाथ साप क फन का तरह सिर उठाए खडा था। उसने राम का हाथ पकड लिया फिर पूछा यह क्या?

राम ने अपना हाथ श्यामा के हाथ मे दे दिया। उसने टटोला ता हाथ उसे छाटा लगा आर पतला भी। पतले छोटे हाथ ने बहुत दु ख झेले हे। श्यामा न पूछा क्या करू इस हाथ का?

उगलिया गिन कितनी है। राम खिलखिलाकर हस पडा।

अधेरा था। श्यामा की चीख निकल गइ। उसके पेरो के नीचे स नमीन खिसकने लगी।

यह क्या हो गया तेरे हाथ को रे? श्यामा उसका अगूठा और दो उगलिया अपनी दस अगुलियो मे दबाए हुए था।

कपास के डठल उखाडने गए थ। मुझसे खुद से ही खुरपा लग गया इन दा उगलियो पर।

खुरपा जेसे श्यामा के कलेजे पर भी चल गया हो। उसके मुह से लम्बी आह निकली।

ओर फिर वे दोनो कुछ देर चुपचाप बेठे रहे। बाहर ठड थी। अधेरा भी था। वह लगर मे आ गए। साथ के सेवक से कहकर राम न श्याम के लिए दूध गर्म करवाया। दोनो ने दूध पिया। दूध पीते पीते वे एक दूसरे की आर कनखियो से देख लत थ।

राम घर चलो। रात को बाते करेगे। श्यामा न कहा।

बाते यही कर लो। घर ता म जाऊगा नही। कसम खा ली ह।

चाची हे ना यार बापू हे। चाचा के पास मत जा चाडाल के पास।

मेरे लिए तो अब यह पूरा घर ही चाडाल है। अपना क्या हे भइ अब वहा। दो

राटिया खानी हाता ह। वह यहा मिल ही जाती हे। खान की छूट ह पीने की छूट हे पहनने की छूट ह। जिदा रहे बाबा चिब्भडदास' आराम से हे भई। आराम शब्द कहकर राम हसा। इस शब्द मे पूरा त्याग छिपा हुआ था।

श्यामा न आर भी कइ बात बताइ। पूरा जोर लगाया। पर राम घर जाने को तयार नही हुआ। एक ही बात कह दी जितने दिन तू है जब तेरा मन करे यही आ जाया कर। बस इतना बहुत है। फिर भी भाई है। मा ने एक ही पेट से जन्मे थे। साधु हो गया मे। जग से रिश्ता खत्म हो गया तो क्या है। राम के ये शब्द भारी थे टूट-टूटकर गिर रहे थे। गिरते रहे सभलते रहे।

उदास मन लेकर श्यामा घर लौटा आया। पलटन से लाइ रम खोल ली और अकेला ही पीन लगा। चाची उसे गर्म गम साग की कटोरी मे मक्खन डालकर दे गइ थी। चारा काटने की मशीन के छप्पर के नीचे वह खाट पर कम्बल लकर बैठा था। ताखे मे मिट्टी के तेल का दिया जल रहा था। बोतल शीशे का गिलास और पानी का गडवा उसने खाट के सिरहाने रख लिया था। उसके पास ही खटोले पर उसका बापू खेस लपटकर करवट लिए लेटा था। उसने बापू को भी जबरदस्ती रम का एक पैग दे दिया। भजना बाते कुछ नही कर रहा था। थोडी-थोडी देर बाद सूखी खासी खासता था जैसे चुप का तोड देता हो। श्यामा न उससे कुछ पूछ रहा था और ना उससे कुछ कह रहा था। श्यामा की दृष्टि मे वह सन्यासी था जिसने अपनी सम्पूर्ण आयु यू ही बेकार मे बैठकर गुजार दी थी। उसके सन्यासीपन ने ही गुरदयाल कौर की बीमारी की ओर कभी कोइ खास ध्यान नही दिया था। वह बेचारी उपेक्षित रहकर ही प्राण त्याग गई। भोला पछी जिसे अपने घोसले मे दो चे चे करते बेटो का कोई ख्याल नही था। श्यामा अपने बापू के बारे मे सोचने लगता तो नशे की झोक मे उसे उस पर न तो गुस्सा आता और कोई तरस आता। आज वह बापू के अस्तित्व पर हसा था और हसकर उसे एक पैग ओर दे दिया लो बापू सिह पी जाओ राम का नाम लेकर। मेरे छोटे भाई राम का नाम लेकर नही अपने किसी राम का नाम लेकर यदि तुम्हारा कोई राम हो तो।

चाची मकई के आटे की रोटिया पका रही थी। गम पानी का हाथ लगाकर लोइ बनाती और हाथो पर ही रोटी बढाकर तवे पर डाल देती। दूसरी लोई बनाकर तवे पर पडी राटी को कलछी से पलटती और फिर हाथ की लोई की रोटी बनाने लगती। सागवाला पतीला चूल्हे की भूभल पर रखा हुआ था। दो रोटिया बनाकर उसने आवाज दी ओ श्यामा रोटी खा लो अब बाप बेटे। मक्की की हे ठडी हो गइ तो लक्कड बन जाएगी।

जलकौर की आवाज सुनकर भजना उठा और चूल्हे के आगे जाकर बैठ गया। जेसे आग तापने के लिए आया हो। उस दिन इतनी ठड नही थी। फिर भी वह हाथ सेकता आर हाथा को मुह पर फेर लेता था। चूल्हे की आच की गर्मी उसकी टागो तक पहुचती तो वह टागो पर हाथ फेरकर उस गर्मी को कम करने का यत्न करता। जलकौर ने एक थाली के किनारे साग की दो कल्छुल डाली उसमे मक्खन डाला और थाली मे ही

दो रोटिया के चार टुकडे बनाकर रख दिए। भजना चुल्हे क सामन बठकर ही रोटा खान लगा। ताप की वजह से थोडा पीछ ही बैठ गया था। जेठ भोजाइ कोइ बात नही कर रह थ।

इतने मे गुरमेल बाहर से आया। वह खेत स आकर घर म एक चक्कर लगा गया था। फिर लोगो मे जाकर बैठ गया था। उसे जलकोर से श्यामा के आने का समाचार मिल चुका था। छाजन के नीचे रोशनी देखकर वह पहले उधर ही गया था। दरवाजे के भीतर यू मुह किया और देखा जैसे घर मे आए मेहमान को कोइ पहचानने का यत्न करे। फिर बोला श्याम सिह है?

आओ भई चाचा सिह। वह लेटे से उठकर बैठ गया। सिरहाने के नीचे से बोतल निकाली और उसे पैग दिया। गिलास मे पानी गुरमेल ने स्वय ले लिया।

हाथ मे गिलास लेकर घूट भरने से पूव गुरमेल ने श्याम की ओर दखकर पूछा और फिर आनद से है।

एकदम। तुम सुनाओ चाचा तुम्हारे खेतो का क्या हाल हे? अब तो तुम्हारी मेढ ठीक से निकल जाती होगी? पुरानी बात याद दिलाकर उसने गुरमेल को स्तब्ध कर दिया। मेढ की बात जेसे उसकी हड्डियो पर नश्तर की तरह लगी हो। दारू अब वह कैसे पिए? न गिलास फेक सकता था। कडवी कसैली चीज समझकर उसने दारू गटक ली। स्तब्ध हुआ चुपचाप बैठा रह गया। श्यामा से उसकी आख नही मिल रही थी। वह कभी धरती की ओर झाकने लगता कभी दूसरी ओर दीवार पर उसकी निगाह टिकी होती। उसे दीवार पर हिल रही उसकी ही परछाइ डराने लगी। लगा जेसे श्याम अभी उसके गले मे हाथ रखेगा। उसे गला दबाकर मार देगा। वह तेजी से खाट से उठा ओर बाहर निकलकर उसने सुख की सास ली। चूल्हे के सामने रोटिया पका रही जलकोर और रोटी खा रहा भजना उसे नही दिखाइ दिए। वह पशुओ की ओर चला गया। नादो मे उनका चारा देखने लगा।

6

श्यामा एक महीने के अवकाश पर आया था। उसने अपनी सदूक कोठरी के पास वाले कमरे मे अपनी मा की सदूक पर रख दिया। जब कोई चीज निकालनी होती सदूक नीचे उतार लेता। सदूक मे हर समय ताला लगाकर रखता। उसकी वर्दी सादे कपडे तथा अन्य चीजे सदूक मे ही थी। वह रम की छ बोतले लाया था। वह भी सदूक मे रखकर लाया था। दारू वह अकेले ही पीता था। पहले दिन बापू और चाचा को जो पेग दे दिए सो दे दिए फिर उनको नही पूछा। साथ के लौडे लिहाडियो से भी उसने नही बताया था कि वह रम लाया है। गाव म रम की शराब नही दिखाइ देती है। लडके एकदम पीछे पड

गए ला फाना हम ना दिखा क्या लकर आया ह?

व कइ दिना से उसक पीछ पट हुए थे। एक दिन वह वाहर किसी के यहा भडो क वाडे म जाकर बठ गए। श्यामा न ठक से मगा दी। वे चार थ आर बातल था दा। लडक निराश हा गए। उन्होन ता साचा था कि फाजी रम पिलाएगा। जब भी कोई फाजी छुट्टी पर आता हे ता रम लकर आता हे। ठेके की ता पानी वाली थी। उसमे पता नहा क्या मिला होता हे बहुत कडवी हाती हे। जीभ छीलती जाती हे। एक दम से चढती हे आर दूसरा दोर शुरू करने तक उतर जाती हे। लडके एकदम गल पड गए नही तो वे दो बातल थाडी देर का खल थी। श्यामे को गुमान था कि उसने लडको को पिलाइ ओर लडका का यह मान था कि उसने पिला दी थी। नही तो हर लडके के मन मे चुभन थी कि श्यामा ने दुराव किया। दोस्ती पक्की थी। किसी ने कुछ नही कहा। सोचा कोई बात नही कभी फिर अटी मे आ जाएगा। तब रम भी पी लेगे।

दिन छिपते ही वह छिपाकर रखी बोतल मे से एक पेग लगाता ओर चोपाल मे आ बैठता। इलायची चबाता रहता। स्वय आगे बढकर नही बालता था। जो भी उसके पास आ बठता उससे अवश्य बाते कर लेता। अपनी होशियारी से मुह दूर दूर रखता कि दूसरे को दारू की गध न आ जाए। पर उसकी आखो मे उतर आने वाली लाली चुगली करती रहती। बात करते समय वह यू ही घुटने हिलाता रहता। ऐसे करके वह दूसरो से बडा बनने का यत्न करता। उसकी बातो मे गप्प ही गप हाती। यू ही बढा चढाकर कहता रहता ओर सुनने वालो को आश्चय मे डालता रहता। इस प्रकार जैसे उसे कोई बडाई मिलती हो। जब रात गहरा जाती तो वह घर आ जाता। उसकी चाची रोटी पका रही होती। उससे गम गम रोटी खाने को कहती। वह रोटी खाने की तयारी सी करता हुआ चोरी से एक पेग और मार लेता ओर झोका लेता हुआ रोटी खा लेता। उसने अपनी खाट मशीन वाले छप्पर के नीचे ही बिछा रखी थी। वही जाकर सोता था। ऊपर रजाइ नही ओढता था। अपना मोटा भारी कम्बल ओढकर ही सोता था। चाची से कहता वहा भी तो कम्बल ही होते है। मा वाली रजाइया वहा कहा होती है। फिर कम्बल म आदमी चुस्त रहता हे। रजाइ तो निढालकर देती हे आदमी को।

वह बापू आर चाचा से कम ही बात करता था। हा चाची से खूब बात कर लेता था। चाचा स उसकी आख नही मिलती थी। उससे तो पहले दिन ही एक अलगाव पैदा हा गया था। वह अभी तक बना हुआ था। गुरमेल उससे झेपता रहता था। डरता था कि वह उल्टी बात कर बठेगा। गुरमेल यह भी सोचता कि अब उससे काहे का विवाद हे। उसकी सोच यहा जाकर रुक जाती कि लडका चार दिन की छुट्टी पर आया है अपनी इच्छा से आनद कर एक दिन चला जाएगा। वह जलकार से श्यामा के बारे मे पूछता रहता। उसकी बात करता रहता।

एक दिन गुरमल के पास बेठे हाने पर जलकौर न श्यामा से कहा दिन भर भइ खाली बेठे-बेठे तेरा जी नही लगता होगा चाचा के साथ खेत पर चला जाया कर। काम धधे

म दिन कट जाता ह।

चाचा के साथ काम करना हाता ता भर्ती काहे का हाता चाची।

काम का क्या ताना ह भड। अपना घर ह।

म काम स कब भागा था चाची चाचा से भागा था।

श्यामा की बात सुनकर गुरमेल उठा ओर घर स बाहर हा गया। "स शका था कि लडका आर आगे बढेगा। कोई क्लेश न खडा हो जाए। यह ता मुह बद करक हमशा हा टालता रहा हे।

भजना उसकी सूरत देखता रहता। कभी कोइ अच्छा बुरी बात कहता था। बस एक आध बात। श्यामा उसे बुला लेता था। बुला लेता तो भजना बोल देता नही तो गुमसुम रहता। श्यामा के पास बापू स करने वाली ज्यादा बाते नहा थी। यह अपनी पसली पकडकर पीडा से मुह बनाता आखे मीचकर नाक चढाता पर श्यामा उसे देखकर भी कुछ न कहता। समझता यह पसली का तो इसका जिदगी भर का रोग ह काइ क्या करे। भजना को कोई सहानुभूति न मिलती।

उसकी न कोई बुआ थी और ना कोइ मोसी। वह किसी रिश्तेदारी म भी नही जा सकता था। केवल ननिहाल था वह भी ना होने जसा था। और कही कोइ रिश्तेदारी होती ता वह वहा जाकर चार दिन काट सकता था। हमीरगढ मे ही उसकी छुट्टिया उस भारी लगने लगी। जेसे यहा उसका अपना कोइ न हो। केवल एक राम था। यह साधु बना बैठा हे। साधुओ को किसी घर से क्या मोह रह जाता है।

भीखी मे उसका ननिहाल था। मामा काई नही बचा था। मामा के तीन लडके थ। सबसे छोटे का ब्याह हो चुका था। दोनो बडे अभी अनब्याहे थे। छाटे भाइ की रसोइ स ही भोजन करते थे। जमीन थोडी थी। तीनो भाइ खेती का काम करते थे। दोना बडे भाइ ज्यादा काम करते थे। छोटा भाइ मुखियागिरी करता था क्योकि वह ब्याहा हुआ था। हर दूसरे तीसरे साल बच्चा हो जाता। दो लडके थे और तीन लडकिया। साझी खेती थी साझा चूल्हा था। ईश्वर को पता था कि किस बच्चे का कोन बाप था। नही बाप तो छोटा ही था करनेल। करनैल ने सभी लोगो के सामने तेजो के साथ फेरे डाले थे। यही तजो का असली पति था। वही बच्चो का असली बाप था।

भीखी वाले शायद ही कभी हमीरगढ आए हो। उनकी बुआ नही थी। बुआ क लडके इतना सबध नही रखते थे। ब्याहे भी नही थ। फूफा यू ही था। यहा क्या करने आते भीखीवाल।

उसे हमीरगढ से उकताहट होन लगी ता उसका एक दिन मन किया कि भीखी हा आए। ओर कही जाने का था नही। केवल एक भीखी था। जाते समय यह एक बोतल रम भी ल गया। ननिहालियो का घर आत्माराम अस्पताल की ओर बडे गाल तालाब के किनारे था।

तेजो ने उसे पहचाना नही। कई साल हुआ जब यह भीखी आया था तब ता यह कुछ और ही था। अब कुछ और था। कसे पहचानती यह। अब ता यह पढा लिखा सा

लगता था। जसे दसना पास हो। श्यामे ने तेजो से नमस्ते कहा था। भाभी भी कहा था। पर तेजा का समझ मे नही आया कि वह कोन है? उन तीनो मे से कोई भी घर मे नही था। बच्चे श्यामा को टुकुर टुकुर देख रहे थे। उसने बच्चो के हाथ पकडे गालो पर हाथ फेरा। पर न दूर हट जाते थे। आश्चर्य मे थे कि नह कौन है जो उनकी मा को भाभी कह रहा है। पहले तो वह हसता रहा पूछता रहा 'एकदम नही जानती मुझे? वह हर बार ना मे सिर हिला देती। फिर हारकर बोली मेरी समझ मे तो आ नही रहा है तुम खुद ही बताओ।'

मै हमीरगढ से आया हू, तुम्हारा देवर। करवैल की बुआ का बेटा—श्याम सिह। अब तो पता लग गया।

अच्छा-अच्छा! तुम ऐसे हो गए हो अब? पहचान मे भी नही आते। तुम तो मै कहती हू—फौज मे भर्ती हो गए थे।

हा फौज मे हू अब मै। छुट्टी पर आया हू। तुमसे मिलने आया हू। और पूछो क्या पूछना है?

तेजो ने पहले उसे एक गिलास पानी दिया। फिर चाय चढा दी। बच्चो से कहा, तुम्हारे चाचा है रे। हमीरगढ वाले।

दूर पर खडे बच्चे उसके पास आ गए। मुस्कराते और शर्माते रहे। वह चाय पी रहा था कि करनैल बाहर से आ गया। श्यामा खडा हो गया। दोनो ने पहले हाथ मिलाए फिर आलिगन किया। बच्चे हस रहे थे। दोनो खाट पर बैठे तो एक गिलास चाय तेजो ने करनैल को भी दे दी। चाय पीते पीते वे बाते करने लगे। पिछली बाते शुरू कर दी। बुआ के जमाने की। कभी हसने लगते कभी उदास हो जाते। उनकी बाते खत्म ही नहीं हो रही थी। आगन मे पटरे के पास तेजो ने बाल्टी मे गर्म पानी रख दिया। श्यामा से बोली कि वह हाथ मुह धो ले। वह सदूक खोलकर तौलिया निकालने लगा तो करनैल अदर बरामदे मे तेजो से कुछ किटिपिट करके अड्डे की तरफ चला गया। बस अड्डे पर बकरे के मास की दुकान थी।

दिन ढलने वाला था। फौजी ने रम खोल ली। उधर चूल्हे पर मीट पक रहा था। एक भीनी भीनी गध पूरे घर मे फैलने लगी। बच्चे उछलते कूदते हसते-चीखते कभी-कभी उनको देख जाते। वह भूसे वाले कमरे मे बेठे पी रहे थे। इस कमरे मे भूसे की गर्मी थी। कही से भी हवा नही आ रही थी। घर से यह कमरा अलग था। घर मे शीशे के गिलास नही थे। वह छोटी गिलासियो मे पीने लगे। श्यामा करनैल को स्वय पैग बनाकर देता था। उसकी बाते खत्म नहीं हो रही थी। नह फौज की बाते बता रहा था। करनैल आश्चर्य मे पड जाता। कभी-कभी हसन लग जाता। नह थोडी थोडी देर मे चूल्हे की ओर चक्कर लगा आता। मीट अभी पका नही था। अभी तो ने मूलियो ओर प्याज से ही काम चला रहे थे। छोटी छोटी मूलिया थीं। यह उनके अपने आगन मे ही उगी थी। करनैल एक मूली छीलता-काटता और फिर नमक लगाकर श्यामा के हाथ मे दे देता। इस प्रकार

मूलिया छील काटकर दत हुए वह श्यामा का बहुत प्यारा लगता था। सगे भाइया स भी अधिक था वह। जेस वह राम से भी ज्यादा सगा भाइ हो।

वे खूब सरूर मे आ गए थ तब दोनो बडे भी खेतो से आ गए। उन्हाने खन स सरसा का चारा लाकर चारा काटने वाली मशीन क पास पटका ही था कि बच्चा ने चिल्लाकर कहा हमीरगढ वाला चाचा आया हे।

दोनो ने अनुमान लगाया कि श्यामा होगा या राम होगा। वे ही दो चाचा हैं हमीरगढ मे और कौन है।

पहले जोरा उनके पास अदर आया फिर बडा फतह सिह आया। श्यामा के कधे पर हाथ रखकर उनसे परिवार का कुशल क्षेम पूछने लगे। दोनो हा उनके पास दीवार से टेक लगाकर बैठ गये। वे श्यामा को गौर से दख रहे थे ओर प्रसन्न हो रहे थे। श्यामा ने दोनो को एक एक गिलसिया दी। दोनो ने ही धरती पर दो दो बूद गिराकर पी ली। दो चार बाते ओर की और उठ खडे हुए। श्याम ने उनसे ओर पीने के लिए कहा। जोरा बोला कोइ बात नही तुम बैठो। हम चारा काटकर पशुओ को दे दे फिर आते हे तुम्हारे पास। जब तक तुम रग जमाओ।

मीट बन चुका था। करनैल कटोरा भरकर कमरे मे ल आया। वे स्वाद चखने लगे। पतीला चूल्हे की आच पर रखकर तेजो रोटियो पकाने लगी। पाचों बच्चे साथ ही-साथ खाते जा रहे थे।

दोनो भाइयो ने सरसो का चारा बनाया और फिर उसे भूसे मे मिलाकर पशुओ के आगे पटक दिया। फतह सिह ने गर्म पानी से हाथ मुह धोए और रोटी खा ली। उमे ओर दारू पीने की इतनी लालच नही थी। चौपाल मे रोज अलाव जलती थी। लोग खेस लपेटकर उसमे से बाहे निकालकर अलाव के चारो ओर बैठ जाते और आखो को आते धुए का हाथ से हटाते हुए बाते करते रहते। तालाब के किनारे से थोडा दूर हटकर इसी प्रकार के दो अलाव रोज जलते थे। लोग स्वय ही कडे ला लाकर डाल देत। कोई सूखी लकडिया भी लाकर डाल देता था। कभी कोइ बूढा घर मे पडा फालतू की लकडिया ले आता। जीर्ण शीण क्षीण लकडी। खाट का पुराना बान भी तेजी से जलता था।

फतह सिह अलाव के पास जाकर बैठ गया।

जोरा काम धधे से निबटकर उनके पास आ बैठा था। उसने दो दोर ओर लिए। खतों की बाते होती रही। फिर वह उठ खडा हुआ। रोटी खाइ ओर वह भी घर स बाहर चला गया। वे दोनो खूब पी गए थे। तेजो दो बार रोटी को पूछ गइ थी। पर करनल ने कोइ ध्यान नहीं दिया। वे जोर जार से बाते कर रहे थे। करनैल ने ही पूछा रोटी खाइ जाए अब?

खा लेगे। रोटी तो खानी ही हे। ओर दू। श्यामा ने पूछा।

नही बस मै तो । करनैल न हाथ जोड लिए।

नही अभी ओर पिएगे। श्यामा बहुत नशे मे था। हिचकी लेकर फिर बोला भाभी को बुला।

करनल न आवाज दा।

यह जल्दा से आए और पूछा ले आऊ?

नहा भाभी इधर आओ। श्यामा बाला फिर बोतल म पाव एक बची लेकर कहन लगा लो अब तुम डालकर दा मुझे। उठाओ यह बाटी उठाआ।

वह हसन लगी। करनेल ने भी कह दिया डाल दे इसका मन राजी कर दे।

बाटा म दारू उडेलते हुए उसने कहा लो डाल देती हू। फिर हसकर ही बोली यह कसे कसे करूगा इसका दिल खुश?

वह भी कर दना क्या फक पडता है। करनैल हसी हसी मे ही कह गया।

श्याम चार रात तक भीखी मे रहा। उसकी खाट भूसे वाले कमरे मे थी। राज शाम का यह ठेके से बोतल ले आता। बस अड्डे से एक किलो मीट भी ले आता। फतह सिह नही पीता था। जोरे का जबरदस्ती श्यामा पास बेठा लेता। वह भी थोडी सी ही पीता था। दो बारी लकर पता नही कब उनके पास से उठकर चला जाता था। करनैल और श्यामा खूब डटकर पीते। पागलो जेसी बाते करते। श्यामा बढा-चढाकर फोज की बाते सुनाता। एक प्रकार से करनेल को आश्चयचकित ही करता। बडी लडकी दोनो को रोटी खिला देती। जब बच्चे सो जाते तब तेजो वराण्डे से उठकर भूसे वाले कमरे म जाती।

बीच म एक दिन करनल को साथ लेकर वह मानसा गया था। वहा से उसने दो सूट खरीदे। दोनो सूट एक ही तरह के बढिया कपडे के महगे मूल्य के। एक सूट भाभी तेजा के लिए आर एक चाची जलकोर के लिए। तीनो लडकियो के लिए गर्म बास्कट ओर लडको के लिए स्वटर भी ले आया। खाने के लिए सेब केला और बर्फी का डब्बा। करनैल उसकी ओर देखता रहा। कभी कभी जीभ हिलाता अरे अब रहने दो काहे को इतना खच किए जा रहा है।

वह हमीरगढ लोटा तो चाची ताने मारने लगी वहा ननिहाल जाकर मन बहला लिया। म तो नित्य शाम को आटा लेकर बैलो को देती हू। मैने कहा आज आता होगा आज आता होगा। तूने तो सालो बिता दिए भई भीखी मे ही।

यह तो अभी आने नही दे रहे थे चाची। बहुत स्नहे करते ह भीखी वाल तीन। भाइ। भौजाइ की बात ही मत पूछो चाची। चलने लगता तो हाथ मे से बेग छीन लेती थी। कहती थी जितने दिन की छुट्टी है यही रहो।

तो रह लेता वही। भोजाइ की रोटिया बहुत स्वादिष्ट लगती होगी।

वह हसते रहे। श्यामा न सूट निकालकर दिया तो जलकोर बाग बाग हा गइ। आशीष देते न थकती। कहा जीता रह बेटा। अगर मेरा कुछ हे तभी तो दे रहा हे।

जितने दिन उसका छुट्टी शेष रही वह लगभग रोज सुबह सुबह राम के पास जाता रहा। जगल पानी जाकर दातून करता करता पृथ्वीदास के मठ पर चला जाता। वहा कुल्ला आदि करता मुह हाथ धोकर बाबा चिब्भडदास को सिर नवाता पाव स्पश करता। बाबा को पता था कि यह लडका उसके सेवक रामदास का बडा भाइ है ओर फौज से छुट्टियो

म आया हुआ ह। वह रामदास का आवाज दत आर कहत कि पाना क लिए दूध ल आए। श्याम ज्यादा समय तक बाबा चिब्भटदास के पास नहा बठता था। वहा न उतना आर रामदास क पास लगर मे हा आ जाता। वह उबल हुए दध म चाय का पत्ता आर शक्कर उस देता। श्यामा कहता तुम भा लो। रामदास स्वय नहा पाता था उसा का दूध पिलाता था। वह घूट भर भरकर पाता आर रामदास उसक पास पग क बल बटा रहता। वे इधर उधर का आम सी बातें किया करते थे।

छुट्टी खत्म हान स चार दिन पूव श्यामा एक रात ओर भाखा म काट आया था। एक दिन पहले वह मठ म रामदास के पास गया और बोला कि वह कल बुढलाडा स गाडी पर बैठ जाएगा। छुट्टी खत्म हो गइ है। वह दापहर क समय गया था। दाना भाइ एकात मे बेठकर बहुत दर तक बात करते रह। श्याम ने बहुत कहा था कि वह कभा-कभ घर जाकर चाची से मिल आया करे। वह उसे बहुत याद करता ह आर बात करन पर रोने लग जाती है पर राम नही माना था। कहने लगा कि वह चाण्डाल चाचा स बात नही करूगा। यह भी कहा कोई बात नही चाची स कभी मिलूगा। बापू की बात दोना मे स किसी ने नही की।

और फिर राम ने कहा म तो अब देख लो इस भेष म आ गया हू। उम्रभर यू ही रहना है मुझे तो। श्यामा तुम्हरा ब्याह हो जाता तो अच्छा होता। तुम तो सुख स रहो।

श्याम ने कहा अपने हिस्से की जमीन हे पाच किल्ले की। आर अब मे तो नोकरी कर रहा हू। पूरी छुट्टी मे ससुरा कोइ जाट मिलने नही आया।

दोनो जने खिलखिलाकर पर धीरे धीरे हस पडे आर फिर राम बोला सगाई तो अब हो जाएगी तुम्हारी। तुम अब चिता मत करो। पाच किल्ल ही नही पूरी दस गिनो। चाचा वाली भी तो अपने पास आनी है एक दिन। तुम चाची से बनाकर रखा करो। चाची अच्छी हे। चाचा भेडिया है। पता नही कब मरेगा गला छूटे।

दूसरे दिन दस बजे की गाडी स उसे जाना था। उसका बापू सदूक उठाकर स्टेशन तक गया। चाची उसे गाव से बाहर तक छोड आइ थी। चाचा घर पर नही था। राम गाव के रास्ते मे खडा था। वह खोए की बर्फी पीपी भरकर ले आया था। स्टेशन तक वह भी उसके साथ गया। भजना ओर राम उसे गाडी पर चढाकर लोटे।

7

श्यामा छुट्टी बिताकर गया तो बीस दिनो के बाद ही उसकी बदली फीरोजपुर छावनी म कर दी गइ। वहा उपस्थित होने क दस दिनो क बाद उसे चिट्ठी मिली कि उसक बापू भजन सिह का स्वर्गवास हो गया। वह चिट्ठी रामदास ने भेजी था।

भजना जब बहुत ही तग हो गया तब गुरमेल उसे बुढलाडे अस्पताल ल गया।

डॉक्टरो ने चार दिन रखकर बताया कि उसके पेट मे कोई खराबी है। इसे बठिंडा ले जाओ। बठिंडा मे जाकर उसका ऑपरेशन हुआ। पेट मे से बहुत बडी रसौली निकली। वह ठीक होकर गाव आ गया। पर कुछ दिनो के बाद उसे खूनी दस्त हो गए। दस्त ठीक ही नही हुए। वह हरदम निढाल रहता। उसमे जीने का साहस समाप्त हो गया था। उसने कभी यह भी किसी से नही कहा कि उसे फिर से अस्पताल ले चलो। अपनी बीमारी अपने भीतर ही दबाकर वह इस ससार से विदा हो गया।

श्यामा को चिट्ठी तब मिली जब उसकी तेरहवी हो चुकी थी। पता नही यह चिट्ठी इतने दिनो तक कहा मारी मारी फिरती रही। रामदास ने तो यह चिट्ठी उसके फूल चुनने के दूसरे दिन ही लिखकर बुढलाडा से आने वाले डाकिए को दे दी थी। यदि चिट्ठी तेरहवी से पहले पहुच जाती तो भी उसे छुट्टी नही मिलती, क्योकि वह लम्बी छुट्टिया बिताकर ही अभी लोटा था। और फिर नौकरी भी तो नई नइ थी उसने चिट्ठी लिखवाकर राम को भेजी थी कि भाइ बापू का सभी रस्म रिवाज करो। हमे उससे कोई आसरा तो था ही नही। अपने लिए तो वह होना ना होना बराबर था। चलो फिर भी बाप तो था ही। कुछ बाते उसने चाची के लिए भी लिखवाइ थी। पर चाचा का जिक्र चिट्ठी मे कही नही था।

राम ही फूल लेकर हरिद्वार गया था। गुरमेल तो खीझता डोल रहा था। कह रहा था—भजना इस ऋतु मे मरा ही क्यो? उधर आषाढी आ गई है और उसने यह काम कर लिया। उसे यह भी दु ख था कि अब उसके भोग पर इतना खर्च होगा। खाना पीना करना होगा। फालतू का खर्च खडा हो गया है। आढतिये से जो सोदा सुल्फ आएगा उसका पैसा कौन देगा? श्यामा और राम का नाम लेकर कहता वे तो गए बीते है। गुरमेल को भजना के मरने पर एतराज था उस पर होने वाले खर्च का दु ख था यह ख्याल नही था कि उसके पाच किल्ले की उपज कौन खाता है। भजना का क्या खच था दो समय की चाय दो समय एक एक रोटी। उसे किसी प्रकार का ऐब नही था। खाने पहनने का शौक नही था। लडके दोनो घर से बाहर थे।

अषाढ बिताकर गुरमेल ने साझी रख लिया। यह चमकारो का लडका था। सत्ताइस अट्ठाइस साल की उम्र थी। लम्बा कद काला रग मुह पर माता के छोटे छोटे निशान थ। पेर बहुत बडे थे। उसके पैरो मे आम जूतियो से बडी जूती आती थी। वह टागो का झटका मारकर चलता था। काम मे बहुत मेहनती था। ना उकताता था और ना थकता था। ना उसे नीद आने की कोइ लालच थी और ना ही खाने पीने की कोइ बुरी आदत थी। उसकी नाम ही केवल सतोषी नही था वह हर तरफ से सतोषी था। उसका विवाह हो चुका था। बहू गोरी थी।

गुरमेल की खीझ-झुझलाहट कहा गइ। कहा तो काम के पीछे वह श्याम ओर राम पर झुझलाता रहता था कहा अब सतोष के पीछे लगा रहता। वह खब्बीखान जमीदारो क साथ रह चुका था। काम का पूरा जानकार था। जिस काम को हाथ मे ले लेता उसे खत्म कर देता। गुरमेल उसके साथ काम करते हुए हाफ जाता था। पहले साल ही उन्होने

आठ किल्ल म अमरीका कपास बाइ। पहले तो सादा कपास हाता था अमराका कपास पहला बार बोड था। गजब कर दिया था सतोष ने। ने किल्ल म पशुआ क लिए चारा तथा और छोटी मोटी फसल बोइ थी। अमराकी कपास का अम्बार लग गया। आर फिर गह भी अथाह पदा हुआ। सावनी आर अषाढी दोनो ऋतुआ की इतना फसल अकल गुरमल ने कभी नही ली थी। जलकौर बहुत प्रसन्न थी उनक घर इतना अनाज आया।

जलकोर सतोष को पूरा भोजन खिलाती। उसकी दाल सब्जी कभी रूखी न रखता। कभी मक्खन कभी घी उसमे जरूर छोडती। जिस दिन वह कठिन श्रम करक आया होता उस दिन तो उसे शक्कर मे घी मिलाकर देती थी। रात के खाने के बाद दूध पिलाती। आम लोग साझी को रात को दो प्याले दूध ता अवश्य दते थे पर वह दिन का दूध हाता था जिसमे आधा पानी होता था। पर जलकोर ऐसा नही करती थी। वह जो बिना पानी मिला दूध अपने और गुरमेल के लिए गर्म करती थी वही दूध सतोष का दती थी। कभी कभी छिपा हुआ मजाक भी कर देती ले सतोखिया आज दूध मे घी भी डाल दिया हे घर मे जाकर बहू को खुशकर देना।

वह तो जलकौर खुश ही है। फिर उसे खुशी ना खुशी का कुछ पता नहा ह। उससे तो लडकी नही सभाली जाती है। उसी मे उलझी रहती है। म तो जाकर सा जाता हू, तब तक वह काम भी नही निबटा पाती है। सोती भी मा के पास हे। वह बस खुश ही है। बिना खुश किए भी खुश रहती है। सतोष भोदुओ की तरह बता गया।

गुरमेल ने एक चरवाहा भी रख लिया। वह दोनो भेसो की देखभाल करता और खेत पर जाकर सतोष का हाथ भी बटाता। गुरमेल ऊपर के काम धधे देखता रहता था। घर मे दो जीवो का खर्च था। बहुत लम्बा चौडा भी खच नही था। गुरमेल शाम को पी भी लेता था। अपनी समझ से सरदारी ठाठ-बाट से रहने लगा था। पर कभी-कभी दोनो जने एक साथ बेठकर बाते करते कि वह किसके लिए इतनी कमाई करते है उनके आगे को बाल बच्चा ता हे नही। यह जमीन जायदाद यू ही चली जाएगी एक दिन। उनका आगन सूना हे। श्यामा ओर राम घर मे रहते होते तो भी काइ आसरा था। राम अब साधुगिरी से वापस नहीं होगा। श्यामा फौज मे हे। क्या पता कब लोटे। फोजी का क्या पता वापस आएगा भी या नही। पाकिस्तान से युद्ध छिड गया तो क्या पता उसका फौजी होने के कारण उसकी सगाई नही होगी। फौज मे ना गया होता तो शायद कही अटक ही जाता। अब उसके विवाह का क्या भरोसा। लोग कहते हे कि फोजी लडक को लडकी दी तो ब्याह से पहले ही राड हो गइ समझो।

कभी कभी वह बाते करते कि किसी नाते रिश्तेदार से एक लडका ले आया जाए। लडके को पालकर उसका विवाह कर दगे। उनके भी बाल बच्चा हो गया ता घर चलता रहेगा। वह नाते रिश्तेदारा के यहा दृष्टि दोडाने लगे। गुरमल की कोई बहन नहा थी। जलकौर की दो बहने थीं। दूसरी के लडकिया ही लडकिया थी। व तो स्वय लडके के लिए तरस रह थ। हा भीखी वालो के दो लडके थ। उनसे गुरमेल की बेसे भी नही

वनता था। कोइ आना जाना भा नहा था। ना गुरमेल उनके यहा जाता था ना ही भीखी गाल नाना भाइयो मे स कोइ हमीरगढ आया था। श्यामा ने अवश्य भीखी वालो के साथ आना जाना कर लिया था। आर फिर क्या पता भीखी वाले अपना कोई लडका इनको देगे भी या नही।

जलकार की बहन उसस काफी बडी थी। उसकी तीन बेटिया थी। तीनो की शादिया हा चुका था। बडी लडकी के कई लडके थे। जलकोर की दृष्टि वहा पहुच गइ। वह भाजी का बटा लेने को राजी थी। पर गुरमेल का मन नहा हो रहा था। उसका मन था कि घर का मालिक उसके खून मे से कोइ हो। उसकी कोई बहन नही थी। ना कोई मोसा बुआ थी। भीखी वाले भी बेगाने खून के थ। भजने के ससुर। पर निकट की रिश्तदारी वही थी। भीखी वालो का पहले तो यकीन नही था कि वह लडका दे देगे पर यदि वे दे भी द ता जलकोर को पसद नही था। वह चाहती थी कि कोइ उसकी तरफ का हा जा इस घर का मालिक बने।

बात किसी भी निष्कष पर नही पहुच रही थी।

राम सुबह सुबह दूध की भिक्षा लेने गाव मे आता था। चालीस पचास घर थ। वह दो घटे मे हवा की तरह चक्कर लगा जाता था। साथ मे एक लडका और लाता था। मक्खन की भिक्षा भी लेते थे। एक डोल मे मक्खन रखवाते जाते। दो बाल्टी दूध हो जाता। एक दिन जलकौर गाव मे किसी काम से किसी के घर चक्कर लगाने गई। राम उससे टकरा गया। बाप की मृत्यु के बाद वह खासकर घर नही आया था। उधर की तरफ के घरो से भी भिक्षा नही लेता था। जलकौर उसका हाथ पकडकर जबरदस्ती घर ले आइ। वह नही नही करता रहा पर वह तो जैसे घसीट कर उसे घर ले आइ हो। भिक्षा के लिए दस एक घर शेष बचे थे। मक्खन का डोल ओर एक दूध से भरी बाल्टी देकर राम ने उस लडके को मठ मे भेज दिया था। वह स्वय चाची के पास बैठ गया। गुरमेल खेत मे गया हुआ था। चरवाहा और साझी भी घर मे नही थे। वे बतियाने लगे। चाची आसू गिराने लगी। श्यामा ता फौज मे है तू मठ मे जाकर बैठ गया भइ हमारा बताओ कौन है?

मेरा भी कौन है चाची। चाचा के बुरे स्वभाव ने हम घर से निकाला। नही तो सभी कुछ तो था।

तू अब घर लौट आ। मठ का पीछा छोड दे। ब्याह करवा ले। बच्चे पदा होगे ता घर आग चलेगा।

मेरा तो लौटना मुश्किल है। यदि श्यामा का कुछ हो जाए तो ठीक है।

क्यो तरा क्यो मुश्किल ह? तेरा चाचा अव वह नही रहा। तू आ जा।

मे ता यू ही ठीक हू चाची।

क्यो फसना नही चाहता जजाल मे?

बस यही समझ लो चाची। श्यामा का हमे कुछ करना चाहिए।

म ता कहता हू, हा नाए उसका। पर फा न का ब्याह मुश्किल ह भइ। म न नक मारत ह।

नहा चाची यह बात ता नही ह। फाजा कान म ब्याह नना नान। नना मान ह अपने पास।

जमीन ता ठीक ह भइ पर बहू कहा रहेगा? फाजा का ता नाल म एक बार छुट्टा मिलता ह। कभी वह भी नही मिलती। छुट्टा भा क्या धुकधुक लगा रहता ह।

बहू तुम्हारे पास रहेगी। चाचा फानिया क घर क्या हाल नता ह। अपन साथ ल जाते ह कहते है कि उनको क्वाटर मिलत ह।

अभी तक ता किसी न उसकी सगाइ क लिए पूछा हा नहा ह। नमक बाद कान आएगा अब।

आएगा क्यो नही चाची तुम चाचा का दूसरा विवाह करवा दा। राम मतलब पर उतर आया।

ला अब क्या इसकी उम्र ह ब्याह करने की। एक बार विवाह करवाकर क्या कर लिया कि दूसरा करवाकर करेगा। इसकी बात ता अब गइ दूर। जलकार न लम्बी सास भरी।

तब चाची।

मे तो आर कुछ ही सोचती हू। तेरा चाचा भी चिता करता ह। भइ किसी का लडका गोद ले लिया जाए और फिर क्या करे। तू मानता नही ह। श्यामा का विवाह होना नही।

राम की आखे चोडी हा गइ होठ फडकने लगे। उसने यह क्या सुन लिया था। वह कुछ नही बोला। जसे अनसुनी कर दा हो। उठ खडा हुआ। बाला अच्छा चाची। मै तो चलता हू। बाबा प्रतीक्षा कर रहे होगे। सोच रहे हागे पता नही कहा जाकर बेठ गया।

अच्छा भइ राम। चक्कर लगा जाया कर। इस गाव म आकर घर क पास से निकल जाना अच्छा नही लगता। चाचा तुझ पसद नही ह ना सही मर लिए आ जाया कर। आर भला कोन ह मेरा? जलकार ने फिर आखे भर ली।

अच्छा आया करूगा। राम दूध की बाल्टी उठाकर तज कदमो से घर स बाहर निकल गया।

एक दिन श्यामा की चिट्ठी आइ। यह चिट्ठी रामदास क नाम स मठ क पत से आइ थी। उसने यह लम्बी चिट्ठी किसी से लिखवाकर भेजी थी। चिट्ठा का साराश यह था कि चाचा अकेल दस किल्ले का उपज खाता ह। उन दानो भाइया का जमीन म हक ह। पहले ता कभी यह बोल नही थे कि चलो बापू हे। वह बामार रहता ह। उसका दवा दारू मे पैसे लगते ह। फिर उसकी रोटी की भी समस्या थी। अब बापू नहा ह ता चाचा अकेले क्यो पूरी जमीन का मालिक कहलाए? श्याम ने लिखा था कि राम फसल का

आधा लिया कर। यह भा लिखा था कि यदि वह आधा देने से मना करता ह या टाल मटोल करता ह ता जमान बटवा लेनी चाहिए।

राम न चिट्ठी पढा आर सभालकर रख ली। वह कइ दिनो तक साचता रहा कि क्या किया जाए। श्यामा की सभी बाते सही थीं। पर राम दूर की साचता था। उसने स्पष्ट लिखा कि चाचा चाची ता किसी लडके को गाद लेने की फिराक म है। यदि उन्होने ऐसा कर लिया ता बहुत खराब बात हो जाएगी। हमे चाचा चाची के साथ मीठा बनकर रहना चाहिए। जब चाचा चाची जाएगे तब पूरी दसो किल्ले अपनी ही होगा। यदि अभी आधी फसल के लिए कहा या आधी जमीन हमने बटवा ली ता वह अपने वाले पाच किल्ले इधर उधर कर देगे। जिसको चाहे दे हमारा उस पर काइ जोर नही रहेगा।

श्याम ने लोटती डा से उत्तर दिया। वह राम की बात मान गया था। उसे उम्मीद थी कि एक दिन उसका विवाह अवश्य होगा। विवाह होगा तो बच्चे भी हाग। उसके बच्चे दस किल्ले के मालिक बन जाएगे। यदि चाचा चाची पाच किल्ले लकर बठ गए तो यह जमीन दूसरो के हाथो मे चली जाएगी। किसी के भी हाथ जाए उनके खानदान मे तो रहेगी नही। उसके राम को इसके लिए शावाशी लिखकर भेजी। लिखा कि भाइ तुम होशियार हो। आयु मे चाहे छोटा। सही पर अक्ल मे बडा हे। फिर भी पढा लिखा हे और अब विद्वान भी बन गया है क्योकि साधु सतो क साथ रहता हे।

दोनो भाइयो मे एक दो बार चिट्ठी पत्री ओर हुई थी। राम अब नित्य ही सुबह घर आता। अपने घर से भी मक्खन और दूध ले जाता। उनके घर की ओर जिन घरो को इतराज था कि मठ वाले उनके यहा से दूध क्यो नही ले जाते वह उनके घर भी दूध लन जाने लग गया। भिक्षा लेने आने पर वह अपने घर रुककर जाता। किसी न किसी बहाने चाची का कुशल-मगल पूछ जाता। चाचा स भी बात कर लेता। कोइ बात न होती तब भी बोल लेता और नही तो मोसम की ही बात करने लग जाता।

गुरमेल ओर जलकोर ने रिश्तेदारी मे से कोइ बालक गोद लेने का विचार त्याग दिया। उनको जब यह समझ मे आया कि बालक गोद लेने पर श्यामा ओर राम तुरत अपनी आधी जमीन बटवा लेगे ता उनके कान खडे हो गए। आखो के सामने से धुध छट गइ। दूसरे की सतान गोद लेने स उन्ह क्या मिलेगा। उसका गू मूत उठाएगे। क्या पता बडा होकर वह कैसा निकले। गुरमेल कहता अपने भतीजे जब बस मे नही रहे तो बेगाना कोइ उनका अपना कहा बन सकता है। वह मन मे कहता भतीजे भी तो उसके अपने वटे थ। रह गए बेगानो की तरह। अब वह दस किल्ले की पैदावार अकेले खाते ह। हाथ खुला रहता ह। मजे मे ह। सताप ओर चरवाहा भी तो कितनी कमाइ करते हे। फिर पाच किल्ले मे कोइ साझी भी नही मिलता।

दोना तरफ के लोग अपना अपनी सोच रहे थे। दोनो ही एक दूसरे के बहुत करीब

हा गए। जस कि दोना तरफ के लोगो के मना म भीतर के अतर बहुन स्पष्ट हा गए थे। श्यामा अब गुरमेल चाचा को सीधे चिट्ठी लिखन लगा था। राम का अलग स चिट्ठा लिखता था। उस दूसरी बाते लिखता था चाचा को दूसरी।

8

अगली छुट्टिया म श्याम गाव आया तो उसकी वही काली वाली बडी सदूक कपडा स भरी हुइ था। छ बोतले रम थी। आध कपडे उसके थे ओर आध दूसरा क लिए लाया था—नए नए। कधे पर एयरबग था। उसमे भी छोटा मोटा सामान भरा हुआ था। सदूक वह बुढलाडे से मजदूर के सिर पर रखवाकर लाया था। फोजी वर्दी पहन था। वह जब गाडी से उतरा था ता प्लेट फाम की बेच पर ही अपना सामान उसन रख लिया था। सुबह के नौ बजे का समय था। पहले उसने रहडी वाले से एक कप चाय पा। फिर नल से मुह हाथ धा लिया। केश काढे ओर दाढी बाध ली। एयरबग से आइना निकालकर पगडी फिर से बाधी। मूछो मे बल दिया। आखो मे गहराइ कम थी। गाडी के लम्ब सफर ने उसे बहुत थका दिया था। एयरबेग मे से रम का पउआ निकालकर प्लास्टिक के गिलास मे एक पैग लेकर नल का पानी मिलाया और दो घूट पी ली। शराब तज थी। भीतर चीरती हुई चली गइ। उसके एयरबग मे नमकीन पकौडियो का लिफाफा भी था। शेष बची शराब उसन गले से नीचे उतारी पकोडियॉ खाकर मुह का स्वाद बदल लिया। माघ फागुन की कडाके की सर्दी थी। दूसरा पेग भी उसने तभी पी लिया। इस बार शराब कडवी नही लगी। पकौडिया और स्वादिष्ट लगी। वह बेच पर ही बेठ गया। बोतल का कार्क ठीक से बदकरके एयर बेग मे रख ली। गिलास भी धोकर रख लिया। पकाडिया का लिफाफा खाली करके बेच के पीछे पटक दिया। नशा चढने लग गया। उस अपनी टागे हल्की-हल्की लग रही थी। पैरो मे फुर्ती भरती जा रही थी। कधो पर से थकावट पता नही कहा उड गई थी। धूप पीली पीली दिखने लगी। प्लेटफाम पर खडे वृक्षो के पत्ते ओर भी हरे हरे लग रहे थे। उसका मन किया वह पहले भीखी जाए। आज रात काटकर कल हमीरगढ आ जाएगा। वह भीखी जाने की योजना बनाने लगा। बस ओर ठेले उसक लिए बहुत धीमी रफ्तार वाले साधन थे। वह तो किसी पक्षी की भाति उडकर भीखी पहुच जाना चाहता था। बठिडे की ओर से जब गाडी आई थी तब प्लेटफाम पर कितनी गहमागहमी थी। अनेको लोग गाडी पर चढे थे ओर अनको उतरे थे। रेहडी वाले जोर-जोर से चिल्ला रहे थ। लोगो की भीड का रेला था। अब प्लेटफार्म पर एक भी आदमी कही चलता फिरता दिखाइ नही पड रहा था। सब रेहडी वाले कभी के जा चुक थे। अब तो केवल बेच पर अकला बेठा वह था या भाभी तेजो का हसीन तसव्वर।

ताला लगाकर सदूक उसने स्टेशन मास्टर के कमर म रख दी और एयरबेग कधे

आधा लिया कर। यह भा लिखा था कि यदि वह आधा देने से मना करता ह या टाल मटोल करता ह ता जमान बटवा लेनी चाहिए।

राम न चिट्ठी पढी आर सभालकर रख ली। वह कइ दिनो तक साचता रहा कि क्या किया जाए। श्यामा की सभी बात सही था। पर राम दूर की साचता था। उसने स्पष्ट लिखा कि चाचा चाची ता किसी लडके को गाद लेने की फिराक मे ह। यदि उन्होने ऐसा कर लिया ता बहुत खराब बात हो जाएगी। हमे चाचा चाची क साथ मीठा बनकर रहना चाहिए। जब चाचा चाची जाएगे तब पूरी दसो किल्ले अपनी ही होगी। यदि अभी आधी फसल के लिए कहा या आधी जमीन हमने बटवा ली तो वह अपने वाले पाच किल्ले इधर उधर कर देगे। जिसको चाहे दे हमारा उस पर कोइ जोर नही रहेगा।

श्याम ने लौटती डा से उत्तर दिया। वह राम की बात मान गया था। उसे उम्मीद थी कि एक दिन उसका विवाह अवश्य होगा। विवाह होगा ता बच्चे भी हाग। उसके बच्च दस किल्ले के मालिक बन जाएगे। यदि चाचा चाची पाच किल्ले लकर बेठ गए तो यह जमीन दूसरो के हाथो मे चली जाएगी। किसी के भी हाथ जाए उनके खानदान मे तो रहेगी नही। उसके राम को इसके लिए शावाशी लिखकर भेजी। लिखा कि भाई तुम होशियार हो। आयु मे चाहे छोटा। सही पर अक्ल मे बडा हे। फिर भी पढा लिखा हे ओर अब विद्वान भी बन गया है क्योकि साधु सतो के साथ रहता हे।

दोनो भाइयो मे एक दो बार चिट्ठी पत्री और हुई थी। राम अब नित्य ही सुबह घर आता। अपने घर से भी मक्खन ओर दूध ले जाता। उनके घर की ओर जिन घरो को इतराज था कि मठ वाले उनके यहा से दूध क्यो नही ले जाते वह उनके घर भी दूध लन जाने लग गया। भिक्षा लेने आने पर वह अपने घर रुककर जाता। किसी न किसी बहाने चाची का कुशल-मगल पूछ जाता। चाचा से भी बात कर लेता। कोइ बात न होती तब भी बोल लेता और नही तो मोसम की ही बात करने लग जाता।

गुरमल और जलकोर ने रिश्तदारी मे से कोई बालक गोद लेने का विचार त्याग दिया। उनका जब यह समझ म आया कि बालक गोद लेने पर श्यामा आर राम तुरत अपनी आधी जमीन बटवा लेगे तो उनके कान खडे हो गए। आखो के सामने से धुध छट गइ। दूसरे की सतान गोद लेने से उन्ह क्या मिलेगा। उसका गू मूत उठाएगे। क्या पता बडा हाकर वह कैसा निकले। गुरमेल कहता अपने भतीजे जब बस मे नही रहे तो बेगाना काइ उनका अपना कहा बन सकता हे। वह मन मे कहता भतीजे भी ता उसके अपने बेटे थे। वह गए बेगानो की तरह। अब वह दस किल्ले की पैदावार अकेले खाते ह। हाथ खुला रहता ह। मजे म ह। सतोष और चरवाहा भी तो कितनी कमाइ करते हे। फिर पाच किल्ले मे काइ साझी भी नही मिलता।

दोना तरफ के लोग अपनी अपनी सोच रहे थे। दोनो ही एक दूसरे के बहुत करीब

हा गए। जेस कि दोनो तरफ के लोगो के मनो के भातर के अतर बहुत स्पष्ट हा गए थे। श्यामा अब गुरमेल चाचा को सीधे चिट्ठी लिखने लगा था। राम का अलग से चिट्ठा लिखता था। उसे दूसरी बाते लिखता था चाचा को दूसरी।

8

अगली छुट्टियो म श्याम गाव आया तो उसका वही काला वाली बटी सदूक कपडा स भरी हुइ थी। छ बोतले रम थी। आध कपडे उसके थे आर आध दूसरो क लिए लाया था—नए नए। कधे पर एयरबग था। उसमे भी छोटा-मोटा सामान भरा हुआ था। सदूक वह बुढलाडे से मजदूर के सिर पर रखवाकर लाया था। फौजी वर्दी पहने था। वह जब गाडी स उतरा था तो प्लेट फाम की बेच पर ही अपना सामान उसने रख लिया था। सुबह के नौ बजे का समय था। पहले उसने रहडी वाले से एक कप चाय पा। फिर नल से मुह हाथ धा लिया। केश काढे ओर दाढी बाध ली। एयरबग से आइना निकालकर पगडी फिर से बाधी। मूछो मे बल दिया। आखो मे गहराइ कम थी। गाडी के लम्ब सफर ने उसे बहुत थका दिया था। एयरबेग मे से रम का पउआ निकालकर प्लास्टिक क गिलास मे एक पैग लकर नल का पानी मिलाया आर दो घूट पी ली। शराब तज थी। भीतर चीरती हुई चली गइ। उसक एयरबग मे नमकीन पकोडियो का लिफाफा भी था। शेष बची शराब उसन गले स नीचे उतारी पकोडियाँ खाकर मुह का स्वाद बदल लिया। माघ फागुन की कडाके की सर्दी थी। दूसरा पेग भी उसने तभी पी लिया। इस बार शराब कडवी नही लगी। पकौडिया ओर स्वादिष्ट लगी। वह बेच पर ही बठ गया। बोतल का कार्क ठीक स बदकरके एयर बेग मे रख ली। गिलास भी धोकर रख लिया। पकोडिया का लिफाफा खाली करके बेच के पीछे पटक दिया। नशा चढने लग गया। उसे अपनी टागे हल्की हल्की लग रही थी। पैरो मे फुर्ती भरती जा रही थी। कधो पर से थकावट पता नही कहा उड गई थी। धूप पीली पीली दिखने लगी। प्लेटफाम पर खडे वृक्षो क पत्ते ओर भी हरे हरे लग रहे थे। उसका मन किया वह पहले भीखी जाए। आज रात काटकर कल हमीरगढ आ जाएगा। वह भीखी जाने की योजना बनाने लगा। बस आर ठेले उसक लिए बहुत धीमी रफ्तार वाले साधन थे। वह तो किसी पक्षी की भाति उडकर भीखी पहुच जाना चाहता था। बठिडे की ओर से जब गाडी आई थी तब प्लेटफाम पर कितनी गहमागहमी थी। अनेको लोग गाडी पर चढे थे ओर अनेको उतरे थे। रहडी वाले जोर-जोर से चिल्ला रहे थ। लोगा की भीड का रेला था। अब प्लेटफाम पर एक भी आदमी कही चलता फिरता दिखाइ नही पड रहा था। सब रहडी वाले कभी के जा चुक थे। अब ता केवल बेच पर अकेला बेठा वह था या भाभी तेजो का हसीन तसव्वर।

ताला लगाकर सदूक उसने स्टेशन मास्टर क कमरे म रख दी और एयरबग कधे

पर लटकाकर मडा का आर चला गया। आदमा ढूढा जा सदक उठाकर हमारगढ तक ल ना सके। भीखा जान का इरादा उसन बदल दिया था। साचा हागा वह इतना वडा सदूक क लिए लिए कहा कहा घूमता फिरेगा। गाव म दा रात रुककर फिर भीखी आ जाएगा। एसा भा कान सा जल्दी ह। भाखा ता जाना ही जाना हे। उसन सोचा यह भी अच्छा नही लगता कि आदमी आए और अपन घर जाने की अपक्षा पहले कही आर चला जाए। चाचा क्या कहगी। क्या कहेगा चाचा। राम भी क्या साचेगा। उस पहले अपने घर जाना चाहिए।

स्टशन स चलेत समय उसने अपने एयरबेग मे स बोतल ओर गिलास निकाला आर नल स पाना लकर एक पग पी लिया। एक पेग मजदूर को भी दे दिया। मजदूर खुश हो गया लम्बे पर मारता हुआ सदूक सिर पर रखे चलने लगा। प्लेटफाम पर ही मजदूर न सदूक पर एयरबग भी रखवा लिया। श्यामा रख नही रहा था। कह रहा था नीचे न गिरा दना कहा। गड्ढे गुड्ढे देख कर चलो।

पीठ पर ऊपर चढत सूय की तेज धूप बदन मे चिनचिनाहट पेदा करने लगी था। श्याम आगे आगे ओर मजदूर पीछे पीछे था। वे तेजी से चले जा रहे थे। खेतो मे गहू की बालिया चुपचाप आकाश की ओर देख रही थी। कही कोइ बादल नही था। कही कोइ आवाज भी नही हो रही थी। दो लाग हमीरगढ से पैदल आते हुए दिखे। दोनो ने श्यामा का पहचाना नही। उसने उनकी ओर गौर से नही देखा था। किसी दूसरी तरफ के हाग। या क्या पता वह हमीरगढ के ही थे या अन्य गाव के थ। वे दस मिनट तक चुपचाप चलत रहे। फिर श्याम उससे बाते करने लगा। वह किस गाव का हे? कोन हे? सभी बाते पूछकर श्याम फिर उसे अपन बारे मे बताने लगा। मजदूर उसका बात का दिलचस्पी से हुकारा भरता रहा। उसके हसने पर हस पडता उसके गम्भीर होने पर गम्भीर हो जाता। वह पलटकर कोइ प्रश्न नही करता था। लगता था जेसे फोजी अपनी बात स्वय को ही सुना रहा हो। श्याम ने बताया कि उसकी इतनी तन्खाह हे। पूरी तन्खाह पशन की तरह हे। खाना—पीना सब सरकार का आर वर्दी भी सरकारी ही है। उसन यह भी बताया कि व दो भाइ हे। छाटा भाइ साधु हो गया हे। अब दस किल्ला का वह अकला मालिक ह। चाचा चाची हं उनके कोइ सतान नही हे। यह कि वह अभी अन ब्याहा हे। उसन यह सब इस लिए बता दिया कि मजदूर शायद किसी जाट से उसकी बात बता द। पता ही नही लगा बाते करते करत उन्ह कब गाव दिखाइ पडने लग गया। काकर बर आर शीशम के वृक्षा स वह पता नहा कब पार हो गए आर फिर गाव तो सामने ही था।

घर ल जाकर श्याम ने मजदूर को एक पेग आर दिया खुद भी लिया और पेसे भी दिए। राटी पक रही थी। सरसो का साग आर मक्के की रोटी थी। मजदूर ने रोटी भी खा ली आर चला गया। जाते समय वह श्यामा की आर मोह ओर हसरत भार आखो से दख गया था।

श्याम पहल राटा खा ल। भूख लगा हागा। फिर शाम का नहा धा लना। पानी गम कर दूगा। जलकार ने स्नेह स कहा।

सदूक आर एयरबग भीतर सबात म रखकर पहल उसन पर्नी उतारा। साफ कपड पहन। चाची का बात मानकर राटी खा ली। मट्ठा जी भरकर पिया। आगन का धूप म खाट डालकर लट गया। वह थका हुआ था। लटते ही सो गया। उसक मुह पर मक्खिया बठती तो वह बार बार हाथ मार दता। पर मक्खिया तग करन स बाज नहा आ रहा था। वह अपनी आखे पर कोहनी रखकर लटता ताकि चेहरा ढक जाए आर मक्खिया दूर हा जाए। पर नीद गहरी हाने पर कोहनी हट जाती थी आर मक्खिया मुह पर फिर आ बठती था। जलकौर न इस प्रकार लडके को बेचन हाते दखा ता एक पतली चादर लाकर उसे उढा दी। ऊपर सिर से पर के अगूठे तक ढक दिए। अब वह आराम से पटा हुआ था।

आस पडोस की आरते घर मे आती तो पूछती अरी जलकार आगन म कान लेटा है? गुरमेल सिह है? बीमार हे क्या?

वह श्यामा का नाम लेती तो वे कहने लगती अच्छा हे शुक्र ह। छुट्टी पर आया होगा। मिलजुल लेगा सभी भाइ बहनो से। खिला पिला दे दा दिन घी—दूध। फाजिया को तो मुश्किल से छुट्टी मिलती ह।

पिछले पहर की चाय का समय था। जलकोर न पानी गम करने का भगोना चूल्ह पर रख दिया था। कडो की आग थी।

श्याम उठा तो इधर उधर आख मलकर देखने लगा। दीवार की परछाइया ढल रही थी। उसकी खाट के पताने की छाव उसकी ओर बढती आ रहा थी। उसे उठा देखकर चाची कोई काम धधा छाडकर उसके पास आइ ओर पूछने लगी सो लिए भइ।

हा चाची! खूब नीद आई। उसने हाथ ऊपर उठाकर अगडाइ ली।

चाय पियोगे या दूध ला दू हडिया मे स? हडिया का दूध! वाह चाय का क्या हे चाची। चाय स तो रोत कलेजा जलाते हे। दूध ही ला दो। यह हॅडिया का लाल-लाल सा दूध पजाब के अलावा ओर कही नही मिलता सारी दुनिया म कही नही।

नहाने से पहले उसन सदूक खोला। चाची का सूट का कपडा आर गम लाड निकालकर दी। चाचा के लिए पतली मलमल की पगडी कुर्ते का कपडा चारखान की चादर और बडी। यह बडी पहनन से पौष माघ का जाडा दूर रहता था। चाची ने चुपचाप सब सामान ले लिया ओर श्याम को मीठी मीठी आशीषे दने लगी। कह रही थी म तो ईश्वर से हाथ जोडकर प्राथना करती हू कि तुझे इतनी ही सुदर बहू दे।

गुरमेल खत से घास का गट्ठर लेकर आया तो श्याम का आगन म बठा दखकर खडा का खडा रह गया। गट्ठर उसने चारा काटने की मशीन क पास पटक दिया। श्यामा ने खाट से उठकर जार से नमस्ते किया। दोना न हाथ मिलाया आर एक दूसर का कुशलता पूछन लगे। खाट पर बैठकर उन्होने और भी बात की।

जलकार बाला श्याम दिन थोडा ही रह गया है। बात फिर कर लना। पहले नहा ल। आजकल क दिना का कोइ भरोसा नही यू ही डोलते फिरत म खत्म हा जाता है। उसने बाल्टा म भगाना उलट दिया। एक बाल्टी ठडे पानी की भी भरकर पास मे रख दा। लाइफ बुआए साबुन ओर सरसा का तेल कटारा म भरके रख दिया। तालिया वह अपना रखता था। फाज मे जाकर इतनी समझ तो उसे आ गइ थी। वह कश सहित नहा लिया। चाची ने चाय बनाइ आर व चाचा भतीजा पास पास बठकर चाय पीने लगे। चाची भी अपनी कटोरी लकर उनके पास आ बेठी। वह खुश थी कि इस बार की छुट्टी म वह ठीक ढग स बात कर रहे ह। दोनो मे से किसी के माथे पर बल नही थे। श्याम इस बार दा साल बाद घर आया था।

शाम का साथी भी आ गया। गुरमेल ने पेसे देकर उससे मजबी के यहा से मुगा मगवा लिया। घर लाकर सतोष ने ही मुगा काटा ओर साफ कर लिया। ओर फिर गुरमेल न श्याम के साथ मिलकर उसक टुकड कर लिए। चूल्हे पर मास पकने की गध घर मे फलन लगी तो श्याम ने नइ बातल खोल ली। चाचा भजीजा वराडे मे बठकर पीने लगे। वह सतोष को भी कटोरी मे दे देते।

श्याम जब सुबह आया था तभी जलकोर ने गाव मे जाते एक आदमी के हाथ मठ म राम के पास खबर भेज दी थी कि वह आ जाए। राम बाबा के काम से कही गया हागा या मठ के कामो से ही उसे फुर्सत नही मिली होगी इसलिए वह खूब दिन छिप जाने पर ही घर आया। उन्हे पीते दखकर राम ने सिर के दुपट्टे का कोना नाक के आगे लगा लिया। बाला कर दी शुरू?

आ तू भी ले ले। गुरमेल ने कहा

बस चाचा पियो। यह चीज तुम्हे ही मुबारक हो। राम ने श्याम से हाथ मिलाया आर दूर हटकर की दूसरी खाट पर बैठ गया।

किसी को क्या पता लगेगा। सतोष तो अपने घर का ही आदमी हे। गुरमेल ने शीशे का गिलास ओर बोतल उठाइ।

नही यह हो ही नही सकता। यह राक्षसो की चीज है। हमारे काम की नही है।

ता हम राक्षस हो गए तू देवता बन गया। गुरमेल ने पेग बनाया और उसम पानी मिलाकर श्याम को पकडा दिया। बोला अच्छा भई रामदास हम तो राक्षस ही ठीक हे। तू देवता सही भई।

सभी खिलखिलाकर हसने लग। राम की नाक पर अभी भी कपडा लगा था। गुरमेल ने सतोष की प्याली मे थोडी सी उडेली और फिर स्वय पी ली। राम के आने से श्याम की अध बीच रह गइ बात पूरी करने के लिए गुरमेल ने हुकारा भरा हा भइ फिर क्या कहा तेरे साहब ने?

अच्छा हा साहब खुश हो गया। पूछने लगा तुम कितने दिन की छुट्टी मागता? मेन कहा दो महीने की कर दो जी। पूछने लगा तुम्हारी शादी हो गई? मेने कहा जी

नहा। बाला फिर इतनी छुट्टी तुमारे किए काम का॰ मन कहा घर म चाचा चाचा ह भाइ ह ओर नाते रिश्तेदारो के यहा भी जाना पडता ह। वाला जाआ एक महाना काफा ह। और फिर मर कधे पर छडी मारत हुए कहा इस बार शादी कराकर लाटना।

शादी के नाम पर सभी चुप हो गए। हसा कोइ नहा। घर म विवाह का ममला गम्भार था। किसी के भी बस की बात नहा थी। चाचा चाची किसी जाट का लटका जबरदस्ती कहा से ले आते?

ओर फिर सतोष ने गेहू की बात छेड दी। वह इस बार की अच्छी फसल क लिए उत्साहित हाकर बता रहा था। कह रहा था अब की तो बहुत अच्छी फसल लगा ह। इतनी अच्छी फसल पहले कभी नही हुई। अगर अच्छा भाव लग गया तो वार न्यार हा जाएगे।

जब श्याम छत की ओर देख रहा था तब राम का मुह दूसरा आर था तो गुरमेल न सतोष को आख मारी और सिर हिलाया। सतोष कई घाटो का पाना पिए था। समझ गया। फिर उसने अच्छी फसल की बात नही की।

श्याम ने फौज की नइ कहानी छेड दी। जलकौर मीट से बटलोइ भर लाइ उसम दो चम्मच भी थे। बोली आज तो भई क्या बात है पूरा परिवार एक साथ बठा हे। कितना अच्छा लग रहा हे।

और क्या नही तो हम दोनो तो बुत बने बेठे रहते है। तू भर्ती हा गया ओर यह मठ मे चला गया। हम तो अकेले रह गए। गुरमेल श्याम की ओर घूमकर बोला।

नही चाचा हम कहा जाएगे। यही तो हे तुम्हारे पास। यह तो नित्य ही घर आ जाता है। छुट्टी से आकर तुम्हारे पास ही तो रहूगा। श्याम ने कहा।

यह भी कोन-सा नित्य आता है। मेरे सामने तो आया नही कभी। अपना चाची के पास आता होगा। गुरमेल धीरे से हसा।

वह वहो खडी थी। बोली अरे नही राम तो रोज मुझसे मिलकर जाता हे। यू हा कह दू। इसका चाचा कभी खेत मे गया होता है उस समय कभी घर मे हाता है।

राम ने अपने मुह पर से कपडा अलग नही हटाया था। उठ खडा हुआ। बोला तुम तो बहुत कुछ बनाए बैठे हो। मै चलता हू। अच्छा श्याम सुबह मठ म आओगे।

हा जरूर आऊगा। सुबह जगल पानी भी उधर ही जाऊगा। तुम्हारे साथ ही चाय पियूगा।

राम तू अब कहा जाएगा। रोटी पका रही हू, खाकर जाना। सुबह का साग रखा हे। इनका वाला खाना अगर परहेज है तो मत खाना।

कलछी तो चाची वही इस्तेमाल करेगी। राम ने कहा ता सभी हस पडे।

वह रुका नही।

सुबह तडके उठकर श्याम झिडी की ओर खेतो मे ही जगल पानी के लिए गया। वही कही से कीकर की दातून तोड ली। मठ के नल पर दातून कुल्ला करके वह लगर

म चला गया। राम न उसके लिए दूध म चाय पत्ती उबाल दी। एक मुट्ठी शक्कर डाल दी। दो चम्मच देसी घी भी। श्याम हस रहा था लगता अबकी छुट्टिया मे वजन बढाकर जाना होगा। घर पर भी दूध घी मठ म भी दूध घी। चाची बहुत खिलाती पिलाती ह।

क्या खिलाती पिलाती ह। सारी जमीन के अकेले मालिक बने बैठे ह। कहा स आ गए मुर्ग?

अरे जब ये नही रहेगे तो सब अपनी हो जाएगी मूख। चुप रह। श्याम ने इधर उधर देखकर उत्तर दिया।

वह तो मै समझता हू श्याम। पर क्या पता साले कब तक बैठे रहेगे। अगर तेरा विवाह हो जाए तब बात बने। बहू चाची के पास छोड दे। कोइ बाल बच्चा हो जाए।

अब तो नही सुनी कोइ बात कही से कोइ बालक लाने की?

नही। अब तो चाची चुप रहती है। कभी कभी तेरे ब्याह की बात छेड दती हे।

क्या करे यार कोई साला जाट आता ही नही। फोजी समझकर मुझसे छिटकते हे। फिर बोला राम यार तू करवा ल विवाह। तू तो घर पर ही रहता है। तेरी सगाइ हो जाएगी।

मेरी केसे हो जाएगी। यह देख। उसने अपनी तीन उगली वाला हाथ काली कमली से बाहर निकालते हुए कहा।

फिर वे दूसरी बाते करने लगे। राम पूछ रहा था कि वह कितने दिन की छुट्टी पर आया है। आजकल कहा है? भीखी कब जाएगा?

श्याम ने बताया कि वह आज रोटी खाकर दोपहार को ही भीखी जा रहा है। चार पाच दिन वहा रहेगा। फिर उसने बताया कि वह उसके लिए एक मोटा भारी कम्बल ले आया हे। सदूक मे रखा हे। भीखी से लौटकर उसे देगा। यह भी बताया कि वह चाचा और चाची को क्या क्या लाया हे। यह नही बताया कि भीखी वालो के लिए क्या लाया है। यह उसने चाची को भी नही बताया था।

9

मीट तो रात का बचा हुआ नही था। पतीला भी चाट डाला था उन्होने कल सुबह का साग था। डेरे पर से आकर श्याम नहा लिया। सादे कपडे पहन लिए। अब उसके सादे कपडे भी गम पैंट ओर गम कमीज थी। गम कमीज पर जर्सी पहनने की जरूरत नही थी। सूती कपड की कमीज होती तो ऊपर से जर्सी पहनता। सफेद मोजो के साथ काले बूट पहनता। बलगाल पटियालेशाही पगडा बाधता। दाढी मे धागा बाधकर फिक्सर स चिपका लेता। पूरा अपटूडेट युवक दिखता था। फोज मे जाकर उसने शीघ्र ही गुरमुखी सीख ली थी और रोमन अक्षर भी लिख लेता था। उसकी आम बोलचाल मे कइ अग्रेजी

क शब्द आ जाते थ। पिछला चिट्ठी उसने गुरमुखी लिपि म स्वय लिखा था। कुछ शब्द जाड जाडकर चाहे व गलत ही थे पर राम न चिट्ठी का अथ समय लिया था। इतना हा बहुत था।

उसन भीखी जान का नाम लिया तो नलकार ने साग गम करन क लिए चूल्ह पर रख दिया और मक्की का आटा गूथने लगी। जब वह बाहर चातरे पर आटा गूथ रहा था ता भातर सबात म श्याम ने अपना एयरबेग खाली किया और ट्रक म स भाखी ल जाने वाले कपडे निकालकर एयरबग मे रख लिए। एयरबैग का छाटा माटा सामान सदूक म रख दिया। एयरबग म दा बातलं भी रख ली। फुर्ती से इधर उधर देखकर एयरबग का जिप खाची आर उसम छोटा सा ताला लगा दिया। रोटी खाने क बाद ही वह तेयार हुआ। दाढी बाधने-कसन का अच्छा खासा काम था। एयरबैग कधे पर लटकाकर जब वह जाने लगा तब तक सूरज काफी ऊपर चढ आया था। आगन मे पल पल मे धूप बढ रही थी।

ऐसा लग रहा था जैसे उसकी रात को पी गइ शराब का नशा अभी तक नही उतरा था एक नशा भीखी जाने का था। वह मुह से सीटी बजाता हुआ बुढलाडे के बस स्टेड तक जल्दी ही पहुच गया। एयरबैग के बोझ से कधा नही थका। उन दिना बुढलाडे से भीखी कुछ ही बसे जाती थी। उसे घटा डेढ घटा बस अड्ड पर ही प्रतीक्षा करनी पडी। यह समय बहुत उबाऊ था। उसने दो बार ठेले वाले से चाय पी था। मूगफलियो के छिलको का ढेर लग गया। कोई परिचित भी नही दिखाइ दिया कि जिसके साथ फालतू की बाते करके समय काटता। उसके हाथ पर घडी बधी देखकर समय पूछने वाले बहुत थे। अत मे एक बस आइ। उतरने वालो की अपेक्षा चढने वाले ज्यादा जल्दी म थे।

भीखी पहुचकर उसने बस अड्डे से बकरे का मीट ले लिया। वह मीट लेने के लिए ही इधर अड्डे पर आया था। नही तो डॉ आत्माराम के अस्पताल जाने वाले रास्ते पर भी कुछ सवारिया उतरी थी। वहा से ननिहाल बहुत पास था।

तेजो किसी काम से घर के बाहर दरवाजे पर खडी थी। उसने श्याम को दूर से ही आते देखा तो पहचान लिया। उसने दोनो बडी लडकिया से कहा जाओ री दाड के तुम्हरा चाचा आता लग रहा है हमीरगढ वाला। जाकर उसका झोला ले लो।

लडकिया तेजी से वहा पहुच गइ। पर उसने ना तो उनको एयरबेग पकडाया जो भारी था और न हाथ मे लटका लिफाफा। कहीं गिरा न दे लिफाफा मिट्टी लगकर किसकिसा जाएगा। छोटी लडकी टागो मे चिपट रही थी। बडी ने उसका खाली हाथ अपने दोना हाथो मे पकड लिया और उसके साथ साथ चलने लगी। घर मे प्रवेश करते ही श्याम ने जोर से कहा सरदारनी नमस्कार।

सभलकर भीतर आ जाओ पहले। आ जाओ सासरीकाल। तजो फूट सी खिला खडा थी। श्याम के हाथ स उसने लिफाफा ले लिया और पूछा अर यह क्या ले आए?

रोटी खाएगे। मक्खियो से ढककर रख दो ओर फिर वना लना। एयरबग उसने खाट के पाएताने पर रख लिया और बेठ गया।

मीतो अपने चाचा का पानी दे ला कर। तेजो ने बडी लडकी से कहा।

सूरज पश्चिम की ओर ढल गया था। मरी मरी सी धूप थी। फतह सिह और जोरा खेत से नही लौटे थे। छोटा बेटा धूप न सो रहा था। बडा लडका और सबस छोटा लडकी पता नही कहा थे। शायद कही खेलने गए हुए थे। दोनो बडी लडकिया चाचा के चाव मे इधर उधर भागी भागी डोल रही थी। तेजो ने पिछले पहर की बची हुई चाय गिलास मे भर के चूल्हे के सामने रख दी थी। कडो की मद्धम मद्धम आग पर पानी की देगची थी। दोनो लोगो ने खेत से आकर हाथ मुह धोए थे। देगची उतार के तेजो ने श्याम के लिए चूल्हे पर ताजा चाय नाइ। गिलास उसके हाथ मे देकर स्वय बाटी मे जरा सी चाय ली और उसके सामने बैठ गई। गर्म गर्म चाय पीते हुए वह तेजो की ओर लगातार देखे जा रहा था। उसकी आखो मे गहराई उतर आई थी। तेजो की आखो मे काजल था। दातो मे ददासा आज दोपहर को ही उसने लगाया था। दात सफेद और चमकदार थे। होठो पर ददासे का हल्का जामुनी रग था। पाच बच्चो को जन्म देकर भी उसके गालो की हड्डिया उभरी हुई थी। हड्डियो पर मास भरा था। बाते करते करते शमाती थी। उसके गालो का मास फडकने लगता। पूछने लगी कैसे भूखो की तरह देखे जा रहे हो? आज कही रोटी नही खाई क्या?

वह बोला दो साल हो गए जो तुम्हारी रोटी खा गया था सो खा गया। फिर तो जरा भी कही नही मिली।

अच्छा आ गए फिर। पेट भरकर जाना। निकल लेना मन भर की।

करनैल गाव मे ही कही गया हुआ था। आज उसका मन निढाल था। सुबह से ही तबियत ऐसी ही थी खासी और जुकाम भी था। तेजो ने थोडी देर पहले ही दोनो बडी बेटियो को भेजा था कहा था जाओ री तुम्हारा बापू साधू बनिए की दुकान पर बैठे होगे। बुला लाओ। कहना घर आ जाओ। हमीरगढ वाले चाचा आए है।

श्याम ने चाय का गिलास खाट के पाए के पास रख दिया और खडा हो गया। भर्राई सी आवाज मे बोला चाय बहुत गर्म है फिर पिएगे।

सोते हुए लडके की ओर गौर से दखकर तेजो बोली इतनी जल्दी भी ?

सबात से बाहर आकर उसने जब खाट के पाए से चाय का गिलास उठाया तो दोनो लडकिया करनैल को हाथ पकडे आगन मे आ रही थी मुस्कराती शर्माती शमाती।

दोनो ने हाथ मिलाया आर फिर आलिगन करके मिले। करनैल खाट पर ही उसके पास बैठकर उसका हालचाल पूछने लगा। श्याम ठडी चाय का ऐसे घूट भर रहा था जेसे गर्म हो और उसकी बातो का उत्तर देता जा रहा था। मीतो श्याम के सिरहाने की पाटी पर बैठी थी और उससे छोटी जीता सामने खडी थी जैसे श्याम की गोदी मे बेठने के लिए ताक रही हो। तेजो काफी दर के बाद सबात से बाहर निकली। वह करनल से लडन लगी। कहन लगी तुम भी कैसे आदमी हो, कब से निकले हुए हो घर नही आना चाहिए?

अपना बनावटी गुस्सा ठडा करक वह रसोइ म गइ आर लहसुन प्याज भार हरा मिच थाली मे रखकर करनेल को पकडा गइ। बोली प्याज महान महान काट दो लहसुन छील दो आर मिर्चे भी काट दो।

श्याम करनेल की मदद करने लगा। दोनो जने बाते भी किए जा रह थ। सब छील काटकर करनेल न थाली तेजो को थमाइ आर वे भूसे वाले कमरे मे जाकर बेठ गए। श्याम का यह पक्का अड्डा था। पिछली बार जब वह भीखी आया था तब भी उसका ठिकाना इसी कमरे मे था। वह अपना एयरबैग भूस वाले कमरे म ही ले आया। खाट पर बेठते ही उसने करनेल से कहा कि वह पानी का लोटा और दो गिलास ले आए।

वे दो दो पेग ल चुके थे। बकरे का मीट भुनने की सुगध उन तक पहुचने लगी। फतह सिह और जोरा भी आ चुके थे। पर वे चारा काटने का सभी काम निबटाकर पशुओ को चारा डालकर और हाथ पेर धोकर ही श्याम के पास आए थे। सन जैसी सफदे दाढी वाले फतह सिह को श्याम ने माथा टेका। उसने उसके कधे पर हाथ रखा ओर पास की दूसरी खाट पर बैठ गया। उसका हालचाल पूछने लगा। कहन लगा अबकी तो बहुत दिनो के बाद चक्कर मारा?

श्याम उसे पैग देने लगा तो उसने एक उगत शराब मुश्किल से डलवाइ ओर गिलास मे पानी भरकर पी गया। जोरा भीतर आया तो फतह सिह उठ खडा हुआ। बोला अच्छा सुबह करेंगे बाते।

श्याम उसे और पीने के लिए कहता रह गया पर वह तो वहा से बाहर जा चुका था। जोरे को श्याम ने भरकर पेग दिया। उसने एकदम पूरा गिलास गले के नीच उतार लिया। फिर वे बाते करने लगे। करनल उठकर मीट का पता करने चला गया था।

चूल्हे के सामने बेठी तेजो करनेल से लडने लगी तुम्हे जब बुखार है तो क्या झुलस रहे हो?

उसने अपना हाथ तजो के हाथ मे दकर कहा नही अब तो जरा भी नहा ह। ओर ना ही खासी जुकाम है साला। लगता हे जेसे कुछ हुआ ही नही था।

तब ठीक है। दूसर क्षण तेजो हस रही था। कटोरे म मीट की चार पाच कलछी डालकर उसने करनैल से कहा जाओ ले जाओ। जाते समय उसन यह भी पूछा रोटी कब लोगे?

करनल बोला बाद का बताएगे फौजी से पूछ के।

मीट का स्वाद पहले श्याम को चखाया गया। वह बोला ठीक हे। बढिया बना हे। गल गया है। फिर जोरा कटोरा लेकर काफी मीट खा गया। करनल बोला अरे पूरा कटोरा अकले तेरे लिए नही ह भल मानस। अब बस कर। ला दख कसा ह?

श्याम और करनल हसने लगे। जोरा अभी भी कटोरा नही छोड रहा था।

वह पूरे सात दिन तक भीखी मे रहा। वह दो बार आर अड्ड से मीट लेकर आया। नहा तो उन दिनो सरसो का साग ही मीट जेस बनता। तेजो एसा करारा साग

बनाती थी आर मक्का की हल्की फूल सी रोटिया कि खाए चल जाओ बस। पट भर नाता पर नियत नही भरती थी। दो बातले रम जो वह यहा लेकर आया था तीन दिन चली। फिर वह ठेके से नित्य बोतल ले आता। करनैल ओर श्याम पूरी पीते थे। जोरा भी दो पेग लगा जाता था। फतह सिह नही पीता था। शराब उसे अच्छी नही लगती थी। एक़ पग पाकर भी दूसरे दिन तग रहता था।

मीतो श्याम के बहुन पास पास रहती थी। उसका हर काम करती थी। बडी होने के कारण वह अन्य बच्चा से होशियार थी। वह बारह साल की थी। स्कूल भी जाती थी। बडी होने पर पढने बैठी थी। पढाइ म इतनी होशियार नही थी। एक साल फेल भी हो गइ थी। अब चोथी मे थी। चाचा चाचा करती रहती थी। श्याम के दाढी बाधने वाले कपडे धो दिया करती थी। बूटो मे पालिश कर देती थी। इन सात दिनो मे वह दो बार सिर से नहाया था और मीतो ने ही बाल सुखाए थे और उसके सिर मे गरी का तेल मसला था। कच्छा बनियाइन वह स्वय धोता था। दूसरे कपडे दो बार तेजो ने धोकर दिए थे। पूरे परिवार ने उसकी इतनी सेवा की जितनी वाकई छुट्टी पर आए सैनिक की होनी चाहिए। हमीरगढ जाने से एक दिन पहले उसने तेजो से कहा 'मीतो को तैयार कर दो इसको मै ले जाऊगा। हमीरगढ मे रहेगी चाची के पास। वही पढती रहेगी। वहा भी स्कूल है। साथ ही चाची से काम धधा सीख लेगी। खुलकर खाए पिएगी।

सुनकर मीतो खुश हो गई। चहकने लगी अहा जी चाचा के साथ जाऊगी। दूसरे बच्चे उसकी खुशी देखकर उदास थे। मुह लटकाए खडे थे। वे जल रहे थे कि अब अकेली मीतो ही चाचा से चीजे लिया करेगी। दोनो छोटी लडकियो ने रूआसा सा मुह बना लिया। सबसे छोटा बच्चा तो नासमझ था। वह लगभग चार साल का होगा।

दूसरे दिन श्याम मीतो को लेकर चलने लगा तो उसका एयरबैग खाली खाली था। जैसे उसमे कुछ हो ही नही। उसके अपने कपडे थे या मीतो के दो सूट। जिस दिन वह आया था डेढ किलो वजन की तो दो बोतले ही थी। तेजो का सूट और गर्म लोई थी। पाचो बच्चो के कपडे थे। तीनो भाइयो के लिए तीन जसिया थी। तेजो के कानो की बालिया तो वह अपने बटुए मे ही रखकर ल आया था। ये बालिया आधे तोले की थी।

लडकी को देखकर जलकौर खुश हो गइ। उनके घर मे अपनो जैसा यह पहला बच्चा था। मीतो लम्बे कद की सुदर स्वस्थ लडकी थी। मीठी बोली थी बताशो जैसी। स्वभाव की विनम्र। वह स्वय काम धधा करने लगती थी। आते ही गोबर कडे से लग गई। असल मे जब वह घर आए थे तब जलकौर स्वय गोबर कडा कर रही थी। पशु खेतो मे जा चुके थे। घर मे कोई आदमी नही था। जलकौर ने बहुत मना किया ना बटा तू अभा तो आइ हे। तुमसे मे अभी काम नही करवाऊगी। पर वह नही मानी।

श्याम ने कहा चाची यह मीतो तो तुम्हारे लिए हा लाया हू। सोचा चाची अकेली काम धध म लगी परेशान होती हे। यह चोथी मे पढती हे। यही इसका नाम लिखा दगे।

हा भइ। ठीक रहगा। हमारा न्या लेगी। रहगा यहा ता इसस मुच भी आगम मिलेगा। घर भा भरा भरा लगगा। जलकौर आत्मिक रूप स भी प्रसन्न था।

जब तक यहा था अब श्याम मठ मे नही गया। राम उसक पास स्वय हा दिन म एक बार किसी भी समय चक्कर मार लेता था। सुबह सुबह वह दूध लन ता इधर आता ही था तब तो वह बहुत जल्दी मे रहता था। बीच मे कभी समय निकालकर घर आता था। दोनो भाई बाते करते रहते। वह दो दो घटे बैठा रहता। चाची भी कभा उनकी बाना म शामिल हो जाती। मीतो तो जैस अब इसी घर की बटी था। वह भी बाते सुनती रहती।

छुट्टी समाप्त होने वाली थी। वह चार दिन पहले एक बार फिर भाखा गया था। मीतो को साथ नही ले गया था। उसे हमीरगढ के प्राइमरी स्कूल मे प्रवेश दिला दिया था। भीखी से एक दिन वह ओर करनैल मानसा गए थे। मानसा जाकर उन्होने एक पजाबी फिल्म देखी थी। शराब पीकर सिनेमा देखने गए थे। लौटत समय वह कपडे की दुकान पर भी गए। श्याम ने तीन जनाने सूट खरीदे। तीना एक ही तरह के। एक तना के लिए और दो हमीरगढ ले जाने के लिए। इस बार उसने भीखी मे दो रात ही बिताइ थी। करनैल उसे बस अड्डे तक छोडने आया। बस मै बैठा श्याम उदास हा गया। उसे घर से जाते समय तेजो भाभी का चेहरा बार बार याद आता। उसकी आखा का काजल उदास था। उसकी शोकाकुल दृष्टि का रूदन केवल श्याम को ही दीख रहा था। उसका मन था वह भाभी का उदास चेहरा अपने दोनो हाथो मे ले ले और उसकी आखा मे आखे डालकर उसे एक विश्वसनीय धीरज दे।

जिस दिन श्याम को जाना था एक रात पहले गुरमेल और उसने थोडी हा पी थी। राम भी उस रात घर आ गया था। मीतो भी जागती रही। चाची ने एक बार चाय भी बनाइ। वह पूरा परिवार आधी रात तक बाते करता रहा। सभी तरह की बात हुइ। जलकौर को आश्चर्य था कि भजना निकम्मे को किसी ने भी याद नही किया। जब से श्याम छुट्टी पर आया था दोनो भाइयो ने कभी भी अपने पिता की बात नहा की। जलकौर मन ही-मन झुझलाती कि जिस आदमी को काबू करने के लिए उसने उसके साथ शारीरिक सबध जोडे थे वह बेचारा तो मिट्टी से भी बुरा था। आज उसका अस्तित्व कहा है? उसका तो कोइ नाम तक भी नही लेता। उसके सगे बेटे भी उसे भुला बेठे।

दूसरे दिन गुरमेल तो श्याम से हाथ मिलाकर खेत को चला गया। साझी जल्दी मचा रहा था। राम उस बुढलाडे के स्टेशन तक छोडने गया। जलकार आर मीतो गाव से बाहर तक विदा करन आइ। दोनो जनी रो रही थी। श्याम ने चाची को माथा टेका ओर पाव छुए। मीतो को छाती से लगाकर उसके सिर पर हाथ फेरा। चाची से बोला अब यह अपनी बटी हे चाची। भीखी वालो की नही है। हम इसे यही रखगे।

‘यह कोन-सी बात हे यही रहेगी मेरे पास। ओर यह कहा रहेगी भइ। जलकार की वाणी मे अपनत्व था।

10

छुट्टा स लाटकर जात समय श्याम न एयरबग खाली करके सदूक मे ही रख लिया था। ना तो अब सदूक म इतना वजन था आर ना एयरबेग म पहले जेसा सामान था। उसने सोचा एक ही नग ठीक रहगा। चाची ने जो ढाइ तीन किलो खोए की बफिया बनाकर दी थी वह भी उसन मोमी कागज के दो लिफाफा मे रखकर और ऊपर से पुराने कपडे से लपेटकर सदूक म रख ली थी। सुबह की रोटी तो वह खाकर चला था शाम के लिए चाची ने दसी घा क तीन पराठे बाध दिए थे और आलू की सूखी सब्जी रख दी थी।

सदूक डिब्बे की नाच की सीट के नीचे रखकर उसमे जजीर लगाकर सीट से ही बाध दिया था। जजीर मे छोटा ताला लगा दिया था। निश्चिन्त होकर बैठने पर वह खिडकी के बाहर झाकने लगा। उसने सदूक जजीर से बाधने का काम जल्दी जल्दी खत्म कर लिया था ताकि हमीरगढ के पास से जाती गाडी मे से वह अपने गाव को देख सक। गाव मे स अपना घर देखे। पर यह क्या गाडी तो कभी की हमीरगढ से आगे निकल गइ थी। अब तो मानसा आने वाला था। बठिडा तक वह खिडकी से बाहर ही झाकता आया था। कोइ स्टेशन पार करके जब गाडी तेजी से दौडने लगती तो उसे लगता कि गाडी जेस खडी ह और वृक्ष पीछे को भाग रहे है। यह सब जल्दी जल्दी गुजर रहा था। वृक्षो के आकार उसे मनुष्यो जेसे लगत। उसे किसी वृक्ष के नीचे तेजो खडी दिखती। यह वृक्ष उसकी दृष्टि से ओझल हो जाता तो वह दूसरे किसी वृक्ष के नीचे खडी दिखती। इस प्रकार न ता वृक्ष खत्म होते थे और ना तेजो का आकार दिखना बद होता था। जब गाडी बठिडे पहुची तब काफी दिन बाकी था। प्लेटफार्म पर ही ठेलेवाले स उसने चाय लेकर पी। यहा से उसे दूसरी गाडी दिन छुपने पर मिलनी थी। ठेलेवाले से ही उसने अगली गाडी का सही समय पता किया। कुछ देर तब वह और वहा बेच पर चुपचाप बैठा रहा। कुछ न कुछ सोचता रहा। फिर उसका दिल किया कि चाय आर पिए और सदूक मे से निकालकर दो बर्फिया भी खा ले। दा बफियो मे से एक छाटी थी और दूसरी कुछ बडी। चाची ओर मीतो को बफिया बनाते उसने देखा था। मीतो ने छोट आकार की बर्फिया बनाइ थी। चाची के हाथो की बर्फिया बडी थी और कुछ पाली भी। मीता की बफिया छोटी ओर कडी थी। छोटी बर्फी खाते समय उसे मीतो का चेहरा याद आया। जब गाव के बाहर तक वह उसे विदा करने आइ थी मीतो केसे आखे भरे खडी थी। उसका सूरत एकदम अपनी मा पर गई थी। वहा नाक वही आखे वही दात और माथ का आकार भी वेसा ही। उसे तेजो मे मीतो दिखने लगी। जब यह युवती रही होगी तब कितनी खूबसूरत रही होगी। अब भी कोन सी कम है वेसी की वेसी ही ह। लगता ही नहीं कि पाच बच्चो की मा ह आर फिर तान मर्द ह घर मे। तगडी ह। वसी ही ह। जस पच्चीस तास साल की हा। तजा का अहसास उसक सम्पूण अगो म था। उसे यह भी लग रहा था कि जेस भीखीवालो का वह चोथा भाइ ह। लगता क्या ह वह चौथा ही ह। बेचारा न कभी

फक नही रखा। जब जाता हू, हाथा हाथ रखते ह। उसे लगता नस वह हमारगढवाला का कम है भीखीवालो का अधिक हे ओर फिर यह भी अनुभव हुआ कि वह भीखी के लिए छुट्टी मनाने आता हे हमीरगढ के लिए कहा आता हे। यद्यपि अधिक दिन हमीरगढ म रहता है पर ध्यान उसका भीखी मे ही रहता ह। भीखी मे बिताए दो चार दिन भा पूरी छुट्टी स्वारथ कर देते हे।

भीखीवाले जो उसका इतना मोह करते हे तेजा इतना चाहता ह तो वह कान सा कम करता है। गया तो सबके लिए इतना सारा लकर गया। कितना खच किया उन पर। यदि उनके साथ उसका कोइ सबध है तभी तो वह वहा जाता ह आर इतना खच करता हे। लडकी का अहसान वह कभी नही भुला सकेगे। श्याम अपने मन मे ही कह रहा था किसी को क्या पता कि वह मीतो को हमीरगढ क्यो लेकर आया है। एक तो लडकी के बहाने भीखी आन-जाने का उसका स्थाइ साधन बन गया हे। वह अहसान मानेगे। दूसरे बडा अहसान जो किसी को पता नही वह यह कि मीतो का ब्याह हम हमीरगढवाले ही करेगे। हम उसकी सगाई करेगे हम ही ब्याह करेगे। भीखीवालो के सिर पर तीन पत्थर है। एक पत्थर का भार तो उतर गया उनके सिर से। क्या याद करेगी तेजो भाभी।

उसकी सोच की उडान आग ही आगे भागी जा रही थी। वह अब यह ही सोच रहा था कि मीतो का ब्याह करके जहा वे दोनो भाई भीखीवाला पर अहसान करेगे वही अपनी जायदाद मे से पुण्य भी कर लेगे। किसी की बेटी का विवाह कर देना पुण्य ही तो है। इससे बड पुण्य और क्या होगा। फिर चाचा-चाची अकेले दस किल्ले का अनाज खाए जा रहे है मीतो के विवाह से कुछ तो निकलेगी।

वह अपनी सदूक नीचे रखकर उस पर पैर रखे हुए था। स्वय बच पर आखे बद किए बैठा था। जेसे औधा नीदी मे हो। उसने लोगो का शोर सुना। आखे खोलीं। प्लेटफार्म पर भीड बढना शुरू हो गई थी। ये उसी गाडी वाली सवारिया थी। दिन छिप चुका था। गाडी आने मे आधा घटा बाकी था। उसने सोचा जो पराठे लाया ह वह खा लिए जाए। नही तो फिर गाडी मे पानी की दिक्कत हो जाएगी। गाडी का पानी पीने म भी अच्छा नही होता। यह भी पता नही गाडी मे कितनी भीड हो। अगर बैठने की जगह न मिली तो रोटी खाने के लिए जगह कहा मिलेगी। उसने सदूक खोली और रोटी वाली पाटली निकाल ली। उसके पास प्लास्टिक का गिलास तो सदूक मे पहले से ही था। पानी भर लाया। वह सदूक पर बेठकर ही रोटी खाने लगा। पराठे और आलुओ की सूखी सब्जी मे देसी घी का अपना स्वाद था। उसे चाची याद आई। क्तिना स्नेह करती हे। उसका स्नेह मा के स्नेह से कैसे भी कम नही ह।

डिब्बे म ऊपर की सीट पर वह सिर के नीचे सदूक रखकर लेट गया। गाडी क हिचकोले लेने पर उसे मीठी मीठी नीद आने लगी पर आधी रात होने क कारण अगल-बगल के यात्रियो का शारगुल कभी कोइ जोर की आवाज से उसके आराम मे विघ्न पदा करती।

चाचा क अडियल स्वभाव क कारण चाची बचारी बुत बना वेठी हे। किसी स कोइ लना देना नही होता कही आना जाना नही होता। उसके तो केवल हम ही हे दोना भाइ। हम ही उसका ससार थे। इसीलिए तो वह हमे इतना चाहती ह। उसका अपना कोइ सतान होती ता बेटा बेटी हाती ता रिश्तदारिया आगे बढती। चाची की जिदगी तो एक प्रकार से तलेया के पानी की तरह सडकर सूखकर रह गइ थी।

चाची का पीहर कालेके मे हे। उसके दो भाइ हे। छोटे का विवाह हा गया ह। उसके दा लडकिया है। बडी लडकी के ब्याह के समय किसी बात पर गुरमेल नाराज हो गया था। खूब जमकर झगडा हुआ था। चाचा कह रहा था मे इस घर का जवाइ हू। चाची के दाना भाइ कह रहे थे होगा तू जवाइ। हमारी इज्जत का सवाल है। किसा दूसरे को कुछ पता नही था किस बात का झगडा हे। भीतर-ही भीतर कुछ उबलता फिर मद्धम पड जाता। पर क्लेश जबरदस्त था। चाचा बारात आने वाले दिन ही रूठकर कालेके से भाग आया था। पीछे पीछे चाची आ गई। बस वह दिन का दिन चाचा न तो स्वय ही कालके गया और ना चाची को जाने दिया।

चाची की बडी बहन से भी कोइ व्यवहार नही था। वह भी गुरमेल चाचा के ही कारण। चाचा किसी से भी बनाकर नही रखता हे। जरा सी बात पर क्लेश करके बेठ जाता हे। कहता हे मै ही मै हू बस। दूसरा भी कोइ कुछ रखता हे। दूसरा भी अन्न खाता है। फिर दारू पीकर मार पीट पर उतर आता है। उसके दिमाग मै बैठी उल्टी बात लाख समझाने पर भी नही निकलती। चाचा का दिमाग उल्टी खोपडी का है।

चाची की एक बडी बहन अकलीए मे ब्याही हुई हे। उसके पति की चाचा गुरमेल से पहले दिन ही अनबन हो गइ। कहते हे ना सादू वादू। सादू हमेशा वार करता है। चाची बताती है कि अकलीए वाला वह आदमी तो शरीफ है। यह तडी मारता रहता था। कहता मेरे पास बहुत जमीन है। अकलीए वालो के पास दो किल्ले कम होगे। यह काहे की बराबरी वह कौन सा साझी था। जब कभी वह कालेके अपने ससुराल मे इकट्ठे होते चाचा बस ऐसे ही मुहजोरी करता। अकड दिखाता। चाची की बहन नदकौर चाचा के सिर पर हाथ रखा करती उसे अपन बेटे के समान समझती थी। पर नही वह शक करता और खीझता कि सास अकलीए वालो की ही बहुत सेवा करती है। यू ही जलता कि चाची जलकोर नदकौर के पति को इतने पास होकर क्यो बुलाती है। चाची से लडता कहता तुझे इससे क्या लेना हे? यह तेरा क्या लगता है कहा का जाट?

चाची बताती है कि बहन नदकौर एक बार अपने पति के साथ यहा हमीरगढ भी आइ थी। शुरू शुरू की बात हे। चाचा ने पाखर सिह से बात ही नही की। न दारू लाया ना माट बनवाया। उन बेचारो को तो खान पीने का शोक भी कुछ नही था। वह तो हसन बोलने का प्रेम चाहते थे। जब ये आए इसके आग लग गइ। जलकर कोयला हो गया। बोला ये यहा क्या करने आए हे? हम तो इनके यहा नही जाते।

ऐसा तो चाचा हे सरदार गुरमेल सिह।

श्याम ने करवट ली और नीचे वाले एक यात्री से पूछा कि कौन सा स्टेशन है यह हडियाया था। और फिर नीचे वाले दो यात्री बात करने लगे। एक कह रहा था स्टेशन के बगल वाला गाव तो खुड्डा है हडियाया वहा से दूर है। फिर पता नही स्टेशन का नाम यह क्या रखा है किसी ने?

होगी कोइ बात भाइ। स्टेशन वाली जगह हडियाए की होगी या और कोइ बात होगा। दूसरे ने उत्तर दिया।

गाडी यहा बहुत देर तक रुकी। आगे कोइ और गाडी आती होगी या पीछे से कोइ तेज रफ्तार वाली गाडी को निकलना होगा। गाडी खडी होने के कारण ही नीचे वाले यात्रियो की बात श्याम को सुनाई पड रही थी। गाडी चलने पर लोगो की बात समय मे नही आती थी आवाजे अवश्य सुनाइ दे रही थी। वह करवट बदलकर सीधा हो गया और आखे बदकर ली। घर की बातो की रील फिर चलने लगी।

हा नदकौर की बडी बेटी भूरो का आना जाना जरूर है हमीरगढ पर वह भी कभी कभी ही। भूरो रल्ले मे ब्याही हे। उसके पति का स्वभाव भी अच्छा है। बलविंदर मे किसी प्रकार की अकड नही हे। ना ही उसमे कोइ लोभ लालच है। भूरो के चार बेटे है। सुना था चाची इन चार बेटो म से ही किसी एक को हमीरगढ लाना चाहती थी। फिर पता नही क्यो चुप हो गइ। पता नही क्या सोचा होगा जो रल्ले से कोइ लडका लेकर नही आई। राम बता रहा था कि चाची रल्लेवाला कोइ लडका लाना चाहती है। रल्लेवाले लडके क्या लगते हे। कोइ लडका आ जाता तो वह ही यहा पाच किल्ले का मालिक बनकर बैठ जाता। यह तो चाची ने अच्छा ही सोचा। अब यह चाचा चाची दस किल्ले अकेले ही खाए जा रहे है खाए जाए। कब तक खाते रहेगे। कभी तो मरेगे ही। फिर यह दस किल्ले हम दोनो भाइयो की। वास्तव मे तो मेरे अकेले की दस किल्ले है। राम साधु हे। वह जमीन का क्या करेगा। वह तो अब सन्यासी है। राम तो पहले से ही सन्यासी है। उसने कभी लोभ लालच वाली बात नही की। पढ जाता तो ठीक रहता। दसवी कर लेता तो कोइ नोकरी मिल जाती। खेती के परिश्रमी काम से निकल जाता। अच्छा खाता पीता अच्छा पहनता और छाव मे बेठता। चाचा की जिद्द ने उसे घर से निकाला और बेचारे का हाथ कट गया। असल मे वह चाचा की तरफ से जिदगी से निराश हो चुका था। पढाई गइ हाथ कटा नकारा होकर बैठ गया। मा मर गइ पिता का घर मे कोई जोर नही रह गया। चाची की चलती थी। बापू तो जिदगी भर चाचा के दबाव मे ही दिन काटता काटता मर गया। ना अपना कुछ किया और ना बेटो का कुछ बनाया। दो बेटो के होते हुए भी उसका ससार मे कुछ शेष नही रह गया है। कोइ उस निकम्मे को अब याद भी नही करता हे और वह जिनकी कोइ औलाद नही होती निपूते होते हे वे घर के मालिक हे। देखो साली किधर गइ बात?

उसने बाहर शोरगुल सुना। गाडी खडी थी। किसी की आवाज से पता लगा यह धूरी जक्शन हे। यहा गाडी बहुत देर तक खडी रही। उसने सोचा इजन पानी लेता होगा

या फाइ डिब्बा तोडना जोटना होगा। जक्शन पर आमतोर पर गाडिया कुछ ज्यादा हा समय रुकती ह। ऊची आवाना आर सवारियो के उतरने चढने से शार मचने के कारण उसके विचारा की लडी टूट गइ। वह ऊपर की बथ से नीच उतरा आर रास्ता चीरकर बाथरूम चला गया। फिर बाहर झाककर देखा प्लटफाम पर लोग इधर उधर तजी से आ जा रह थे। गाडी का सिगनल डाउन नही हुआ था। सामने ठेलेवाला चाय गम चाय गम मध्यम स्वर म अलाप रहा था।

उसने नीचे उतरकर एक कप चाय मागी। सिगनल अभी भी डाउन नही हुआ था। गाडा ने यहा बहुत समय ले लिया था। उसन मन मे सोचा यह कैसी एक्स्प्रेस है। यह तो पैसेजर से भी गइ बीती ह। गाडी नही खचरा है। पहले हडियाए मे बेमतलब ही खडी रही जबकि वहा यह रुकती ही नही हे।

गाड ने सीटी दी तो वह जल्दी से अपनी ऊपर की बथ पर आ गया। मन ही मन फीकी हसी हसा उसकी अपनी जिदगी भी तो खचरा है। उसकी कोई गति नही है कोइ मजिल नहा ह कोइ लुत्फ नहा हे। यह साली फौज की नोकरी क्यो कर ली कोइ जाट लडकी दने को तेयार नही है। ओरत की जरूरत उसे भीखी मे पूरी हो जाती हे। वह भी साल दा साल मे कभी दो चार दिन। यह चोरी का गुड हे कब तक खाया जा सकता है। यह सिलसिला किसी दिन एक मोड पर आकर समाप्त हो जाएगा। यह कहानी पूरी जिदगी तक नही चल सकती। घर बसाने की वात ही कुछ और है। घर तो कोइ अपनी ओरत ही बसा सकती है। जो आगे चलकर उसके बच्चे भी पेदाकर सकती हो। बच्चे जो उसकी जमीन-जायदाद के वारिस हो सके। एसा प्रबध कही होते नही दिखता। चाचा चाची भी यू ही घर सा बाधे बैठे हे। अपनी जान मे तो, वह घर के स्वामी है। आज उनके पास सब कुछ है पर सब व्यर्थ है। उनके आगे कोन हे। आज आखे बद हो जाए तो कल को उनके इसी घर म गधे लोटेगे।

इन्ही उधेड बुन मे उसे नीद आ गई। गाडी क हिचकोले जैसे लोरिया दे रहे हा। जिस भी किसी स्टेशन पर गाडी रुकती उसकी आख न खुलती।

वह अम्बाला छावनी जाकर उतर गया। यहा से उसे दूसरी गाडी पकडनी थी।

11

वह कीकर का पेड क्या था किसी की मौत का कारण था। पूर्व की ओर गुरमेल के खेत मे एक किल्ला जितना लम्बी नाली थी। इस पर एक कीकर का वृक्ष लगा था। चकबदी के समय यह नाली नही थी पर तब कीकर था। छाटा ही था। कुछ पता नहा कि इस कीकर का बीज यहा किसने बाया था या इसे कहा से लाकर यहा लगा दिया गया था। क्या पता स्वय ही उग आया हो। कहा का बीज कहा जाकर उग आता ह। पानी म

बहकर या जानवरा की बिष्टा म स या पशुओ के गाबर म स ही वृक्षा क बान धरना म जड जमा लेते हे।

नाली की दूसरी ओर सते का खत था। उसका यह भूमि का टुकडा कनल दा किल्ले का था। यह भूमि बजर थी। यहा कुछ भी नही उगता था। वह कभा कभा ग्वार या बाजरा बो दिया करता था। रतीली धरती था। पाना पड जाता ता कुछ थाडा बहुत उपज जाता। नही नो जमीन बजर की बजर पडी रहती थी। भटकटइया और चूहटीसलाट बूटी उगती थी। अलेह के पौधे निकल आते। इधर गुरमेल का एक किल्ला भी बजर था। हल नही चल पाता था। आधा किल्ल कुछ ठीक था। इसमे पाना पडने पर ग्वार बाजरा हा जाता था। गेहू बोया जाता तो कल्लरिया दिखने लगती।

गुरमेल का नहर का खाल बजर किल्ले से आगे उपजाऊ भूमि म जा निकलता था। यहा खूब बढिया फसल हाती थी। कीकर इस खाल के बीचो बीच म पडता था आर खाल गुरमेल की अपनी जमीन मे था। अपनी जमीन मे स आता अपनी जमीन म बहता ओर अपनी जमीन म से ही आगे निकल जाता। खाल का काइ झगडा नहा था पर सते को कीकर का लालच आ गया। एकदम सीधा कीकर था यह ना टेढा ना मेढा। टहनिया भी बराबर-सी इधर उधर फेली हुइ थी। जब कीकर पूरा भर जाता तो उसकी छाव बडी दूर तक हा जाती। यह तो प्रारम्भ से ही खूब गझिन था। इसका तना गोलाकार था। सते का मन विचलित हो गया। वषा के दिन थे। एक दिन उसन कीकर अपनी ओर कर लिया। जेसे किसी की पत्नी का कोई पडोसी हाथ पकडकर अपने परिसर मे ले जाए। खाल की मेढ कीकर के बीच मे कर ली। इसका अथ था कि कीकर साझे की मेढ पर ह। कुछ दिनो के बाद गुरमल ने देखा तो उसके तन बदन मे आग लग गई। उसका खून खौल उठा। इस खाल को किसने छेडा है। फडुवा लेकर मेढ कीकर के उधर कर दी।

गुरमेल के तेज स्वभाव से सभी परिचित थे। वह किसी बात पर बिगड जाए तो फिर किसी के समझाने मे नही आता था। मरन मारने को तेयार हा जाता हे। सता खामोश हो गया। कुछ दिनो के बाद सता पचायत मे लोगो से कहने लगा कि कीकर साझी मढ पर था। मेलू ने जबरदस्ती अपनी ओर कर लिया है। मेढ कितनी टेढी ह चलकर देख लो। गुरमेल के डर से कोई उसके खेत म नही जाता था पर चोरी चारी कुछ लोग दख आए। मेढ मे टेढापन तो था पर यह कोइ खास घुमावदार नही थी। इतना टेढापन ता मिट्टी कटने पर हो ही जाता हे। किसाना की यह खराब आदत होती है कि वे बगल वाले के खेत की मेढ यू ही काटते रहते हे। दो सेर मिट्टी अपने खेत म छोडकर वह कोइ बहुत बडी जायदाद इकट्ठी कर लेना समझते हे। समझदार आदमी ऐसा नही करत। थोडी सी मिट्टी अपने खेत मे डाल लने से कोन कोड बडा बन जाता है। घर की बुरी दशा तो वेसी ही रहेगी।

सता लम्बे चोडे कद और गठे हुए शरीर का व्यक्ति था। हाथ मे हमेशा कसीआ

गधाला या गडासा लिए रहता था। एक आख मीचता था। यह मिची हुइ आख हा उसका चतुर आख था। गुस्सा नही हाता था। धार धीरे सामान्य रूप से बाते करता था पर उसकी बात म गहरी चालाकी हुआ करती थी। पहले तो उसने लोगो मे बातो हा वाता म यह प्रचार किया कि कीकर साचे की मेढ पर उगा हे आर उसे गुरमेल ने अपनी आर कर लिया ह। फिर इसमे भी आगे बढ गया ओर कहने लगा कि कीकर उसका जमीन म ह। नाला कीकर स पार होकर बहता हे। यह कहता कि चकबदी के नक्श के अनुसार यह मढ गलत लगाइ गइ हे। मेढ कीकर के पार उसकी जमीन मे ह। लागो से बाते करता करता यह गुरमेल के भताजो से भी बात करने लगा। कभी वह श्याम से कुछ कहता कभी राम से कुछ कहता। कहता था अपने चाचा से कहो भाइ तहसीलदार को अर्जी देकर मेढ की स्थिति दिखवा ले। यह कीकर हमारे जमीन मे है। यह भजने स भी कहता रहता तुम मेढ क्यो नही बनवाते। मेलू क्या तुम्हारे घर की चौधरी हे उसस कहा भइ तहसीलदार के पास जाए।

भजना उत्तर देता था तुम सता सिह गुरमेल से ही सीधे बात करो। लडके भी यही उत्तर देते थे हमे नही पता ताऊ चाचा से पूछ लो तुम। मेढ सेढ का पता उसी को हे।

पर नही सता गुरमेल से बात नही करता था। उससे बात करने से झिझकता था। वे जब भी टकराते तो इधर उधर की बाते करते। गुरमेल भी स्वय बात नही छेडता था। जबकि उसने भजने और लडको से सभी बाते सुन रखी थी।

कीकर दिन पर दिन बढता जा रहा था। हर साल उसका रग-रूप निखर रहा था। भरपूर फल लगने लगे। बकरी वाले जब भी उनका दाव लगता शाखाए बीच से तोड लेते। बास मे लगी दराती का उल्टा भाग मारकर शाखाए गिरा लेते। चरवाहो के लडके गोद निकाल लेते। पतगो के मौसम मे कीकर का गोद उनके बहुत काम आता था।

गर्मी का मौसम था। एक दिन गुरमेल उसका साझी सतोष और दो दैनिक मजदूर अमरीकी कपास के खेत मे गुडाई करके हटे थे और उस समय शीशम के पेड के नीचे बेठकर सुस्ता रहे थे। दोपहर ढल चुकी थी। दो दो इट धर कर बनाए चूल्हे पर चाय उबल रही थी। गुरमेल का चरवाहा आग मे सूखी टहनिया डालता जा रहा था जब वह एसा करता तो आग लपट मारकर जल उठती थी। पतीले मे उबाल आता। लम्बी पत्ती का चाय तो उबल चुकी थी अब गुड घुल रहा था। तभी गुरमेल ने दूध की बोतल पूरी की पूरी उसम उलट दी। दूध से भरी एक बोतल और रखी थी। यह गीली मिट्टी मे रखा हुई थी। ऊपर से भी मिट्टी थोप दी थी और उस पर दो डटे रख दी थी ताकि कोइ कुत्ता बिल्ला बोतल म मुह न मार सके। बोतल ठडी भी रहे ओर दूध भी न फटे। । चरवाहे ने एक बार आग मे खर पतवार ओर झोक दिया। कुछ देर के बाद चाय मे फिर उबाल आ गया।

सता उधर पता नही कहा से आकर उनके पास शीशम के नीचे बेठ गया। कटारी

म चाय डालकर गुरमेल ने उस भा दे दी। बोला ला भाट साहब पाकर दखा कसा बना ह?

साझी आर देनिक मजदूर चाय पीकर और अपन अपना बतन मान धाकर उठ आर अपन कसिया लेकर कपास के खेत मे चले गए। चरवाहा चाय के बतन भाड सभालन लगा। सता बठा हा रहा। गुरमल की ओर एकटक देखता ओर कुछ कहन का प्रयत्न करता। आखिर बेठा बैठा वह पजो क बल हो गया। अपना कसिया जमान पर रखकर खडाकर लिया ओर दोनो हाथो का भार बेटे पर छोड दिया। बाला मन भजन से कहा था लडको से भी कइ बार कहा हम किसी दिन पटवारी क पास चले चले।

क्या काम हे पटवारी से? गुरमल ने अनजान बनकर पूछा।

कभी भजने या लडको ने तुमसे बात नही की? उसने आश्चय स पूछा।

हा की तो है सब बताया है जो तुम उनसे कहत रहे हो सब। अब बताआ तुम चाहते क्या हो? गुरमेल ने सीधे उसकी आख मे देखा।

आओ उठो। इधर आओ। सता उसे कीकर वाली मेढ की ओर ले गया।

गुरमेल के मन मे एक लहर उठ रही थी एक गिर रही था। यह ससुरा जाट करता क्या डोल रहा है। चाहता क्या है?

वे बाड के सिरे खडे थे। सते ने कसिया एक ओर रखकर कहा यहा खडे होकर देखो। बाड मे कितना अतर है। मेरी सभी बाडो मे कदमे मिली हुइ ह। मेरी एक करम तेरी ओर है। हम पटवारी से इस भ्रम को मिटा ले। सते ने अपनी आर से उस सुझाव दिया।

मै यह सब कुछ नही जानता। मुझे कोई भ्रम नही हे। भ्रम होगा ता तुम्ह होगा। तुम्हे शक है तो तुम दिखवा लो बाड तहसीलदार से अर्जी देकर। मेरी जमीन ता पूरी हे। कदमे तो मेरी भी पडी है। गुरमेल ने क्रोध को दबाते हुए कहा।

हम दोनो तहसीलदार के पास चलते हे। कानूनगा आ जाएगा। पटवारी आ जाएगा। भ्रम दूर हो जाएगा तेरा भी मेरा भी मै यह यू ही नही कह रहा हू, मेरा एक करम तेरी ओर हे।

सतासिह भाइ साहब तुम्हे कीकर दीखता हे। कीकर तो मेरी ओर है। चाहे जहा यह बात कहलवा लो।

मे कीकर की बात नही कर रहा हू। जमीन की कर रहा हू।

जमीन का तुम क्या करोगे मै भी क्या करूगा यह तो एकदम पथरीली हे। ना तुम्हारे यहा कुछ उपजता है ना मेरे यहा उपजता हे। पथरीली का क्या करोग। मै किसी के पास नही जाऊगा। ना तहसीलदार के पास ना कानूनगो या पटवारी के पास। तुम्हे जाना हो ता जाओ। दोड भागकर लो जहा करनी हो। बात खत्म।

गुरमेल वहा से आ गया। आकर उनके साथ कपास मे गुडाइ करवान लगा। मन म गालिया द रहा था साला बहुत चालाक हे। निगाह कीकर पर है ओर बात जमीन की

कर रहा ह। तहसीलदार का डर दिखाकर धाखे से कीकर काटना चाहता हे। मरा जा करना हो कर ले। उसने आख उठाकर देखा सता दूर किसी दूसरे के खेत की ओर चला जा रहा था।

वह फिर भी कभी कभी टकरा जाते। छोटी मोटी कोड ओर बाते हा जाती। गुरमेल पेर बढाता और आगे निकल जाता। उसे भय लगता कि वह फिर बाड की बात छेडेगा। उसे पक्का विश्वास था कि यह फालतू का शोर मचाता रहता ह। शोर मचाकर कीकर काटना चाहता हे। जब कीकर छोटा था तब तो कभी नही कहा। अब जैसे जैसे कीकर बडा होता जा रहा है और काटने के योग्य हो रहा हे त्यो त्यो इसकी लालसा बढती जा रही है। वह दृढ था कि कुछ भी हो जाए वह सते को कीकर नही देगा। काना बदजात अपने आपको समझता क्या है।

सब लोगो के बीच खडे होकर एक दिन फिर सते ने बात चलाई अगर मेलू सच्चा है तो तहसीलदार के पास जाता क्यो नही है। खुद ही निणय हो जाएगा। कीकर इसकी आर आता हो तो यह काट ले मेरी ओर आता हे तो मै काट लू।

उसकी बात गुरमेल तक भी पहुच गई। उसने गहराइ से सोचा कि यदि कीकर इसकी ओर है तो यह स्वय क्यो नही जाता तहसीलदार की कचहरी मे। साफ बात यह हे कि यह डराता है। इसी प्रकार कीकर मे बटवारा करना चाहता हे। उसने भीतर ही भीतर ग्राहक ढूढने शुरू कर दिए। भीतर ही भीतर कीकर का मूल्य लगा लिया। दो तीन लोग कीकर की तलाश मे थे। आखिर चनण तरवाण से कीकर का सोदा हो गया। गुरमेल ने अग्रिम राशि ले ली। कीकर ले जाने के बाद पूरी राशि मिल जाएगी। चनण तरवाण बात का धनी था। धोखे वाली कोई बात नही थी।

चनण का धधा था वह इधर उधर आस पास के गावो मे वृक्ष खरीद लेता था। मजदूर लगाकर पेड कटवा लेता था। वही आरे से पेड के टुकडे करके ट्रैक्टर ट्राली मे लादकर बुढलाडे ले जाता। टहनिया आदि भी लाद लेता। बुढलाडे मे उसकी अपनी लकडी की टाल थी। टेढी मेढी लकडिया चीरकर बेच लेता था। फर्नीचर या तख्ते खिडकियो दरवाजो की चोखटो के काम की लकडिया आरा मशीन पर चीर लेता। उसकी आरा मशीन भी अपनी थी। छत पाटने वाली धन्नी पटरे भी उसी से तैयार कर लेता था।

चनण तरवाण के आदमी आए और एक दिन मे ही कीकर काटकर गिरा दिया। उस दिन सता गाव मे नही था। किसी नातेदारी रिश्तेदारी मे गया था। वरना वह झगडा खडाकर देता। वह तीसरे दिन आया। खेत गया नो देखा कीकर पर आरे चल रहे थे। चार मजदूर लकडिया चीर रहे थे। लकडिया उखाड रहे थे। कीकर का तना तो सीधा सीधा गिरा पडा था।

चनण के आदमी ट्रेक्टर ट्राली लेकर आए थे। पहले उन्ह तना लादना था। फिर दूसरी ट्राली पर अन्य लकडिया ओर टहनिया ले जाना था। वह तने को लकडी से उठाकर गड्ढे मे से बाहर निकाल रहे थे। मोटे रस्से बधे हुए थे। उनका एक आदमी गाव आया

आर गुरमेल सिह का घर पूछकर कहन लगा कीकर लदवाआ चलकर मग्गार ना। वह आपका काइ पडोसी हे सता सिह वह कीकर उठाने नही द रहा ह। कह रहा ह आधा मेरा हे। कीकर साझी है पहले मुझसे निबटा। हम ट्राला लिए खड ह। चार आदमी।

तुम चलो मे आता हू। अभी फसला किए दता हू।

गुरमेल की आखे म खून उतर आया था। रीढ की हड्डी म स सरसराती हा काइ एक लहर सी दिमाग म चढी। उसने अपना गडासा सबात म से निकाला आर तुरत खत की आर चल दिया। उसकी पगडी उल्टी साधी बधी थी। लुगी परो मे फस फस ना रहा थी। उसने लुगी उतारकर कधे पर रख ली। कध के पीछ का आर थूकता हुआ हाफता हुआ रास्ता पार कर रहा था।

ट्रेक्टर-ट्राली वाले आदमी दूर परे छोटी शीशम की छाव म बठ थ। बगल म कसिए को दोनो हाथो से थामे सता कीकर के तने के सहारे एक टाग के भार खडा था। उसन सोचा होगा कि गुरमेल आकर कोइ बात करेगा। पर वह तो आधा की तरह आया ओर गडासा ऊपर करके सते का कधा दो फाककर दिया। सता अपन कसिए से हाथ उठाकर वार करने ही को था कि एक बार गडासे से गुरमेल ने आर कर दिया। यह वार साधे उसकी गदन पर हुआ था। तुरत ही सता लहू लुहान होकर धरती पर गिर पडा। उसने गडासे के दो वार उसकी छाती पर किए। शेर की तरह दहाडा दू आधा? उठा यह हे तेरा आधा?

ट्रेक्टर ट्राली वाले आदमी भयभीत हो गए।

सालो यह तो और ही कुछ हा गया। उन्होने ट्रैक्टर स्टाट किया आर खाली ट्राली लेकर ये गए वो गए।

गुरमेल वही कही सरकडे कपास मक्का और ईख के खेतो मे छिप गया।

12

राम ने बुढलाडे जाकर श्याम को तार कर दिया कि घर मे बहुत खराब घटना हो गइ हे। वह पद्रह बीस दिन की छुट्टी लेकर जल्दी ही गाव आ जाए। रजिस्ट्री से एक चिट्ठी भा लिख दी। गोलमोल शब्दो मे यह समझाया था कि चाचा एक कत्ल के केस मे फस गया है। अभी पेश नही हुआ हे। जितनी जल्दी हो सके छुट्टी लेकर वह गाव आ जाए।

श्याम को तीसरे दिन तार मिल गया। उसे एकदम से चिता हो गइ। तार लेकर वह साहब के पास गया। उसकी छुट्टिया शेष थी। उसे एक महीने की छुट्टी मिल गइ पर अर्जी देकर छुट्टी की मजूरी मिलते करते तीन चार दिन लग गए। तब तक चिट्ठा भा मिल गई। चिट्ठी पढकर उसे सब मालूम पड गया कि चाचा ने किसी का कत्ल कर दिया हे। उसे अच्छी तरह ज्ञात था कि चाचा का स्वभाव जहरीला हे। अवश्य ही उसस किसी का

क़त्ल हो गया होगा। अच्छा बुरा क़ाम करते समय वह आगा पाछा तो देखता नहा ह। नफ नुक़सान का ज्ञान उसे नही रहता। गुरमल के विषय मे श्याम के दिमाग मे बुराइया उठन लगी। उसके कारण ही तो वे दोना भाड घर से निकल डोल रह ह। वह होशियारा से काम लेता तो छाटा पढ जाता कोइ सरकारी नोकरी करता मोज लेता। श्याम स्वय खती बाडी करता उसका विवाह भी हो जाता। चाचा के कोइ सतान नही थी दस किल्ले से सगाइ पक्की हो जाती। राम की भी शादी हो जाती। उन दोना के बच्चे चाचा चाची के ही पोते पाती होत। घर भरा भरा रहता। खूब आनद ही आनद होता। चाचा न यह रहती सहती क़सर भी पूरी कर दी। किसी का खून कर दिया। श्याम को यह पता नही था कि उसने किस कत्ल किया है।

बुढलाडे पहुचकर श्याम ने एक मजदूर किया ओर सदूक रखवाकर हमीरगढ आ गया। घर मे सब शोक मग्न थे। चाची के मुह पर से मक्खी नही उड रही थी। भैसे बैल आर कट्टा कटिया भूखे खडे थे। थूथन ऊपर उठा उठाकर देखते और रस्से तुडाने तुडाने को कर रहे थे। घर का काम धधा मीतो करती डोल रही थी। श्याम घर मे घुसा तो मीतो उसके गले लगकर रोने लगी। चाची बैठी बेठी ही फोडे की भाति फूट पडी। उससे कुछ बोला बताया नही जा रहा था। राम पता नही कहा था। पैसे देकर उसने मजदूर का बिदा कर दिया। चाय को नही पूछा। चाय की किसको पडी थी। वह भीतर सबात मे खाट पर बैठी चाची की बाते सुन रहा था कि बाहर किसी के आने की पगध्वनि सुनाइ दी। यह रल्लेवाला बलविदर सिह था। उन दोनो ने हाथ मिलाया। रस्मीतौर से हालचाल पूछा। चाची फिर बताने लगी। बलविदर सिह पीढा लेकर उनकी खाट के पास ही बेठ गया। चाची कत्ल का पूरा किस्सा सुना रही थी। बात खत्म करके उसने अपना माथा पकडा और फूट फूटकर रोने लगी। उसका पूरा बदन काप रहा था। श्याम ने चाची का कधा पकड लिया। बोला चाची बस करो। चाचा से जो होना था हो गया। अब हमे उनका बचाव करना चाहिए। ओर पूछा अब चाचा कहा है?

यही है। अभी पेश नही हुए हे। राम वकील के पास गया हुआ है बठिडे।'

राम के साथ कोन गया है? श्याम ने पूछा।

तुम्हारी पत्ती का नम्बरदार गुरचरन सिह गया है। बलविदर सिह ने बताया।

यह वही गुरचरन सिह नम्बरदार था जिसे लेकर भजना कभी अम्बाला गया था ओर उन्होने श्याम के भर्ती होने का पता लगाया था। उसे तसल्ली हुई कि नम्बरदार गुरचरन सिह उनके हित का व्यक्ति है। वह उन्हे उचित जगह ही ले जाएगा। उसे अब यह भी पता लग गया कि जिस सता सिह का क़त्ल हुआ है नम्बरदार गुरचरन सिह का खानदानी विरोधी ह। दोनो खानदानो की शुरू से ही लगती आई है। इस सता सिह के साथ तो उनके घर क़ा अच्छा व्यवहार था। क़ोइ खास वेर विरोध नही था। बस इतनी अनबन जरूर थी जितनी किसी पडोसी खेत वाले से होती है। साथी मेढ वाले तो बिना मतलब के ही झगडते रहते हे।

चाचा न बताया कि उसी रात पुलिस वाले पृथ्वीदास क मठ गए थ और राम का पकड लिया था। पुलिस न उस मारा पीटा भी कह रहे थे कि अपन चाचा का पश करो। बताओ वह कहा हे? नहा ता तुम्हारी हड्डा पसला एक कर दग। बचारा मार झलता रहा। वह चाचा का कहा से पश करता?

गुरमल को पता नही था कि सता मर जाएगा। अपना समझ स ता उस मार मूर्छ चला आया था। उसकी इच्छा उसे जान स मारने का नहीं थी। वह ता कवल गुस्स मे आकर उसे बता देना चाहता था कि कीकर उठाने से रोकने का यह जवाब ह। कीकर उसका था उसकी जमीन मे था सता कौन होता हे उस कीकर के मामले मे दखल देने वाला? सोदा हो गया कीकर काट लिया गया। कुछ सोच समझकर ही बेचा था उसने यह कीकर। अब सता कीकर उठाने नही दे रहा था कमाल हे। कोन था वह रोकने वाला बहुत बहादुर। यह तो ज्यादती है उसकी कि सौदा हो गया कीकर काट डाला गया ओर कोइ उस कीकर को उठाने ही न दे। वह कीकर काट सकता हे ता कीकर को उठान स रोकने वाले को भी काट सकता हे।

गुरमल वहा से चला ओर खेतो मे ही होता हुआ बुढलाडे जा पहुचा। बुढलाडे म उस समय गाडी खडी थी। वह बिना टिकट ही गाडी मे सवार हो गया। जाखल पहुच गया। जाखल जाकर स्टेशन पर ही बेच पर लेटा रहा। उसे न भूख थी ना प्यास थी। उसके दिमाग मे डर और भय सवार हो गया था कही साला वह मर ना गया हो। मर गया तो उसे फासी लगेगी। उसका बदन कापने लगता। वह डरता वह अब कहा जाए? कभी कभी वह हिम्मत करता जो होगा देखा जाएगा। वह स्वय को सात्वना भी देता साला जाट, हेकडी दिखा रहा था। कीकर नही उठाने दे रहा था। यह भी कोइ बात थी। भई भले मानस कायदे की बात करता। चार आदमियो म मुझे बुलाता। पचायत कह देती मै मान लेता। वह तो साला खुद ही थानेदार बन गया। देख लिया फिर मजा। उसकी जेब म एक भी पैसा नही था। लोटती गाडी से वह फिर बुढलाडे आ गया। स्टेशन स वह मडी की तरफ जा रहा था कि उसे उसके गाव का घोची मिल गया। उसने बताया कि सता मर गया है। गाव मे तेरा नाम लेते है। भाग जा जहा भाग सके। उसने घोची से पूछा तुम अब कहा जा रहे हो?

गाव। मै तो इधर भीखी मे आया था। कल रात रिश्तेदारी म गया था।

तुम हमारे घर एक सदेश दे देना। ओर किसी का पता न लगे। कहना भइ म पेश हो जाऊगा। कहा छिपता फिरूगा मै अब? आखिर को पकडा ही जाऊगा एक दिन। घर पर अगर कोई ना हो तो मठ पर चले जाना पृथ्वीदास के। वहा लडका है अपना भतीजा राम। उससे कहना भइ मै रात बिरात मे आऊगा घर। मुझ पेश करवा दे। नम्बरदार गुरचरन सिह को साथ ले ले। वह खुद ही हमारा बन्दोबस्त कर दगा।

वह जिस प्रकार इधर उधर होता हुआ अपने खेत से भागकर बुढलाड पहुचा था वेसे ही आज इधर उधर होता हुआ गाव पहुच गया। रात का समय था। वह अपने घर

नहा गया। उस डर था कि गाव मे कही पुलिस न लगा हो। गाव आकर वह मठ मे गया। मठ म तो रात भर लोग चलते फिरत रहते थ। उसन एक अदमी से कहा कि यहा रामदास नाम का एक साधु ह उसस बाहर आन का कह दो। उनके घर से कोइ मिलने आया ह। समझाया कि वह उससे चुपचाप बताए।

थोडी देर के बाद राम मठ से बाहर आया। चाचा को खडा दखकर जसे उसके होश उड गए। चाचा भतीजे ने जल्दी-जल्दी बाते की। वही से वे घर की ओर चल पडे। राम का पता था कि गाव मे पुलिस नही हे। फिर भी गुरमेल घर नही गया। पेश होने का सारी बात राम को समझाकर वही से कही चला गया। उसे इतना बता गया कि वह प्रीतम सिह हवलदार के खेत मे उनकी झोपडी मे बेठा रहेगा। अपनी चाची से कहना वह मरे पास ना आए। औरतो का दिल कमजोर होता है। फिर लोगो को पता लग जाएगा कि यह इधर कहा घूमती फिर रही है। फिर मुझे रोटी दे जा। मै तो दो दिनो से भूखा ही डोल रहा हू।

राम ने उसी समय जाकर चाची को सब बात बता दी और फिर उसी समय मीतो को घर मे अकेली छोडकर चाची और राम गुरचरन सिह नम्बरदार के घर गए। सबात मे जाकर वे बहुत देर तक विचार विमर्श करते रहे कि गुरमेल को कैसे पेश किया जाए। नम्बरदार ने जलकौर और राम को समझाया भई जो कुछ होना था वह तो हो गया। अब समझ से काम लो। पैसा लगेगा। आदमी को बचाने की बात है। नही तो फासी लग जाएगी। यह तुम देख लो।

जलकौर ने नम्बरदार के पैर पकड लिए। बोली गुरचरन सिह तुम उसे कैसे ही बचाओ। पैसा मै लगाऊगी। चाहे जहा से करू।

ओर फिर नम्बरदार और राम दोनो प्रीतम सिह हवलदार के खेत की झोपडी मे गए। जाते समय वह नम्बरदार के घर से ही रोटी पकवाकर ले गए थे। जलकौर उनके घर से वापस लौट आई थी। नम्बरदार ने गुरमेल के साथ सब बाते की। तय हुआ कि वकील से बात करके उसे पेश कर दिया जाए।

अब पहले पेसो की जरूरत थी। पैसे घर मे थे नही। वकील मुह मागा पैसा पहले रखवाता।

दूसरे दिन ही जलकौर और राम बुढलाडे अपने आढती के पास गए। सूरजमल आढती पहले ता बात सुनकर अफसोस करने लगा। कितने ही सात्वना और हमदर्दी के शब्द कहे फिर पूछा कितने पैसो की जरूरत है?

जलकोर ने अलग अलग पैसे बता दिए। सूरजमल बोला इतने तो मुश्किल है जलकौर। हम भी कही से लाकर देगे।

फिर उसने खेती बाडी की बाते छड दी। कितनी जमीन हे अबकी कोन कोन सी फसल बोइ है पिछले साल कितना गेहू हुआ था। सब कुछ पूछता रहा। जानवर कोन-कान से हे। दोनो भैसे दूध देती होगी। जलकोर ओर राम को आश्चर्य हो रहा था, ओर खुशी

भा हा रहा था कि लाला सब हालचाल पूछ रहा ह। आश्चय इसलिए हा रहा था कि यह पसो की बात बीच मे छोडकर यह जमीन जायदाद का हालचाल क्या पूछन लग गया ह।

जितन पेसे उन्होने मागे थे सूरजमल ने उसके आधे का हा हा की। बाला कि आज ता ह नही परसो आआ। परसा तयार कर देग।

तीसरे दिन राम अकेला गया। सूरजमल दुकान पर नही था। घर पर पता किया घर पर भी नही था। फिर बताया गया कि वह बठिडे गया हुआ ह। कल आएगा। दूसर दिन राम दुकान पर फिर गया। सूरजमल के मुनीम ने बताया कि बाबू जा तुम्हारे काम से ही डोल रहे हे। मुझे बता गए है। दुकान मे और भी जाट जमीदार बठे थे व भी सूरजमल की प्रतीक्षा मे थे। मुनीम उनको जितने पैसे दे रहा था वह लेकर सतुष्ट नहा थे। ओर पैसो की बात करते थे। मुनीम कह रहा था कि बाबू जी मुझे इतने ही कहकर गए है।

आढती की दुकान का अजीब सिलसिला था। आढतियो के गाव बटे हात थे। अपने-अपने गावो मे आढतिए किसी न-किसी बहाने से चक्कर लगाते थे। अपने असामिया के खेतो मे जाते। साग पात का बहाना करके या कोई अन्य कारण बनाकर। उन्ह केवल यह देखना होता था कि जाट के खेत मे काहे की फसल है कैसी हे और कितन किल्ल की है। जेसे कसाई बकरे के पेट मे हाथ लगाकर ऊपर उठाता है उससे आदाज लगाता है कि इसमे कितने किलो मास निकलेगा। ऐसे ही आढतिया जाट की फसल देखकर जाचता है कि कितनी होगी। फिर उसी हिसाब से ही वह उसे पैसे देता है। फसल मडी मे आती है तो बोली लगने पर वह अपनी रकम मय ब्याज के काट लेता ह। शष पैसे जाट की झोली मे डाल दिए जाते है। कोई नाराजगी नही कोई गुस्सा गिला नही। फसल से अधिक एक पैसा भी आढतिया जाट को नही देता है।

सूरजमल ने अनुमान लगा लिया था कि गुरमेल की फसल इस बार इतनी होगी। सो उस हिसाब से उसने गुरमेल की पत्नी जलकौर से बात करके पैसे उसके भतीज राम को दे दिए। पर इस लेन देन के झझट मे कई दिन निकल गए। उधर पुलिस कइ बार घर आ चुकी थी। राम को थाने ले जाकर मारा पीटा था। बाबा चिब्भडदास की बात किसी ने नही सुनी। पुलिस वालो को नो पेसा चाहिए था। चिब्भडदास का वह आदर करते थे। लोकाचार के कारण वह बाबा के सामने उल्टा सीधा नहीं बोलते थे। चिब्भडदास से तो सभी सत बचन सत बचन कहते थे।

जिस दिन श्याम छुट्टी लेकर गाव पहुचा राम और नम्बरदार गुरचरन सिह बठिडे वकील के पास गए हुए थे। वे शाम को लोट आए। आकर बताया कि वकील इतने पेसे पहले माग रहा हे। बठिडे मे जज की कचहरी मे गुरमेल पेश होगा। ओर पूरा मुकदमा यही वकील लडेगा। वह वकील कत्ल के केस ही लेता है। जीतता भी है। गुरदेव सिह वकील की बठिडा कचहरी मे बहुत धाक है। वह राजनीति मे भी हिस्सा लेता है। वेसे भी जजो से बनाकर रखता है।

प्रातम सिह हवलदार की झापडा का किसा को पता नहा था कि गुरमल उसम छुपकर वठा हुआ ह। यह खत गाव स बहुत दूर भी था। झापडी इख ओर कपास क खत के बीच म था। बहुत ऊची नही था। पता नही लगता था कि यहा कोइ झापडी भा ह। दिन म वह झापडी मे पडा रहता। आने जान वाल आदमी से सतक रहता। रात को गन्न के खेत म सोने के लिए उसने दस बारह गन्ने तोडकर वही छोटी सी खाट डाल ला थी। रात की आर दिन की रोटी उसे वही पहुच जाती थी। अजीब सिलसिला चल गया।

खेतो से ही किसी तरह गुरमेल को मानसा ले जाया गया। बुढलाडे की ओर जानकर नहा गए। मानसा से गाडी मे बैठे। गुरमेल ने अपना भेष बदल लिया था। उसके साथ रल्लवाला बलविदर सिह था। राम ओर नम्बरदार गुरचरन सिह उनसे अलग किसी दूसरी गाडी से बठिडे पहुचे।

बलविदर और गुरमेल कचहरी के बाहर ही कही पीठ घुमाकर बेठे रहे। नम्बरदार और राम ने वकील के पास जाकर कागज तैयार करवा लिए। वकील ने अपनी फीस पहले ही रखवा ली थी। बारह बजे गुरमेल को जज के सामने पेश कर दिया गया। श्याम अपनी फौजी वर्दी पहनकर बठिडे गया था। जज ने उसी समय गुरमेल को पुलिस के हवाले कर दिया। हथकडी लग गई। राम श्याम बलविदर और नम्बरदार वकील से और बाते करके गाव लाट आए।

13

जाट को दो ही चीजे मारती है—बीमारी ओर मुकदमा। आदमी इन दोनो ही परिस्थितियो से हार जाता हे। जाट बीमारी की तो परवाह नही करता छोटी मोटी बीमारियो की बात ही क्या॰ उसके पास अपने नुस्खे भी होते है। शहर के डॉक्टर के पास तभी दोडता हे जब ओर कोइ चारा नही रह जाता। मुकदमे के आगे उसकी एक भी नही चलती हे ओर फिर जाट की इज्जत का सवाल भी तो होता है। उसका यह स्वाभिमान जमीन के आधार पर सिर उठाता है। जमीन के कारण ही वह राजा होता हे। जमीन उसके स्वाभिमान का धुरा हे। मुकदमे मे सजा हो जाने के कारण जिदगी की झझट जो झेलनी पडती है सो अलग। पर जो वकील लूटकर खा जात हे क्लक और पुलिस की नोच खसोट अलग गवाहो की सेवा ओर हमेशा उनके दबाव मे रहना भी एक सजा ही है। जब मुकदमा छिड जाए तब इज्जत का प्रश्न बन जाता है। जमीने गिरवी होने लग जाती है। मुख्य धधे खेती की ओर से ध्यान बट जाता हे।

जाट इर्ष्यालु होता है। साझी क साथ कोइ समझोता नही करता। यदि काइ हमदद लोग बाच मे पडकर समझौता करवा भी दे तो इष्या फिर भी नही जाती। प्रत्यक्ष न सही अप्रत्यक्ष रूप स दबी घुटी इर्ष्या हड्डिया गलाती रहती ह।

नलकार अकेला रह गइ। गुरमल क जल चल जान क बाद उस पना लगा कि पति क्या हाना हे। वह अच्छा था या बुरा था घर का स्वामा ता था। उसक सिर का छाया था। जलकार को इतना डर सजा हान का नहा था जितना भय उस उस पर कत्ल का इल्जाम लगने का था। उसकी भूख मर गइ। दा समय का राटा कवल कटवा कसला जैसी हलक के नीचे उतार लेती पर उसे भूख न लगती। रात का नाद ना आना। नाद आती भी ता उखडी उखडी। जैसे आदमी सोता भा हो आर न भा माता हा। कभा भा चोककर आख खुल जाए। वह आधी रात का ही पा फटना समझकर खाट स उठ खडा होती। आगन म आकर तारे देखने लगता। तारा से ही पता लगता कि रात कितना बाका ह।

जाखल से बठिडे जाने वाली रेल की पटरी हमीरगढ के बिल्कुल पास स गुजरता थी। बुढलाडे से आगे मानसा की ओर एक छोटा सा स्टेशन था नरिंदरपुरा। लाग इसका बगलिया वाली भी कहते थे। हमीरगढ से यह स्टेशन पास मे ही था। यहा पसिजर गाडिया रुकती ह। एक्सप्रेस गाडिया नही रुकती हे। पर गाव के लागो का रुझान बुढलाड की ओर था। पेसिजर गाडी के लिए भी हमीरगढ के लोग बुढलाडे जात थे।

रात भर गाडिया आती जाती रहती हे। माल गाडिया ओर एक्सप्रेस गाडिया। पसिनर गाडिया केवल दिन मे चलती थी। रात को गाडियो की आवाजे सुनना गाव के लागा क लिए आम बात थी। ना उनकी आखे खुलती और ना बेचैनी होती। गाव मे आए मेहमान को जरूर यह अजीब सा लगता था। गाव मे आए नए व्यक्ति की तो आख खुल ही जाती थी। उसे तो लगता जैसे दूर से कोइ शोर गाव मे घुसता आ रहा हो। यह शोर गाव पर बादल के फटने की तरह गिर पडेगा और पूरे गाव को तबाह कर देगा। नए व्यक्ति को लगता जैसे गाडी के शोर से घर की दीवारे काप रही हो छत हिल रही हो ओर कुछ अशुभ घटित होने वाला हो।

छुट्टी लकर आया श्याम जलकोर के पास ही खाट बिछाकर लेटा हुआ था। वहा भीखीवाली लडकी मीतो की भी खाट थी। रल्लेवाला बलविदर भी लेटा हुआ था। पर जलकार को तीनो का कोइ अहसास नही था। कोइ सहारा नही था। वह तो जसे एकदम अकेली हो। वह रोटी खाकर ओर दूध पीकर काफी रात तक बाते करत रहे थे। बाते गुरमेल की ही थी ओर अब किसकी रह गई थी बाते। बातो मे बलविदर ही ज्यादातर सुझाव देता। श्याम उन्हे केवल सुन रहा था। मीतो चुपचाप सबकी ओर देखती रहती। जलकार के लिए ये सभी बाते केवल थोथी थी मन भरमाने वाली। उसके मन मे एक भय बेठा हुआ था। बाते करते हुए बाते सुनते हुए फिर वे सब एक एक करके साने लग गए। पहले मीतो सो गइ। फिर बलविदर खर्राटे लने लगा गया। श्याम चुपचाप बेटा पता नही क्या सोचता रहा। चाची सा जाओ अब सुबह वात करेग। कहकर श्याम ने भी मुह ढक लिया। जलकोर बहुत देर के बाद सोइ।

उखडी उखडी नीद मे उस एक सपना आने लगा। जेसे एक भसा गुरमेल का

पाछा फ़र रहा ह। गुरमल भागा जा रहा ह। पाछे पीछे भसा भागा जा रहा ह। तेजा स दोडता ओर फुफकारता हुआ। गुरमेल इतना नही भाग पा रहा हे। भागते भागते गिर पडता ह। भसा उससे कुछ दूर ही रहता हे ओर ाह पुन उठकर भागने लगता ह। जलकोर उसे बचाना चाहती हे बचाने की कोशिश करती हे। उन दोनो के बीच जा खडी होती हे पर भसा उसके ऊपर से निकल जाता हे। उसे कोइ चोट नही लगती। भेसा जलकौर से कुछ नही कहता। वह तो केवल गुरमेल के पीछे पडा है। जलकौर का कोई बस नही चलता। अत मे भैसा गुरमेल पर चढ जाता है। सीगो पर उठाकर उसे दूर फेक देता हे। जैसे कोई गीली लकडी छत पर से फेक दी जाए बहुत बेदर्दी से। भैसा गिरे पडे गुरमेल के पेट मे टक्कर मारता हे। सीग भोक देता है। जलकौर की चीख निकल जाती है।

वह उठकर बैठ गई। उसके पास बलविदर श्याम और मीतो तीनो बेसुध सोए पडे थे। रात की एक गाडी गाव के पास की धरती हिलाती हुई निकल रही थी। दोबारा उसे नीद नही आती। वह खाट पर आखे खोले उक की तरह बैठी है। रात के अधकार मे उसकी आखो के सामने कई आकार से घूमने लगते है। फिर वह लेट जाती हे ओर सोने का प्रयत्न करती है।

पहले उसे कभी पता नही लगा था कि रात के समय कौन-सी गाडी कब गुजरती है। पूरे गाव के लोगो के लिए ऐसा ही था। पर उसकी नीद ऐसी उखडी उखडी रहती कि हर मालगाडी और हर एक्सप्रेस गाडी उसे उठाकर गुजरने लगी। गाडिया गुजरने के कारण ही उसे रात का पता लग जाता कि यह कितनी बीत गई और कितनी शेष है।

रात को सोते सोते बडबडाने लगती। पता नही किससे क्या कह रही होती। उसके बोलने से मीतो की आख खुल जाती और उसका कधा हिलाकर वह उसे जगाती और वाहिगुरु वाहिगुरु करने को कहती।

जलकौर की मानसिक स्थिति बहुत खराब हो गइ थी। गुरमेल कुछ भी था उसके सिर का साया था। वह नहीं है तो इस ससार मे उसका कुछ भी नही है। उसकी बदौलत ही वह मौज करती थी। गुरमेल उसका खूटा था जिससे बधकर वह इस घर मे सुरक्षित था। पतिहीन ओरतो को सौ दोष लगते हे। पतिहीन औरत नगे सिर ही होती हे। वह सचमुच अकेली रह जाती है। जलकौर को यही डर सताए जा रहा था कि वह कही अकेली न रह जाए।

गुरमेल के खराब स्वभाव पर लानते देती। उसने किसी से भी बनाकर नही रखी थी। ना वह किसी रिश्तेदार को भाता था। ना गाा मे उसकी अच्छी पैठ थी। पता नही काहे की हेकडी थी उसे। उसके खराब स्वभाव के कारण ही दोनो भतीजे घर से निकल गए। शायद यह उसका ही पापी स्वभाव हो कि उनके अपन घर मे कोई बेल तूबडी नही लगी।

रिश्तेदार तो चलो चुप होकर अपने घर मे बेठ गए। इनके साथ भी ऐसा ना हो।

भताजो नें भी झल लिया। घर स निकल गए। भजना बामार रहता था। बामारा उसका हड्डियो मे रच बस गइ थी। वह भी उसके सामने बोलता नहा था। पर वगाना पूत काट कैस बदाश्त कर लेता इसकी ज्यादतिया। चार लागो म बठकर सत स बात कर लता। उस पार बुलाया उसे। कीकर मे से क्या ले लिया' दोनो के लिए यह काकर क्या था मात का सदेशा था। सता वेसे मर गया। गुरमेल को फासी हो जाएगी। बंगाना पर हकडा नही चला करती हेकडी अपने घर मे होती हे।

एक दिन सुबह सुबह सतोष पशुओ को भीतर वाले खूटा से खालकर बाहर आगन मे बाध गया। यहा धूप आ जाती आर पशुओ को सेक मिलने लगता। मीता गोबर-कूडा उठाने लगी। गोबर एक ओर इकट्ठा कर दिया। पशाब फड्डुए से साफ कर दिया ओर सब जगह सुधार दी। गीले स्थान पर तसले मे भरकर रेत बिछा दी। तसले म कुडा भरकर वह स्वय ही उठाकर बाहर खाद के ढेर पर डाल आती। सब काम खत्म करक वह चूल्ह की ओर आई तो देखा कि जलकौर वेसी की वेसी चौतरे पर बैठी ह। जमीन पर ही बेठ गइ है। बाया हाथ ठोढी पर रखा हुआ है। पता नही किधर देख रही ह। क्या देख रहा है। पशुओ के ठडे बदन पर धूप पडने लगी हे। कोने मे एक खाट पडी हे। यहा भी धूप आ गई है। थोडी देर के लिए यहा सब मे धूप होगी।

श्याम पृथ्वीदास के मठ मे राम के पास गया हुआ था। सुबह तडके ही उठकर चला गया। चाचा के बारे मे बाते करनी होगी। बलविदर रल्ले गया हुआ था। श्याम घर लौटा तो देखा कि चाची ठड मे ही बैठी है। वह बोला चाची यहा से उठो उधर धूप मे जाकर बैठो। खाट पर कितनी धूप है। फिर मीतो को झिडकने लगा मीता तूने क्यो नही कहा चाची को धूप मे बेठने को। यहा बेठी ठिठुर रही हे।

श्याम की तेज आवाज सुनकर जलकौर स्वय ही उठी और कोने मे धूप मे जा बैठी। कह रही थी अरे भाई मुझे धूप क्या और छाव क्या। मुझे तो किसी का पता नही लगता? मे तो मिट्टी हो गइ बच्चा। क्यो हो गया मुझे कुछ। लो यहा बेठ जाती हू क्या फर्क पडता है।

पशुओ के गोबर कूडे का काम चूल्हे चौके का काम सब मीता ही करती थी। बहुत होशियार लडकी थी। तगडी और फुर्तीली। घर मे झाडू जलकार स्वय देती थी। बतन माजती दूध मथती दूध सभाल कर रखती भी। सुबह दूध बिलो चुकती ता मक्खन निकालने लगती। मथानी के किनारे से उगली से मक्खन पोछ रही थी। सारी मथानी पोछ ली फिर भी उस पर उगली घिसे जा रही थी। मीतो के हाथ मे झाडू थी। झाडू लगाते लगाते वही बैठ गई और जलकौर को देखने लगी। क्या कर रही ह यह? पहले तो मीतो को हसी आई पर उसने दातो मे चुन्नी दबा ली। फिर जलकौर की तरफ से चितित हा उठी। वह उसके पास गई और कूडा उठाकर एक आर रख दिया। बाली दादी कूडे के मक्खन निकाल लो अब।

मीतो ने कहा तो वह कूडे मे से मक्खन निकालने लगी। फिर मट्ठे म हाथ लगाया।

मक्खन के कुछ ढेले ऊपर आ गए तो वह उन्हे चप्पे पर चढा चढाकर वाहर निकालने लगी।

सते के घर से चोरी छिपे गढीपत्ती की बुढिया जलकोर के पास आती ओर बठकर उसस दु ख सुख की बतियाती। उसको सात्वना देती। कहती तू सशय मत कर। उसका बाल बाका नही हागा। वह वाहेगुरु करने वाला है। इसने कौन सा मारना चाहता था। चोट ज्यादा लग गई ओर वह मर गया। जाटो की यही तो खराबी हे। कानूनो की सा मोरिया होती हे भई। पेसा लगेगा अब। उसे फासी नही होगी सजा हो जाएगी। कितने साला की हो जाए।

बुढियो की हमदर्दी मे से भी उसे भय आता। फासी का शब्द सुनकर ही उसका दिल बैठ जाता। वह आखे मलने लगती। बुढिया आती और उसे इस प्रकार रुलाकर चली जाती। जा बाते उसके मन के धुर भीतर कही पडी होती बुढिया वे ही बाते कहती। तब तो उसे य बाते बुरी लगती जैसे कोई उसकी हड्डियो पर कोइ नहनी मारता हो बात उसे चुभती पर बाद मे उसका मन हल्का हो जाता। रोने से चिता का विष बाहर बह आता। पर कुछ समय ही ऐसे बीतता चिता फिर होने लगती।

घर मे तीन जने और थे चौथा सतोष भी। उसे वे चारो भूत प्रेत दिखते थे। स्वय भी उसे लगता जैसे सूने उजाड घर मे वह एक भूत हो। जब घर का कोई व्यक्ति उसे आवाज देता कोई बात कहता तो उसे लगता जैसे दूर से किसी की आवाज आई हो। मीतो ही उससे ज्यादातर बातचीत करती थी। श्यामा और राम अलग बैठकर जब उससे गुप्त बाते करते तो वह उनकी हा मे हा मिलाती रहती। बार बार यही कहती जमीन चाहे सब बेच दो भइ पर तेरे चाचा का कुछ हो ना।

नही चाची हिम्मत रखो। वकील बडा किया गया है। श्याम कहता।

जब नम्बरदार अपने साथ है इसकी पहुच बडे बडे अफसरा तक है। चाचा को कुछ नही होगा। राम उसे धीरज धरवाता।

14

सते के दा बेटे थे। दोनो का ध्यान कमाइ की ओर रहता था। दोनो शादीशुदा थे। बाल बच्चो वाले थे। स्वभाव उनका बहुत नर्म था। पत्ती या गाव मे कही किसी के साथ कभी भी लडे झगड नही थे। यह गुरमेल के साथ कीकर का झगडा जो सते ने कई वर्षो से छेड रखा था बेट इसके विरुद्ध थे। उन्होने पिता को कइ बार समझाया था कि बापू, छोडो कीकर साले का क्या हे। क्यो पडोस से झगडा मोल ले रहे हो। पर वह मान नही रहा था। समझता था धमकियो से गुरमेल झुक जाएगा। कीकर मे से आधा आधा कर लेगा। दोना बेटे सुशील ओर शात स्वभाव के थे। गुरमेल से आदरपूर्वक मिलते थे। श्याम और

राम के साथ उनका अच्छा उठना बठना था। खत आर पडास का कद्र करत थ। घर यद्यपि उनके दूर दूर थे पर खेत पास पास होन कारण व भी करीब ही थ।

अब उनके पिता का कत्ल हो गया था। वे चुप कैसे बेठत। एक प्रकार स उनक पिता सता सिह ने रिश्तदारी के ठहर हुए पानी मे ईट मार दी थी। कत्ल हाकर उनका जान मुसीबत मे डाल दी। यदि वे चुप रहते हे तो बदनामी हाती थी। यदि व मुकदमा लडते हे तो खचा होगा। खेती का सब काम धधा अब लडको के सिर आ गया था। सता जरा सी बात मे कत्ल होकर उनके लिए बडी भारी सिरदर्दी खडी कर गया।

ऐसा नही था की उन्हे पिता के मरने का दु ख नही था। पिता का किसका दु ख नही होता। वह अगर स्वाभाविक मृत्यु मरता तो सचमुच अफसोस होता। पर अब वह दानो भाइयो को एक अजीब दुविधा मे डालकर चल बसा था। कातिल को फासी हो उम्रकेद हो या बरी हो जाए उनके लिए मुकदमा लडना जरूरी था।

उन लोगो ने भी बठिडा जाकर अपना वकील कर लिया। भाग सिह एक पुराना वकील था। कोइ मुकदमा जीत जाता कोइ हार जाता। कानूनी लडाइ लडता। कानून का बहुत ज्ञाता था। प्राइवेट तौर पर जजो से मिलता उनको दावते देना उसका काइ मतव्य नही था। वह हक की लडाई लडता था। पैसे भी वाजिब लेता था। मुकदमा जात जान पर बहुत खुश न होता मुकदमा हार जाने पर बहुत गम न करता। उसके लिए हार-जीत सब साधारण सी थी।

मुकदमा शुरू हुआ। सते के लडको के साथ भी लोग थ। उनके निकट के लोग जिनका गुरमेल के घर से कोई वास्ता नही था। सते का घर गुरमेल के घर से पत्ती की दूसरी ओर था। ऐसे ही गुरमेल के हिमायती वे थे जिनका सते के यहा से कोइ खास वास्ता नही था। नम्बरदार गुरचरन सिह का तो सते के साथ वैर-विरोध भी खूब था।

तारीखे पडने लगी। गवाहिया हो चुकी थी। वकीलो की बहस कइ बार हा चुकी थी पर जज नई तारीख दे देता। तीन तीन चार चार महीने की तारीख पडती। दा पक्ष पूरा दिल थामकर बठिडे पहुचते थे। रोटिया पकवाकर साथ ले जाते थे। आम का अचार और प्याज। कभी कभी कोई सूखी सब्जी भी। अजीब तरह का युद्ध छिडा हुआ था दानो घरो मे। हर तारीख पर गुरमेल को हथकडी लगाकर लाया जाता था। पुलिस की गाडी मे से उतरकर जब वह जज की कचहरी तक जाती तो सिपाही उसके आदमियो पर रहम करके उन्हे गुरमेल से एकआध बात करने की अनुमति दे देते। इस रहम की कीमत होती थी जो उन्हे पहले ही देनी पडती थी।

श्याम एक महीने की छुट्टी पर आया था। एक महीना क्या था थोडे ही दिनो मे खत्म हा गया। पर इस महीने के भीतर वह बहुत कुछ कर गया। गुरमेल का जज के सम्मुख पेश करवा दिया। नम्बरदार गुरचरन सिह को साथ लेकर वकील गुरदेव सिह के साथ सब बाते तय कर ली। घर की अदरूनी बाते भी थी जिनका राम ओर श्याम का पता था और किसी को पता नही था। इन बातो का असर बाद का होता जिससे राम

आर श्याम का जिदगा पर खराब प्रभाव पडता। इन वातो ‌ बार म श्याम बहुत साचा करता था राम इतना नहा सोचता था।

जब एक गुरमल पेश नही हुआ वलविदर हमीरगढ मे ही बठा रहा। बातचीत म वह पूरा तरह हिस्सा लता था। अलग बठकर जलकार को नक सलाह देने लगता। मोसी मासी करता रहता। जसे वह जलकोर के सबसे ज्यादा निकट हा। जैसे वही एक मासी का सच्चा हमदद था। जलकोर भी उससे गापनीय बात कर लेती। भीखी वाली लडकी मातो वही थी। वह जलकार के आगे पीछे लगी रहती। घर का सारा काम उसी ने सभाल लिया था। जब स कत्ल हुआ वह स्कूल नही गइ। स्कूल मे उसकी कोइ खास रुचि भी नही थी। बलविदर ओर जलकोर जा बाते करते मीतो सब श्याम को बता देती। श्याम को तो पहले से ही डर था। उसका तो उसी दिन माथा ठनका था जिस दिन उसने देखा कि रल्लेवाला बलविदर यहा है।

वह एक दिन भीखी गया। रात काटी। करनेल ओर वह कत्ल की बाते करते रहे। पास मे जोरा ओर फतह सिह भी आ बेठे थे। फतह सिह तो पहले भी नही पीता था। उस दिन जोरा ने भी नही पी। करनेल ओर श्याम पीते रहे। पीने की तरह ही पी बाते करते करते उतरती गइ जेसे चढी ही न हो। चाचा की जिदगी का सवाल था। सबसे बडा सवाल था जमीन-जायदाद का। अब जबकि गुरमल तो जेल मे है पता नही उसका क्या होगा बाद को जमीन जायदाद पर गिद्ध झपटेगे। सब लूटने-खाने को तैयार बैठे है। श्याम यही बाते करने भीखी आया था। अत मे तीनो भाइयो ने यही निर्णय किया कि फतह सिह को हमीरगढ भेजा जाए और रल्ले वाले बलविदर को किसी न किसी प्रकार से वहा स निकाला जाए। वह चाची जलकोर के बहुत निकट होता जा रहा था।

दूसरे दिन भीखी से चलने से पहले श्याम ने अलग बैठकर तेजो से बाते की। बताया कि चाची को दूसरे आदमी के सहारे की जरूरत है। पहले दिन से ही उसका यही हाल है। राम का और उसको तो तभी से पता था जब वे छोटे छोटे ही थे कि चाची उनके बाप को किस प्रकार नीबू की तरह निचोडे रखती है। उनकी मा उसी दुख के मारे मरी थी। चाचा के पास तो केवल गुस्सा ही गुस्सा था। पहले उसने उन दोनो भाइया को घर स निकाला और अब यह कारगुजारी कर डाली। आदमी ही मार डाला। श्याम ने बताया कि उसके पिता मरे तो चाची ने चमार को फसा लिया है। सतोष साझी को वह इसलिए अलग नहो करने देती। उसे इतना खिलाती पिलाती हे कि देखा नही जाता। देसी घी की पीपी अपनी जान मे तो चोरी से देती हे पर पता लग जाता हे हमे। चोरी की ता चुगली दीवारे भी कर देती हे।

तजो आखे मे मुस्करा रही थी। कहने लगी मे तीन को सभाले हुए हू, तरी चाची न ना को सभाला तो क्या हो गया। मरा तो अब चौथा तू भी ह।

नही यह बात नही भाभी। श्याम गम्भीर था मुझे बात कहते हुए शम लगती है। यह जो हमारा बडा भाइ हे फतह सिह उसमे कोई दम है?

क्या मतलब?

यह केसा हे?

मै समझी नही।

इसमे काटा ह?

तेजो ने आखे छोटी कर ली। पूछा तुम्हारा बाते ता मेरे पल्ले पट नहा रही ह।

अरे भई वाह! मै पूछ रहा हू कि अब भी ह यह तरे साथ कि बहुत बूढा हा गया हे?

धत् तेरे की! मैने कहा पता नही क्या पूछते हो। वह जार से हसी। फिर बाला बुड्ढा खुड्डा कोई नही हे यह। यह तो तुम सबसे ज्यादा तेज हे। देखने म खूसट लगता है।

तब तो एक बात है भाभी। मै तो कह नही सकता। तुम इसमे बात करो। म इसे हमीरगढ ले जाऊगा। इससे कहो चाची का चमार से पीछा छुडाए।

यह केसे छुडाएगा पीछा!

जब यह वही रहने लगेगा चमार अपने आप भाग जाएगा।

यह कैसे होगा। वह तो इसकी बुआ लगती ह।

वह कौन सी सगी बुआ हे इसकी। सीधी बात क्या करती ह भाभी। इनका सबध अपने आप हो जाएगा। तुम थोडा-सा इसके कान मे भर दा जब तक चाचा का फैसला नही हो जाता फतह सिह को हम वही रखेगे।

'चलो यह तो ठीक है। मे कह दूगी। जो तुम चाहते हो। पर मेर पल्ले यह नही पड रहा है कि तुम यह क्यो चाहते हो?

बस मै चाहता हू यह।'

चमार को दूर करने के लिए?

हा यह बात भी हे।

और कौन सी बात है?

और भी सुन लो। मै तो चला जाऊगा छुट्टिया खत्म होने वाला है। लौटकर कब आऊ कोई पता नही। राम को इन बातो की कम समझ हे। यदि फतह सिह का चक्कर चल जाए चाची के साथ तो अच्छा हो। फिर अपने पक्ष की बात हे। फिर साला रल्लेवाला दूर हो जाएगा। मुझे उसका डर हे। यदि वह हमीरगढ पर दात लगाए रहा तो ।

भई तुम्हारी चाची कही रल्लेवाले के साथ ।

नही यह बात नहीं हे। इतना तो ख्याल रखती हे वह। वह तो उसका भाजा-जवाइ है। उसके साथ यह बात नही हो सकती।

तो फिर केसा डर हं रल्लेवाले का!

मुझे यह डर हे भई यदि रल्लेवाला हमीरगढ आता जाता रहा तो चाची कही भाजी के किसी लडके को हमीरगढ ना ले आए। वह चाचा के कत्ल-केस मे बहुत दिलचस्पी

ल रहा ह। यदि ग्ल्ल स कोइ वालक आ गया ता यह यहा रहन लगेगा ओर फिर पाच किल्ल नमान गड समझ लो। चाचा चाचा तो पहल ही बाते करत रहते थे।

लो म अब समझी। तुम पहल ही कह देते सीधी सी बात। यू ही इधर उधर क पतर बदलत रह।

तुम्हारे बन्च जिए। भाभी तुम यह सब बात फतह सिह से बता दो। यू ही न वहा जाकर सकाच कर। म तो इसालिए उसे लेने आया हू। ओर क्या है अफीम की गाली ज्यादा खा लिया करेगा दूध घी यहा इफराद म है। जरा सी कुडी फसाइ नही कि चाची का इसकी सवा करत दख लेना।

अरे श्याम ससुरी जमीनो के झगडे दखो। मै भी तो जमीन के पीछे ही तीन तीन खसमा स शरीर नुचवा रही हू। अब तुम ही देखो जमीन के पीछे केस केसे दाव पेच करत डोल रहे हो। तेजो उदास हो गई।

यही तो हे। हम दोनो भाई फतह सिह का उपकार नही भुलाएगे। चाचा का कुछ पता नही क्या होगा। दस किल्ल एक ही साथ रह जाएगी।

श्याम तेजो से अलग हुआ तो तेजो फतह सिह को पकडकर बेठ गइ। उससे पूरी बात बताइ। फतह सिह मूछो मे हसे जा रहा था। पूरी कहानी सुनकर बोला मेरी काई उमर ह? यू ही पागलो जैसी बाते किए जा रही है।

उमर को क्या हुआ है तुम्हे? जब मेरे पास आते हो गू खाने तब तुम्हारी उमर होती हे?

तुम्हारी बात और है। नही मैं यह काम नही करूगा। मे श्याम के साथ नही जाऊगा। फिर बोला अच्छा! इस काम के लिए ले जा रहा है मुझे यह।

बुआ के बंटे का काम है यह करना ही पडेगा। ओर कोइ बात नही हे। यह इनकी जमीन जायदाद का सवाल हे। तेजो गम्भीर होकर कह रही थी।

यह अच्छा काम है भइ। अब मे इसी काम के लिए रह गया? कोइ ओर बदोबस्त कर ले। उस रल्ल वाले के बहन के यार को पचास मारे जूतिया। अपने आप चला जाएगा।

यह बात उसे भगाने की इतनी नही है। श्याम की चाची को बस मे रखने की यह बात है। उसकी यही कमजोरी है। जैसा कि ये कहते हे उसको बाहो मे भीचकर रखने की बात हे। तब यह तुम्हारी मानेगी।

बातचीत करते करते उन्हे दुपहरिया हो गई। श्याम फतह सिह को साथ लेकर ही लाटा। रास्ते मे उन्होने कोइ बात नही की। भीखी से बस पकडी बुढलाडे जाकर उतर गए। यहा से फिर पेदल चलकर हमीरगढ आए।

श्याम ने जा योजना बनाइ थी। वेसा ही हुआ। फतह सिह बलविदर का यू हा लज्जित करता रहता। श्याम छेड छाड हसी मजाक पर उतर आता। कभी कभी उनमे राम भी आकर शामिल हो जाता। व तीन बलविदर अकेला। चाची बीच मे बोलती तो

उधर माता बालने लग जाती। वह अपन ताऊ चाचा की हिमायत करता। आखिर बलविन्द्र सिह भाग निकला। जाते जाते वाला अच्छा मोसा म ता चलता हू अपना घर रखू। अब म यहा बठा हू। अब तो य सब ह ही। मे आर भूरा फिर कभा आएगे।

अच्छा भड जीता रह। तुम्हार मासा का तो यहा देखा क्या होना ह। वान छिट गए न पसा लगेगा लग ही रहा हे। आगे उसका भाग्य हे। नलकार आख भर खडा थी।

श्याम अपनी छुट्टी बिताकर चला गया। वह फतह सिह को पक्की तरह समझाकर गया कि वह हमीरगढ से हिलेगा नही। दोना भाइ उसका उपकार नही भूलेग। फतह सिह ने हिम्मत बधाइ कि वह जरा सी भी चिता न करे। सब कहानी उसकी समझ मे आ गई ह। बस अब ठीक है। वह निश्चित होकर अपनी ड्यूटी पर जाए। बाद का वह सब सभाल लगा यहा।

मुकदमा पूरे दा साल तक चला। उनकी खेती का काम उसी तरह स चलता रहा। सताष ही साझी था। फतह सिह उसके साथ काम करवाता। सतोष जलकोर के आस पास चक्कर मारता रहता था। फतह सिह को पता था। वह उसको रोकता टाकता नही था। फतह सिह स्थानापन करता। साचता चमार का क्या डर है। आता रहे। इसका जमीन-जायदाद से क्या सबध है। वह स्वय जलकौर के एकदम करीब है। वह हर बात उसस पूछकर करती है। बीच मे एक-एक महीने की छुट्टियो मे श्याम फिर आ गया था। राम पृथ्वीदास क मठ पर बाबा चिब्भडदास के पास रहता था। वह भी घर का चक्कर लगाता था। खर खबर रखता। तारीख पर फतह सिह जाता था। नम्बरदार गुरचरन सिह ओर राम नहा जात थे। वकील गुरदेव सिह अपनी पूरी शक्ति लगा रहा था। उधर उनका वकाल भाग सिह नए बिन्दु निकालकर लाता ओर जमकर बहस करता था।

गुरमेल का बयान था कि वह जब खेत मे पहुचा तो सते को गाली दी ता उसने सिर की ओर अपना कसिआ चलाया। वह तुरत उछलकर एक आर हट गया। अगर फुर्ती स एक ओर ना हटता तो कसिआ उसके सिर मे लगता आर उसका सिर फट जाता। वह मर जाता। दूसरा कसिया उसन फिर ऊपर उठाया। वह उसक ऊपर हा चढा आ रहा था। यदि वह अपना बचाव न करता तो सता उसे मार दता। उसने तो अपने बचाव मे गडासा उस पर चलाया ताकि वह डर जाए और उसका गुस्सा खत्म हा जाए। उस मार डालने का उसका बिल्कुल इरादा नही था। सच बात तो यह हे कि सते क वार उस लग नही ओर उसने जो वार किया वह सते को लग गया।

जज ने निणय दिया गुरमेल को उमरकद हो गई। दोनो पक्ष हाइ कोट म भी जाकर झगडते रह। अपाल गुरमेल की तरफ से की गई थी। पर हाइ कोट ने बठिड वाले जज का निणय कायम रखा। आखिर म दोना घर सतुष्ट हो गए। सते के बट कहते डाल रहे थे कि बीस साल के लिए ठुकवा दिया गुरमेल को। जेल मे से अब उसकी हड्डिया हा बाहर आएगी। बीस साल कोइ कम होत है। जलकौर बुढियो से बाते करती तीन

साल तो बीत हो गए है। रह गए बाकी दस ग्यारह साल। दस ग्यारह साल का क्या है यह भाग। अभी कौन सा वह बूढा हो गया है। शुकर है फांसी नही हुई।

इन तीन वर्षो मे बलकार ने दो किल्ले जमीन गिरवी रख दी थी और क्या करता वह? पैसे और कहा से आते? पैसों की तो जरूरत थी। पहले दो साल तक बठिंडे मे खर्च होते रहे फिर एक साल चण्डीगढ मे।

15

राम उदास रहता था। यह बात नही कि मठ मे उसकी पूछताछ नहीं थी। चिब्भडदास का वह विशेष सेवक था। सब कुछ राम के ही हाथ बात था। केवल पैसे चिब्भडदास अपने पास रखता था। शेष सब खाना दाना कपडा लत्ता सब राम के जिम्मे था। किसी को कुछ दे किसी से कुछ ले यह सब उसकी जिम्मेदारी थी। बाबा पृथ्वीदास की समाधि पर जो चढावा चढता था वह सब पैसे उठाकर राम ही चिब्भडदास को देता था। कई श्रद्धालु लोग मठ को दान पुण्य के गुप्त पैसे दे जाते थे। वह पैसे पहले राम ही लेता था फिर चिब्भडदास को दे देता। चिब्भडदास उस पर पूरा विश्वास करता था। फिर आए गए साधु संतो की सेवा आदि का काम था वह भी राम के जिम्मे था। उनको अच्छा खाने पीने को देना रात बिताने के लिए सुखदायक बिस्तर घडी घडी पूछते रहना और किसी चीज की जरूरत हो तो बताए? और कोई सेवा जी।

राम अपनी मर्जी से कहा भी कुछ खर्च आता उसे कोई रोक टोक नही था। खर्च करके वह चिब्भडदास से बता देता था। इतना ही बहुत था। उसने कभी कोई बदनामी वाली बात नही की थी। गाव मे उसके चरित्रवान होने की धाक थी। मठ मे हर ओर उसकी प्रशसा होती रहती थी। पर पता नही क्यो वह उदास रहता था।

वह सोचता उसे जबरदस्ती तो किसी ने साधु बनाया नही था। वह अपनी इच्छा से घर से निकला था और बाबा पृथ्वीदास के मठ की शरण मे आ गया था। उसे जीवन मे कोई अभिलाषा शेष नही रही थी इसी कारण वह साधु बना था। जिस आदमी की आशाए इच्छाए समाप्त हो जाए वह साधु बन जाता है। साधु बन जाने मे पहला कारण उसका बाप था। उसके बाप का अपना कोई अस्तित्व नही रह गया था। ऐसी स्थिति उसके बाप की अपनी ही करनी से हुई थी। वह मा को छोडकर चाची के वश मे हो गया। चाची ही उसके लिए सब कुछ हो गई। चाची के वश मे आकर उसने स्वय को समाप्त कर लिया। जिस आदमी का अपना कोई अस्तित्व न रह गया हो वह अपने पुत्र के लिए क्या सोच सकता है या कर सकता है। दूसरा कारण था उसका चाचा। चाचा उसको पढाने के लिए बिल्कुल राजी नही था। वह उसे खेती के काम मे रगडना चाहता था। यदि कभी वह उसके साथ काम करवाने के लिए खेत पर जाता तो भी वह

उस यू हा घूरता डपटता रहता था। चाचा उसस किसी प्रकार भा खुश नहा था। नासग कारण था उसका अपना भाग्य। उसका नसाब। उसक भाग्य म पढाइ नना लिखा था। उसका हाथ कट गया यह भा उसका भाग्य था उसका खराब किस्मत था। हाथ कट नान क कारण उस काइ लडका न दता। हाथ के कारण वह पारिवारिक जावन स वचित रह गया। जब उसका पारिवारिक जीवन हा काड नहा ह ता उस साधु ना भपन भाप होना ही पडा। यह साली साधुगीरी ही उसका नसीब बनकर रह गइ।

चाचा अपनी करनी का फल उमर कद के रूप म भुगत रहा ह। पर जो कम उसने हम दोना भाइया के साथ किए उसी कारण ही हमन घर छाडा इस करना का सजा उसे कोन देगा? यह जा मुझे साधुगारा की सजा मिला हुइ ह इसके लिए मरा कसूर क्या हे?

चाची जलकोर एक कडी हे जिस कारण हम दानो भाइ घर से किसा न किसी तरह जुडे हुए हे। घर से जुडकर रहने का भी एक अथ हे यह सब श्याम क खाम ख्याल ह। कहता है—उसका विवाह होगा। फिर सम्पूण दस किल्ले का वह अकला स्वामा हा जाएगा। चाचा चाची स बनाकर रखना चाहिए। यदि वे दाना भाइया से दूर गए तो अपने हिस्से का पाच किल्ले रिश्तेदारी मे से कोइ लडका लाकर उसके नाम कर देगे। पाच किल्ले की लालच ने उन्हे कितने नीचे ला पटका हे।

चाची को हमेशा दूसरे के मास का स्वाद मदमस्त किए रहता हे। दखा जाए तो उसे अपनी किसी औलाद का कोइ दु ख नही है। उसने शायद कभी अनुभव ही नहा किया होगा कि वह पुत्रवती नही हुइ। उसके आगन मे उसका अपना कोइ बच्चा क्या कभी खेलता नही दीखता। उसे तो केवल दूसरे के मास की तलाश है। पहले बापू का हडिडया चूसती रही। वह मर गया तो सतोष चमार ही उसका सब कुछ हो गया। केसे घी की पीपी उसके यहा भेजती रहती है। उसे साझे से अलग नही होने दती। कहती हे—इसके हाथो मे बरक्कत हे। जब से आया हे कितना अनाज पदा होन लगा हे। किसी को क्या पता कि साले चमार के किसमे बरक्कत हे। अब तो दो हा गए। एक वह भीखी वाला चवर दाढी वाला श्याम ले आया है। श्याम का भी अलग हिसाब ह। अग्रेजा जेसी बुद्धि ह ससुर की। चाची अब फतह सिह क गुण गाती रहती हे। बूढी हडडी पता नही साला क्या खाता है। चाची उसे स्वय दूसर मुहल्ले से अफीम लाकर देती हे। कहती हे—अफीम खाए बिना बेचारे के हाथ पेर नही चलते। चाचा को यह सुख ह कि सताष की प्रतीक्षा करनी पडती है फतह सिह हर समय उपस्थित रहता है।

चाची उसका बहुत मोह करती हे। उन दोनो भाइयो का मोह करती हे। अपन बेटो की तरह ही समझती है। पर वह जो भीतर ही भीतर करती हे आर जिदगी भर से करती आ रही ह उसके इस घिनाने किरदार स उसे सख्त नफरत ह। क्या नहा जानता वह। उसे सब पता हे। श्याम को भी सब पता हे। पर वह दोनो भाइ पाच किल्ले जमीन की लालच मे कुढते रहते—कहते कुछ नही।

वह जब भी अपने घर जाता है घर उसे अपवित्र जैसा लगता है। जैसे यह कोई पारिवारिक घर ना होकर चाचा के व्यभिचार का कोठा हो। इस घर में चाची के व्यभिचार की गंध आती है। भेडो के बाड जैसी गंध। क्या असर पड रहा होगा बेचारा उस भाखा वाली कन्या पर? जैसे उन दोनो भाइयो को चाचो के कर्मो का पता है वैसे ही माता को भी पता लग रहा होगा कि बुआ जलकोर कितनी दुष्ट औरत है।

चाची को चाचा के उम्रकेद का शोक नही है। उसे तो अब खुलकर खेलने का अवसर मिल गया है। अब दो दो खसमो को झेलती है। चाचा की टोका टाकी खत्म हो गई। आंगन निर्विघ्न हो गया नही तो चाचा दिनभर घर मे चिडचिड करता रहता था। नाक मे दम किए रहता था। और नही तो जानवरो में भी गालिया देता रहता। चाचा ने जो पैसा चाचा के मुकदमे मे लगाया उसके अलावा दो किल्ले जमीन भी गिरवी रख दी यह सब लोकाचार किया। यह इस लिए भी किया कि कही चाचा को फासी न लग जाए। उमरकेद के लिए उसे कोइ चिंता नही हे। उमरकैद का तो यू ही नाम है। असल म कैद चौदह साल की मुश्किल से होती है उसमे भी कटौती होती रहती हे। चाची तो अब छुटकर आ जाएगा। सात आठ साल बाकी है।

चाची के साथ चाचा कौन सा रहम करता था। वह उन दोनो भाइयो को ही नही मारता पीटता था चाची पर भी कभी कभी हाथ उठा देता था। जरा सी बात पर क्रोधित हो उठता और चाची की हड्डी पसली एक कर देता। चाची हाय तौबा नही मचाती थी। मार खाकर चुप हो जाती थी ओर घर के काम धंधे पूर्ववत करती रहती थी। चाची का व्यक्तित्व अजीब तरह का था। चाचा की मार का जहर वह बापू के साथ सहवास करके उतार लेती थी। चाची का बदला लेने का यह विचित्र ढंग था। अब भी शायद वह संतोष ओर फतह सिंह को भोगकर चाचा से बदला ही ले रही हो। चाचा भी क्या था उसका गुस्सा दूध का उबाल था। पगले के मन मे पता नही कौन सी कडुवाहट के बीज बोए हुए थे। वह एक बारगी तो आग बगूला हो उठता फिर एकदम शांत का शांत। ठहरे हुए पानी की तरह शांति छा जाती उसके शरीर मे। संते की हत्या करके वह जेल मे ठहरे पानी की जिंदगी भोग रहा था।

राम सोचता उसका अपने घर से अब क्या संबंध है? हमीरगढ मे भी उसका क्या अस्तित्व हे? वह एक साधु लडके के अतिरिक्त कुछ भी नही हे। ऐसे साधु लडके गाव मे नित्य आते जाते रहते है मांगते खाते और गलियो की धूल फाकते। बुढिया की फटकार सुनते और अमानवीय व्यवहार बदाश्त करते हुए। बाबा पृथ्वीदास के डेरे मे भी क्या धरा हे उसके लिए? अंधी सेवा के सिवाय और कुछ नही है। चिमभडदास का मोह एक ऊपरी दिखावा हे मुलम्मा हे। यह मुलम्मा कभी भी उतर सकता था।

विशम्भर मुनि एक रमते साधु थे। वह ज्यादातर हरिद्वार मे रहते थे। हरिद्वार जाकर भी वह एक मठ में नही टिकते थे। जन्म से वह पंजाबी थे और पंजाब के मठो मे ही वह घूमते फिरते थे। हिंदी संस्कृत ग्रंथो के ज्ञाता थे। जीवन का गहरा अनुभव था उन्हे।

उनकी अपनी भाषा म पजाबी मिश्रित हिंदी होती थी। वह गुरमुखी लिपि म छपी रचनाए भी पढ लेते थे। पता नही वह कहा कहा पढे थे। किस गाव के थ या किस शहर के थ किसी को इस बात का कुछ पता नही था। ना वह स्वय बताते थ। कोइ पूछता भी तो गोलमोल उत्तर दे देते थ। कोइ पूछता जन्म स्थान कहा का ह महाराज?

पूरी पृथ्वी अपनी मा ह। उनका उत्तर होता था।

किस जाति मे जन्म हुआ था क्या धम ह?

मनुष्य जाति मे जन्म हुआ आर धम मानव धम ह अपना।

उपदेश देने लगते– सभी लोग उस परमात्मा की जाति के ह आर हम सभी का धम एक हे। धम एक शक्ति का नाम ह। यह शक्ति मनुष्य के लिए पवित्र (सत्यम्) भय स मुक्ति दिलाने वाली (शिवम्) आर सुदरता प्रदान करने योग्य ह (सुदरम्) दूसरे शब्दो मे मनुष्य को अधकार से निकालकर उजाले आर ज्ञान की ओर ले जाने वाली शक्ति का नाम हे धम ओम् सत्यम् शिवम् सुदरम्।

विशम्भर मुनि हमीरगढ के भी चक्कर मारा करते थे। कइ कइ घटे वह चिब्भडदास के साथ ज्ञान की बाते किया करते थे। उन्हे किसी प्रकार का लोभ लालच नही था। राम उनकी बहुत सेवा करता था।

उनको अच्छा भोजन करता। रात को उनके पाव दबा देता। पीठ दबा देता। सर्दी होती तो नहाने को गम पानी करके दे देता। गर्मी का मोसम होता तो नल स बाल्टिया मे पानी भर देता। उनके वस्त्र भी धो देता था। विशम्भर मुनि राम को आशीषे देते थ। उसके अच्छे भविष्य के लिए उसे ज्ञान की बाते बताते। जब वह मठ से प्रस्थान करन लगते तो चिब्भडदास उनको कोइ न कोई वस्त्र अवश्य देते थे। चोले का भगवा कपडा कभी कम्बल जूतिया मगावा देत। कुछ पेसे भी दे देते। हर आए गए साधु के साथ चिब्भडदास ऐसा ही सद्व्यवहार करते थे। विशम्भर मुनि राम के साथ अलग बैठकर भी बाते करते थे। इस बार जब वह आए तो उन्होने देखा रामदास की आखो म वह पहल जेसी चमक नही थी। चेहरे पर उदासी के चिह्न थे। उसकी बोल चाल म ढीलापन था। वह पूव की भाति फुर्ती से चल फिर नही रहा था। पूछा तो राम ने उत्तर दिया बस यू ही जी मन कुछ व्यथित रहता ह।

क्यो भाई क्यो खराब रहता हे तेरा चित्त। क्या हो गया तेरे चित्त को? विशम्भर मुनि ने जिज्ञासा की।

मन उखडा उखडा सा लगता ह। कही भी मन नही लगता। ना गाव अच्छा लगता हे ना मठ। जी करता ह कही भाग जाऊ।

कहा जाएगा भाइ मन की तो यही स्थिति रहेगी। कही भी जाओ मन तो साथ रहेगा।

राम आर कुछ समझा नही सकता था। उसे जो कहना था कह दिया। विशम्भर मुनि फिर बोले कइ बार ऐसा भी होता हे कि मन स्थान परिवतन करने से बदल जाता

ह। जस जल एक ही स्थान पर रुका रह ता उसम स दुगन्ध उठन लगती हे। पाना ता गति मे रहना चाहिए तभी साफ सुथरा रहेगा। एसे ही मनुष्य को गति म रहना चाहिए। यह गति स्थान बदलकर भी प्राप्त की जा सकता हे। ऐसा भी होता हे कि एक स्थान पर रहकर भा मन को गति मे रखा जा सकता ह। फिर विशम्भर मुनि न सीधा प्रश्न किया तुम मरी एक बात मानोगे रामदास?

हा आज्ञा कर। मानने वाली होगी तो क्यो नही मानूगा।

तुम स्थान परिवतन कर लो।

केसे जी मै समझा नही।

चलो तुम्हे कही और छोड आऊ।

रामदास सोच मे पड गया। दूसरे दिन चिब्भडदास की चोरी उन्होने पता नही क्या मत्रणा की दरी के तने वाले झोले मे दो चार कपडे रखकर रामदास विशम्भर मुनि क साथ जाने को तैयार हो गया। चिब्भडदास से इतनी ही बात की महाराज जी मै मुनि जी के साथ हरिद्वार जा रहा हू। कुछ दिन लग जाएगे।

रामदास की यह बात सुनकर चिब्भडदास को बहुत आश्चय हुआ। यह क्या? रामदास तो कभी कही हमीरगढ के क्षेत्र से बाहर ही नही गया था। बठिडे अपने चाचा के कत्ल के केस के समय दो चार बार हो आया तो हो आया। यह एकदम से इसका मन कसे हरिद्वार जाने को हो गया? उसने राम को रोका टोका नही। वरन हसकर कहा तेरी इच्छा ह भाइ। हम तुम्हे क्यो रोकेंगे। पर जब तेरा मन प्रकृति के दृश्यो से भर जाए तब लोट आना। फिर प्रश्न किया तुम्हे यहा रहकर कोई कष्ट तो नही हो रहा है?

नही महाराज जी। मै तो बहुत खुश हू। ऐसी कोई बात नही हे। राम झूठ बोल गया।

चिब्भडदास ने स्वय उठकर विशम्भर मुनि से कहा मुनिश्री रामदास को ले तो जा रहे ह हमारे बच्चे को कब वापस लेकर आएग।

महाराज जी म कहा लेकर जा रहा हू उसे यह स्वय मेरे साथ जा रहा हे अपनी इच्छा स। अपनी इच्छा से लौटेगा। इससे पूछ लीजिए। वह अपने जिम्मे कुछ भी नहा लना चाहते थे।

चलो खेर अच्छा पुत्र! चिब्भडदास ने राम के कधे पर हाथ रखा। उसे कुछ रुपए दिए। बोले यह ल जाओ। तुम्हे आवश्यकता पडेगा। ओर वोलो आर दू?

राम आर उदास हो गया। आखे भर आई। मुह दूसरी ओर कर लिया।

चिब्भडदास ने इस बार उसके चेहर की ओर देखे बिना उसका कधा थपथपाया।

व कइ दिन हरिद्वार म रहे। ऋषिकेश चले गए। राम को नए से नए अनुभव हो रह थ। वह उस भर भरे ससार मे अपना स्थान ढूढ रहा था। कभी कभी यह भी लगता कि वह उसका ससार बिल्कुल नही हे। सभी साधु सत एक भटकन के वेग मे पागल से डाल रह ह। किसी का किसी से काइ वास्ता नहा था। किसी को किसी की कोइ परवाह

नहा था। लाग जस पछतावो की यानि भोग रह हा।

विशम्भर मुनि न एक दिन उससे कहा चलो पजाब चलत ह। गावा म घूम फिरग। यहा पर तो मेरा भी जी भर गया ह।

हरिद्वार से बस म बेठकर सहारनपुर म उतर गए। दो दिन सहारनपुर म हा एक मठ म रुके रहे। वहा से अम्बाला आ गए। कहा जाने की कोइ जल्दी नहा था किसी बात की कोई चिता नही थी। अम्बाले स गाडी मे बठकर पटियाले आ गए। पटियाले म इमलीवाले मठ म कई दिन रहे। वहा से फिर कइ मठो मे होते होते बरनाल आ गए। बरनाले मे इधर उधर कइ मठ थे गावो मे। वे सब जगह एक एक रात गए। रोडू शाह मडी के पास नए निर्मित मठ के बार मे ज्ञात हुआ। एक दिन व वहा के लिए चल दिए। इस मठ का नाम था दुल्ले दी ढाब ।

16

विशम्भर मुनि रामदास को दुल्ले दी ढाब पर छोडकर कही और निकल गए। रामदास ने स्वय ही कह दिया था मुनि जी मै थक गया हू। अब यहा रुकूगा।

रामदास ने बाबा दुल्ले की बेअत सेवा की। वह बहुत बूढा हो गया था। इतनी हिम्मत भी नही थी कि खडा होकर ढोल बजा सके। अत मे बाबा स्वर्ग सिधार गया। वही मठ मे उसका दाह सस्कार किया गया। दाह सस्कार वाले स्थान पर उसकी समाधि बना दी गइ। जमीन से ऊचा चोतरा बनाकर समाधि पर कुटिया भी बनाइ गइ थी। अब दोनो गाव दुल्ले बाबा की मानता करने लगे। मन्नते मागी जाती। मगलवार को बुढिया छोटी छोटी रोटिया बाटकर जाती।

रामदास स्वय तडके सुबह दूध की भिक्षा लेने नही जाता था। टिब्बे म धन्ने बुड्ढ को भेजता था ओर थम्हण वाले मे एक नया सेवक सुक्खू जाता था। रोटिया मठ म हा पकती थी।

रामदास को हमीरगढ वाला बाबा पृथ्वीदास का मठ याद आता। वहा ओर यहा मे अब कोइ अतर नही रह गया था। सब वेसे ही चल रहा था जेसे हमीरगढ मे होता था। अतर इतना था कि हमीरगढ वाले मठ का स्वामी बाबा चिब्भडदास था आर दुल्ल का ढाब का स्वामी अब वह स्वय था। रामदास की महिमा चारा आर के गावो मे बिखर रही थी। अच्छे अच्छे लोग वहा आने लगे। उसका स्वभाव बहुत विनम्र ओर मिलनसार था। मीठी वाणी बोलता और धीरे धीरे बाते करता। ना वह जार से बोलता था ओर ना उसकी आवाज म तलखी या जल्दबाजी होती थी। आयु म छोटा हान के बाद भी बडा को उपदेश देता था। उसकी आयु मुश्किल से तीस के लगभग हागी। उसके उपदेशो मे अपना कोइ लोभ नही होता था। वह लोगो के निर्जी लाभ

ह। जस जल एक ही स्थान पर रुका रह ता उसम म दुगन्ध उठन लगती हे। पानी ना गति म रहना चाहिए तभी साफ सुथरा रहेगा। एस ही मनुष्य को गति म रहना चाहिए। यह गति स्थान बदलकर भी प्राप्त की जा सकता हे। एसा भी होता हे कि एक स्थान पर रहकर भी मन को गति मे रखा जा सकता हे। फिर विशम्भर मुनि ने सीधा प्रश्न किया तुम मरी एक बात मानोगे रामदास?

हा आज्ञा कर। मानने वाली होगी तो क्यो नही मानूगा।

तुम स्थान परिवर्तन कर लो।

कैसे जी मै समझा नही।

चलो तुम्हे कही और छोड आऊ।

रामदास सोच मे पड गया। दूसरे दिन चिब्भडदास की चोरी उन्होने पता नहा क्या मत्रणा की दरी के तने वाले झोले मे दो चार कपडे रखकर रामदास विशम्भर मुनि के साथ जाने को तेयार हो गया। चिब्भडदास स इतनी ही बात की महाराज जी मे मुनि जी क साथ हरिद्वार जा रहा हू। कुछ दिन लग जाएगे।

रामदास की यह बात सुनकर चिब्भडदास को बहुत आश्चय हुआ। यह क्या? रामदास तो कभी कही हमीरगढ के क्षेत्र से बाहर ही नही गया था। बठिडे अपने चाचा के कत्ल के केस के समय दो चार बार हो आया तो हो आया। यह एकदम से इसका मन कस हरिद्वार जाने को हो गया? उसने राम को रोका टोका नही। वरन हसकर कहा तेरी इच्छा ह भाइ। हम तुम्हे क्यो रोकेगे। पर जब तेरा मन प्रकृति के दृश्यो से भर जाए तब लोट आना। फिर प्रश्न किया तुम्हे यहा रहकर कोई कष्ट तो नही हो रहा है?

नही महाराज जी। मै तो बहुत खुश हू। ऐसी कोई बात नही हे। राम झूठ बोल गया।

चिब्भडदास ने स्वय उठकर विशम्भर मुनि से कहा मुनिश्री रामदास को ले तो जा रहे ह हमारे बच्चे को कब वापस लेकर आएगे।

महाराज जी मे कहा लेकर जा रहा हू उसे यह स्वय मेरे साथ जा रहा हे अपनी इच्छा स। अपनी इच्छा से लौटेगा। इससे पूछ लीजिए। वह अपने जिम्मे कुछ भी नहा लेना चाहते थे।

चलो खेर अच्छा पुत्र! चिब्भडदास ने राम के कधे पर हाथ रखा। उसे कुछ रुपए दिए। बोले यह ले जाओ। तुम्हे आवश्यकता पडेगा। ओर बोलो आर दू?

राम आर उदास हा गया। आखे भर आई। मुह दूसरी ओर कर लिया।

चिब्भडदास ने इस बार उसके चेहरे की ओर देखे बिना उसका कधा थपथपाया।

व कइ दिन हरिद्वार म रह। ऋषिकेश चले गए। राम को नए से नए अनुभव हो रह थ। वह उस भर भरे ससार मे अपना स्थान ढूढ रहा था। कभी कभी यह भी लगता कि वह उसका ससार बिल्कुल नही हे। सभी साधु सत एक भटकन के वेग मे पागल स डाल रह ह। किसी का किसी स काइ वास्ता नही था। किसी को किसी की कोइ परवाह

नहा था। लोग जसे पछतावा की यानि भोग रह हा।

विशम्भर मुनि ने एक दिन उससे कहा चलो पजाब चलत ह। गावा म घूम फिरग। यहा पर तो मेरा भी जी भर गया ह।

हरिद्वार से बस म बेठकर सहारनपुर मे उतर गए। दो दिन सहारनपुर म हा एक मठ म रुके रहे। वहा से अम्बाला आ गए। कही जाने की कोइ जल्दा नहा था किसी बात की कोई चिता नही थी। अम्बाले स गाडी मे बठकर पटियाले आ गए। पटियाल म इमलीवाले मठ मे कई दिन रहे। वहा से फिर कइ मठो म होते होते बरनाल आ गए। बरनाले मे इधर उधर कई मठ थे गावो मे। वे सब जगह एक एक रात गए। रोडू शाह मडी के पास नए निर्मित मठ के बारे मे ज्ञात हुआ। एक दिन वे वहा के लिए चल दिए। इस मठ का नाम था दुल्ले दी ढाब ।

16

विशम्भर मुनि रामदास को दुल्ले दी ढाब पर छोडकर कही और निकल गए। रामदास ने स्वय ही कह दिया था मुनि जी मे थक गया हू। अब यहा रुकूगा।

रामदास ने बाबा दुल्ले की बेअत सेवा की। वह बहुत बूढा हो गया था। इतनी हिम्मत भी नही थी कि खडा होकर ढोल बजा सके। अत म बाबा स्वर्ग सिधार गया। वही मठ मे उसका दाह सस्कार किया गया। दाह सस्कार वाले स्थान पर उसकी समाधि बना दी गइ। जमीन से ऊचा चोतरा बनाकर समाधि पर कुटिया भी बनाइ गई थी। अब दोना गाव दुल्ले बाबा की मानता करने लगे। मन्नत मागी जाती। मगलवार को बुढिया छोटी छोटी रोटिया बाटकर जाती।

रामदास स्वय तडक सुबह दूध की भिक्षा लेने नही जाता था। टिब्बे मे धन्ने बुड्ढे को भेजता था और थम्हण वाले मे एक नया सेवक सुक्खू जाता था। रोटिया मठ मे ही पकती थीं।

रामदास को हमीरगढ वाला बाबा पृथ्वीदास का मठ याद आता। वहा और यहा मे अब कोइ अतर नहा रह गया था। सब वेसे ही चल रहा था जैसे हमीरगढ मे होता था। अतर इतना था कि हमीरगढ वाले मठ का स्वामी बाबा चिब्भडदास था ओर दुल्ले का ढाब का स्वामी अब वह स्वय था। रामदास की महिमा चारा ओर के गावो मे बिखर रही थी। अच्छे अच्छे लोग वहा आने लगे। उसका स्वभाव बहुत विनम्र ओर मिलनसार था। मीठी वाणी बोलता ओर धीरे धीरे बाते करता। ना वह जोर स बोलता था ओर ना उसकी आवाज म तलखी या जल्दबाजी होती थी। आयु म छोटा होन के बाद भी बडो को उपदेश देता था। उसकी आयु मुश्किल से तीस के लगभग होगी। उसके उपदेशो मे अपना कोइ लोभ नही होता था। वह लोगो के निजी लाभ

नहा था। लोग जसे पछतावा की यानि भोग रह हा।

विशम्भर मुनि ने एक दिन उसस कहा चलो पजाब चलत ह। गावा म घूम फिरग। यहा पर तो मेरा भी जी भर गया ह।

हरिद्वार से बस म बेठकर सहारनपुर म उतर गए। दो दिन सहारनपुर म हा एक मठ म रुके रहे। वहा से अम्बाला आ गए। कहा जाने की कोइ जल्दी नहा थी किसी बात की कोई चिता नही थी। अम्बाले स गाडी मे बठकर पटियाले आ गए। पटियाल म इमलीवाले मठ मे कई दिन रहे। वहा से फिर कइ मठो म होते होते बरनाला आ गए। बरनाले मे इधर उधर कइ मठ थे गावो मे। वे सब जगह एक एक रात गए। रोडू शाह मडी के पास नए निर्मित मठ के बारे म ज्ञात हुआ। एक दिन वे वहा के लिए चल दिए। इस मठ का नाम था दुल्ले दी ढाब ।

16

विशम्भर मुनि रामदास को दुल्ले दी ढाब पर छोडकर कही ओर निकल गए। रामदास ने स्वय ही कह दिया था मुनि जी मे थक गया हू। अब यहा रुकूगा।

रामदास ने बाबा दुल्ले की बेअत सेवा की। वह बहुत बूढा हो गया था। इतनी हिम्मत भी नही थी कि खडा होकर ढोल बजा सके। अत मे बाबा स्वर्ग सिधार गया। वही मठ मे उसका दाह सस्कार किया गया। दाह सस्कार वाले स्थान पर उसकी समाधि बना दी गइ। जमीन से ऊचा चोतरा बनाकर समाधि पर कुटिया भी बनाई गइ थी। अब दोनो गाव दुल्ले बाबा की मानता करने लगे। मन्नते मागी जाती। मगलवार को बुढिया छोटी-छोटी रोटिया बाटकर जाती।

रामदास स्वय तडके सुबह दूध की भिक्षा लेने नही जाता था। टिब्बे म धन्ने बुड्ढ को भेजता था और थम्हण वाले मे एक नया सेवक सुक्खू जाता था। रोटिया मठ म ही पकती थी।

रामदास का हमीरगढ वाला बावा पृथ्वीदास का मठ याद आता। वहा ओर यहा मे अब कोइ अतर नही रह गया था। सब वेसे ही चल रहा था जैसे हमीरगढ म होता था। अतर इतना था कि हमीरगढ वाले मठ का स्वामी बाबा चिब्भडदास था ओर दुल्ले का ढाब का स्वामी अब वह स्वय था। रामदास की महिमा चारो ओर के गावो मे बिखर रही थी। अच्छे अच्छे लोग वहा आने लगे। उसका स्वभाव बहुत विनम्र और मिलनसार था। मीठी वाणी बोलता ओर धीरे धीरे बाते करता। ना वह जोर से बोलता था ओर ना उसकी आवाज म तलखी या जल्दबाजी होती थी। आयु म छोटा होन के बाद भी बडो को उपदेश देता था। उसकी आयु मुश्किल से तीस के लगभग होगी। उसके उपदेशो मे अपना कोइ लोभ नही होता था। वह लोगो के निजी लाभ

ओर उनक पारिवारिक सुख का बात करता था। वह जो कुछ कहता था दूसरा मान लेता था। उसका बेडा पार हो जाता। मडी रोड़ूशाह के धनाढ्य सेठ उसके मठ म आन लग। थम्मण वाला गाव ओर टिब्बा तो पूरा ही पूरा आता। दोनो गावो के लोग बिना काम भी वहा आकर बठने लग। लगर सबके लिए चलता रहता था। चाय के देग दिन मे कइ बार चढते। दुल्ले की ढाब की काया पलट गई। जहा वह बच्चो को पढाता था वहा छप्पर डाला हुआ था। छप्पर हटाकर वहा भी दो बडे कमरे बनने प्रारम्भ हो गए। नीव रखकर दीवारे बनने की देर थी कि पेसा स्वय आने लगा। जो भी कोइ धनी व्यक्ति आता कुछ देकर ही जाता। सीमेट की बोरिया ईटे सरिये पहुचने लग गए। रोड़ूशाह मडी के सेठ देखा देखी दान किए जा रहे थे। दूर शहर का एक सरदार आया ओर मठ से लगी फालतू-सी आधा किल्ला जमीन ही खरीद दी। सरदार किसी कठिन मुकदमे मे फसा हुआ था उसके मन मे विश्वास हुआ कि रामदास की दयादृष्टि के कारण ही वह मुकदमे से बरी हो गया था। आया एक दिन माथा टका ओर बोला कि वह जीत गया हे। रामदास मुस्कराने लगा। आशीवाद दिया आपका मस्तक बताता हे कि आपको और विजयश्री प्राप्त होगी पर समय लगेगा।'

प्रसन्नता से सरदार के अग प्रत्यग थिरकने लगे। जोश मे आकर बोला गुरु जी सेवा बताए।

रामदास बोला जो श्रद्धा हो।

सरदार ने बास्कट की भीतरी जेब मे हाथ डाला। रामदास ने उसका हाथ रोक लिया। बोला यह नही। पैसा नही लेगे। यह पास की आधा किल्ला पडी है। इसमे खेती तो होती नही है। थोडा ही देना होगा। इसे लेकर मठ को दे दीजिए। मुकदमा कोई छोटा मोटा तो नही था। आपकी तो जान को खतरा था।

पढाई का काम हमेशा चलता रहता था। सुबह सुबह छोटे बच्चे और बडी आयु की लडकिया आती थी। उनको रामदास स्वय पढाता था। बडी आयु के बालक दोपहर को आते थे। उनकी सख्या थोडी ही थी। उनको सुक्खू पढा देता था। वह भी आठ कक्षा पास था। पढाई मे भी वह तेज था। पर उसका घर बार कोइ नही था। ना मा ना बाप ना कोइ भाइ। एक बहन थी उसकी भी शादी हो गइ थी। वह आयु मे उससे बडी थी। वह जाटो का बेटा था। अचानक मा बाप दोनो मर गए तो बहन उसे अपने घर ले गइ। गाव मे उनकी जमीन नही थी। जो कुछ थी उसे उसके दादा ने अफीम पानी मे सब फूक दी। पर बहन के पास उससे रहा न गया। बहनोइ खेती बारी करता था। उसे यह काम पसद नही थी। उसका पिता भी यह काम नही करता था। उसका बाप तो भैसो का दलाल था। पशुओ की मडी मे जाता और दलाली करता। उसका गाव धूरी की तरफ शेरपुर क पास था। उधर का ही कोई साधु सुक्खू को यहा दुल्ले के ढाब पर छोड गया था।

सुबह पढने वाले छोटे बच्चे और बडी लडकिया मठ मे इधर-उधर घूमती फिरती

भा रहता था। कुइया स पानी भरकर पाता लगर म जाता बाबा दुल्ल का समाधि का कपड स झाड पाछकर साफ कर दता आर समाधि की फश धा देता। लगर का काम भा कर दती। बडी लडकिया पढाइ क साथ साथ मठ का काय करक अधिक प्रसन्न रहना था। दाड दाडकर काम करती। इन लडकियो म टिब्ब के नम्बरदार ताता सिह का पाता ता बहुत चुस्त थी। दूसरी लडकियो से ज्यादा हुडदगी भी। बात भा वहुत करता था। बात करने म शमाती नही थी। एक प्रकार से दूसरी लडकिया की नता बनकर रहता। कद नाटा पर हाथ पेरो की खुली थी। काम करने मे मजबूत आर फुर्तीला। थाला गिलास माजने को कहत तो वह दूसरी लडकिया को हाथ न लगाने देती। जल्दी जल्दी पहल बतन राख स मलती एकदम चमका देती फिर पानी से धाती। बतन शीशे का तरह चमकने लगते। स्वय भी लडकियो को काम बाट देती। तू लगर मे झाडू लगा दे री तू बतन सजाकर रख तू समाधि की कुटिया के तख्ता पर गीला कपडा मार आ। जहा हम पटत हे वहा टाट पट्टी झाडकर बिछा आ।

तोता सिह की पोती का असली नाम तो मनजीत कोर था पर उसे सभी लाग मग्घो कहते थे। घर पर भी आर मठ मे भी। रामदास भी उसे मग्घो कहकर बुलाता था। मोटी मोटी आखे और फूले फूले गालो वाली वह चिडिया जेसी ही तो लगता था। बडी लडकिया चार पाच ही थी ओर सभी टिब्बे की थी। थम्मणवाले के बच्च यहा नही आते थे। दोपहर को जो बडे लडके पढते थे व आस पास के खतो के लडके थे। इनमे स टिब्बे के भी थे ओर थम्मण वाल के भी।

बडी आयु की लडकिया चोटिया नही करती थी। लडका की तरह सिर के बाला का जूडा बना लेती थी। और लडको की तरह ही सफेद पगडिया बाधता थी। सफद सलवारे और सफेद कमीज पहनकर आती थी। उनके नाक कान भी नही छिदे थे। उनक चेहरे देखने पर बिना दाढी मूछो वाले लडके लगती थी। मग्घो का चेहरा ता एकदम लडको जसा थ। वह बोलती भी लडका की तरह थी। उसकी भाषा पुल्लिग वाचक होती। मे रोटी खाऊगा। मे यह नही करता। मे पढ़ता था। जैसे लडका बोलता हे। ऐसा इसलिए था कि मग्घो के दो बडे भाई थे। घर म लडकी ओर कोई थी नही। जस उसके भाइ बोलते वैसे ही वह बोलती थी। थी भी वहुत लाडली। इस प्रकार लडका की तरह बालता हुइ वह घर वालो को अच्छी लगती थी। ओर फिर हर जगह हर समय उसकी इस प्रकार बोलने की आदत पड गइ।

कभी ऐसा भी होता कि सुक्खू सुबह भी छोटे बच्चो ओर बडी लडकियो को पढा दिया करता था। उनको कान सा अलजेब्रा जामेट्री सिखाना पडता था या अग्रजी हिंदी पढाना पडती थी। गुरमुखी के अक्षर लिखना सीखते थे वे। बाल उपदेश पढत ओर तख्तिया पर अक्षर लिखते थ। अक्षरो क बाद शब्द लिखन आ जाते। शब्दा स वाक्य वनते। कोइ विद्यार्थी बाल उपदेश खत्मकर लेता तो फिर पच ग्रथी पढने लगता। पच ग्रथी को लिखकर सीखने की आवश्यकता नही थी। केवल पढना आता हो ता मुह जबानी

आर उनके पारिवारिक सुख का बाते करता था। वह जो कुछ कहता था दूसरा मान लेता था। उसका बडा पार हो जाता। मडी रोड़ूशाह के धनाढ्य सेठ उसके मठ मे आन लग। थम्मण वाला गाव ओर टिब्बा तो पूरा ही पूरा आता। दोनो गावो के लोग बिना काम भी वहा आकर बठने लग। लगर सबके लिए चलता रहता था। चाय के देग दिन मे कइ बार चढते। दुल्ले की ढाब की काया पलट गइ। जहा वह बच्चो को पढाता था वहा छप्पर डाला हुआ था। छप्पर हटाकर वहा भी दो बडे कमरे बनने प्रारम्भ हो गए। नीव रखकर दीवारे बनने की देर थी कि पैसा स्वय आने लगा। जो भी कोइ धनी व्यक्ति आता कुछ देकर ही जाता। सीमेट की बोरिया ईंटे सरिये पहुचने लग गए। रोड़ूशाह मडी के सेठ देखा-देखी दान किए जा रहे थे। दूर शहर का एक सरदार आया ओर मठ से लगी फालतू सी आधा किल्ला जमीन ही खरीद दी। सरदार किसी कठिन मुकदमे मे फसा हुआ था उसके मन मे विश्वास हुआ कि रामदास की दयादृष्टि के कारण ही वह मुकदमे से बरी हो गया था। आया एक दिन माथा टेका ओर बोला कि वह जीत गया हे। रामदास मुस्कराने लगा। आशीवाद दिया आपका मस्तक बताता हे कि आपको और विजयश्री प्राप्त होगी पर समय लगेगा।'

प्रसन्नता से सरदार के अग प्रत्यग थिरकने लगे। जोश मे आकर बोला गुरु जी सेवा बताए।

रामदास बोला जो श्रद्धा हो।

सरदार ने बास्कट की भीतरी जेब मे हाथ डाला। रामदास ने उसका हाथ रोक लिया। बोला यह नही। पैसा नही लेगे। यह पास की आधा किल्ला पडी है। इसमे खेती तो होती नही है। थोडा ही देना होगा। इसे लेकर मठ को दे दीजिए। मुकदमा कोई छोटा मोटा तो नही था। आपकी तो जान को खतरा था।

पढाइ का काम हमेशा चलता रहता था। सुबह सुबह छोटे बच्चे और बडी आयु की लडकिया आती थी। उनको रामदास स्वय पढाता था। बडी आयु के बालक दोपहर को आते थे। उनकी सख्या थोडी ही थी। उनको सुक्खू पढा देता था। वह भी आठ कक्षा पास था। पढाइ मे भी वह तेज था। पर उसका घर बार कोई नही था। ना मा ना बाप ना कोइ भाइ। एक बहन थी उसकी भी शादी हो गइ थी। वह आयु मे उससे बडी थी। वह जाटो का बेटा था। अचानक मा बाप दोनो मर गए तो बहन उसे अपने घर ले गई। गाव मे उनकी जमीन नही थी। जो कुछ थी उसे उसके दादा ने अफीम पानी मे सब फूक दी। पर बहन के पास उससे रहा न गया। बहनोइ खेती बारी करता था। उसे यह काम पसद नही थी। उसका पिता भी यह काम नही करता था। उसका बाप तो भैसो का दलाल था, पशुओ की मडी मे जाता ओर दलाली करता। उसका गाव धूरी की तरफ शेरपुर के पास था। उधर का ही कोइ साधु सुक्खू का यहा दुल्ले के ढाब पर छोड गया था।

सुबह पढने वाले छोटे बच्चे और बडी लडकिया मठ मे इधर-उधर घूमती फिरती

भा रहता था। कुइया स पाना भरकर पाता लगर मे जाता बाबा दुल्ल का ममाधि का कपडे स झाड पोछकर साफ कर दता आर समाधि की फश धा दता। लगर का काम भा कर देता। बडी लडकिया पढाइ क साथ साथ मठ का काय करके अधिक प्रसन्न रहता था। दौड भागकर काम करती। इन लडकिया मे टिब्ब के नम्बरदार ताता सिह का पाता ता बहुत चुस्त थी। दूसरी लडकियो से ज्यादा हुडदगी भी। बाते भा वहुत करता था। बात करन मे शमाती नही थी। एक प्रकार से दूसरी लडकियो की नता बनकर रहता। कद नाटा पर हाथ पैरो की खुली थी। काम करने मे मजबूत ओर फुर्तीला। थाला गिलास माजने को कहते तो वह दूसरी लडकिया को हाथ न लगाने देती। जल्दी-जल्दी पहल बतन राख स मलती एकदम चमका देती फिर पानी से धाती। बतन शीशे की तरह चमकने लगते। स्वय भी लडकियो को काम बाट देती। तू लगर मे झाडू लगा द रा तू बतन सजाकर रख तू समाधि की कुटिया के तख्ता पर गीला कपडा मार आ। जहा हम पढते हे वहा टाट पट्टी झाडकर बिछा आ।

तोता सिह की पोती का असली नाम तो मनजीत कौर था पर उसे सभा लाग मग्घो कहते थे। घर पर भी ओर मठ मे भी। रामदास भी उसे मग्घो कहकर बुलाता था। मोटी मोटी आखे और फूले फूले गालो वाली वह चिडिया जैसी ही तो लगता था। बडी लडकिया चार पाच ही थी ओर सभी टिब्बे की थी। थम्मणवाले के बच्चे यहा नहा आत थे। दोपहर को जो बडे लडके पढते थे व आस पास के खेतो के लडके थे। इनम स टिब्बे के भी थे और थम्मण वाले के भी।

बडी आयु की लडकिया चोटिया नही करती थी। लडका की तरह सिर के बालो का जूडा बना लेती थी। और लडका की तरह ही सफेद पगडिया बाधता थी। सफेद सलवारे और सफेद कमीज पहनकर आती थी। उनके नाक कान भी नहा छिदे थे। उनके चेहरे देखने पर बिना दाढी मूछो वाले लडके लगती थी। मग्घो का चेहरा तो एकदम लडको जसा थे। वह बोलती भी लडका की तरह थी। उसकी भाषा पुल्लिग वाचक होता। म रोटी खाऊगा। मै यह नही करता। मै पढता था। जैसे लडका बोलता ह। ऐसा इसलिए था कि मग्घो के दो बडे भाई थ। घर मे लडकी और कोई थी नही। जस उसक भाइ बोलते वेसे ही वह बोलती थी। थी भी बहुत लाडली। इस प्रकार लडका की तरह बोलता हुइ वह घर वालो को अच्छी लगती थी। और फिर हर जगह हर समय उसकी इस प्रकार बोलने की आदत पड गइ।

कभी ऐसा भी होता कि सुक्खू सुबह भी छोटे बच्चो ओर बडी लडकिया को पढा दिया करता था। उनको कान सा अलजेब्रा जामेट्री सिखाना पडता था या अग्रजी हिंदी पढानी पडती थी। गुरमुखी के अक्षर लिखना सीखते थे व। बाल उपदश पढते आर तख्तिया पर अक्षर लिखते थ। अक्षरा क बाद शब्द लिखने आ जाते। शब्दा से वाक्य बनते। कोइ विद्यार्थी बाल उपदेश खत्मकर लेता तो फिर पच ग्रथी पढने लगता। पच ग्रथी को लिखकर सीखने की आवश्यकता नही थी। केवल पढना आता हो तो मुह जबानी

याद हो जाए। गिनता एक से सौ तक सीखनी पडता था। बस इतना ही दुल्ल क गाव का कास था।

तीव्र बुद्धि वाले विद्यार्थी यह कास साल छ महीने मे ही पूरा कर लेत थ। जबकि मदबुद्धि बालक दो दो साल चार चार साल मठ म घूमत फिरते रहत थे। मग्घा एक साल म ही कोस पूरा कर गइ था। पर वह मठ म आती अवश्य थी। और फिर वह भी सुबह क समय दूसरी लडकिया को अक्षर सिखान लगी। सुबह की पढाइ के समय कभी रामदास बठता कभी सुक्खू और कभी मग्घा। वसे मग्घा नित्य प्रति आती थी। दोपहर के समय बड लडको का अक्षर ज्ञान करवान का काम केवल सुक्खू के जिम्मे था।

मग्घा लगर के काम भी करती थी कभी रोटिया पकाती कभी दाल सब्जी बनाती रहती। लगर की सफाइ करती। बतन भाडे सब यथा स्थान चुनकर रखती। जैसे अपने घर की रसोइ मे कोई सुघड स्त्री दिलचस्पी लेती है।

वह रामदास की कुटिया भी साफ कर देती थी। धुल हुए कपडे तह कर देती। टूटे हुए बटन लगा देती। रामदास के कपडे सुक्खू धोया करता था। वह हाथ पैरो का मजबूत था। बडे बडे हाथी के पाव जसे पेर बड बडे हाथ गिद्धो के पजो क समान। वह एक ही हाथ से कई बतन उठा लेता था। गिरने नही देता था। उसकी उगलिया की पकड बहुत मजबूत थी गिद्धो के नाखूनो की तरह। पेरो से थप-थप करक चलता था। उसका डग भी बडा था। बाहे ऐसी थी जैसे पेड की डाले हो। उसके मुह का आकार लम्बा था और दात भी बडे बडे थे। सफेद खद्दर का लम्बा चोगा पहनता था। सिर के बाल कटे हुए थे। एक रूमाल जैसा कपडा बाध लेता था। आमतोर स नगे पेर रहता था। मग्घा उसे पागल सा समझती थी। उससे कह कहकर काम करवाती थी। जब वह उसे जोर से बुलाती तो वह हसने लग जाता पर बताया गया काम उसी समय करने लग जाता। हसता भी जाता काम भी करता जाता। मग्घा उसकी ओर देखकर मुह चिढाती आखे मटकाती और कहती पागल हो गया हे। वह हसता ही जाता तो मग्घो उसकी पीठ पर घूसा मार देती। कहती सीधी तरह काम कर ही ही किए जा रहा है।

ही ही एक और मार। वह लाड दिखाने लगता।

मग्घो सुबह सुबह पहन ओढकर बन ठनकर मठ मे आती थी। वह दिन निकलने स पहले नहा लेती थी। नित्य धुले हुए कपड पहनती थी। उसकी आखो की चमक ऐसी थी जसे सुरमा ऐसे लगाया जो लगता ही ना हो कि लगाया गया है पर सुरमा वह नही लगाती थी। किसी प्रकार का बनाव शृगार करके मठ मे आना वर्जित था। वह वेसे ही सफेद कपडो मे अनारकली लगती थी। चेहरे पर कुछ नही लगाती थी। फिर भी उसमे से कोइ सुगध आती थी—भीनी भीनी।

वह दोपहर तक मठ म रहती थी। दोपहर का भोजन करक गाव जाती थी। आते समय दूसरी लडकियो के साथ आती थी जाते समय गाव जाने वाले किसी वृद्ध के साथ

ना नना।

गननगम उस धीर धीर समयाता था मग्गो गना मनजात फ़ार लटक्यिा फ़ साथ ना चले नाया फ़र। अक्ली जाता ह। काम का स्या ह यहा ना उस भा हाना हा गहता न। फ़भा पूछ लना तुझसे तुम्हारा मा नहा कहती कि भद जल्दी आ जाया फ़र।

नहा बाबा जा वह ता मुझसे फ़ुछ नहा कहती। पिता जा भा फ़ुछ नहा फ़हत। व ता फ़हत ह पढाया कर बच्चियो का। मास्टरनी बन जा। वह सीध स्वभाव उत्तर ना।

तर लिए घर पर कोइ काम नही ह?

मा स्वय फ़र लती है। जो काम रह जाता ह उसे म जा क कर दता हू, बाबा ना।

ताता ढिड्डल कभी कभी दुल्ले की ढाब का चक्कर लगाता था। रामदास क पास बठकर वह पुरानी बाते करने लगता था। बताता पहले इस स्थान पर चश्मा निकला था। बाला दुल्ले की हिम्मत से दोना गावो ने मिलकर तालाब खादा था। बाबा दुल्ला इश्वर का भेजा आदमी था। रब की दरगाहो का दरवेश था वह। घर बार छाडकर यहा रहने लग गया था। इसी जगह प्राण त्यागे उसने। तोता बताता दुल्ल के ढोल की आवाज जैसे अब भी गाव मे सुनाई पडती है। वह कोइ पहुचा हुआ फक्कड बाबा था। अब देख लो पूरा मठ बना पडा है। यह इस स्थान को उसी फक्कड बाबा का वरदान है।

रामदास ढिड्डल तोते की बाते सुनता और सिर हिलाकर हा हू किए जाता। कभी-कभा उसकी आर जिज्ञासापूण दृष्टि डाल लेता। जैसे वह तोता से फ़ुछ कहना चाहता हो। जैसे उसस कुछ पूछना चाहता हो।

तोता उत्साहित होना कि उसकी पोती नित्य मठ मे आती हे। ज्ञानी हे। पच ग्रथी का पाठ कर लेती है। बच्चियो को विद्यादान करती ह। बाबा रामदास की सवक हे। उसके नक्षत्र उज्ज्वल है। धामिक वृत्ति की लडकी हे।

यद्यपि रामदास युवा आयु के शिखर पर था उसके विचार साफ सुथरे थ। उसक मन म कभी विकार नही उठे थे। मन की उदासी ही उसके शरीर की खुराक बनी रहता था। जेस इस शोक अवस्था को कोइ नशा हो। ना नो उसे अपना गाव याद आता था आर ना बाबा पृथ्वीदास का मठ मठ क स्वामी बाबा चिब्भडदास और ना अपना घर याद आता था। चाची जलकोर बडा भाइ श्याम उसके लिए पराए हा गए थे। उसे यह जानन की काइ इच्छा नही थी कि चाचा गुरमेल उम्रकद काटकर घर आ गया है या नही यदि आ गया हे तो किस दशा मे है। श्याम गाव मे छुट्टी पर आया होगा यहा ढाब का तालाब पर उसस मिलने क्यो नही आया। उसे पता नो लग गया होगा कि म अब यहा हू।

विशम्भर मुनि दो बार मठ मे आए थे। एक बार तो बाबा दुल्ल की मृत्यु के दा

नष बाद। दूसरा बार चार पाच साल क बाद। पहला बार आर दूसरी बार की समयावधि म मठ म बहुत परिवतन हा गया था। वह बहुत प्रसन्न थे कि रामदास न मठ को कितना विस्तार द दिया है। टिब्बे के लाग उसकी कितनी प्रशसा करते ह। रामदास किमा तरह भा विचलित नही हुआ। वह वास्तविक अर्थो मे साधु है। विशम्भर मुनि गारवान्वित थ कि यह उनका लगाया हुआ पड है।

विशम्भर मुनि वृद्ध हो चुके थे। धीरे धीरे चलत थे धारे धीर आर धीमे धामे बोलत थ। उनकी आवाज मे पहली वाली कडक नही थी। शरीर ढल गया था। खाना पीना कम हो गया। वह सुबह देर से खाट पर से उठत। दर से ही सोते थ। उनका नीद भी कम हो गइ थी। सुक्खू स कहकर रामदास उनकी पूरी सेवा करवाता था। रामदास स्वय उनके पाव दबाता था। दूसरी बार जब वह आए थे ता रामदास ने उनसे बहुत आग्रह किया था कि मुनि जी आपने बहुत भ्रमण कर लिया अब एक जगह बैठ जाइए। अब आपकी आयु घूमने-फिरने की नही रही। यहा मेरे पास ही स्थाई तौर से रह। जितने दिन शष हैं आराम से बिताए। पर विशम्भर मुनि नही माने। दस दिन रहे ओर चल दिए। उनक लिए अतिम मजिल कोई नही थी। उन्हे ता सदा यात्रा पर ही रहना था।

रामदास का स्वय का मन तो चाहे खाली-खाली और बुझा बुझा रहता था पर उसे एक हौसला भी था कि दोनो गावो मे उसकी कितनी मान्यता है। मडी रोडूशाह के महाजन उस कितना पूजते थ। टिब्बा गाव के कितने घर उसके मठ मे नित्य आते-जाते थे। उस भीतर-ही-भीतर यह भी पता था कुछ लोग तो वहा केवल लगर से भोजन करने ही आते ह। दूध पी जाते ह और लोग इलायची वाली चाय के शौकीन हे। वे समझते है कि दुल्ले की ढाब उनके लिए हा हे। यहा का अन्न-पानी उनके लिए ही बनता है। तोता जब आता ता पहले ता सुक्खू के कान मे कहकर एक गिलास दूध पीता फिर रोटी खाता। दाल सब्जी म मक्खन छुडवाता। जाते समय लोग इलायची वाली चाय पीकर जाता। तोते के दोनो पोतो का भी यही हाल था। उनके पास अपनी जमीन कम थी। हिस्से ठेके पर जमीन लेकर खती करत थे। लडको की दादी और बाप नही थे। उनका दादा था और मा थी। वह ताते का ही बापू कहते थे। एक मात्र बहन थी जो अब इस मठ की प्ररणा बन चुकी थी।

17

दुल्ल का ढाव का मठ धारे धीरे विस्तार लता जा रहा था। उसकी महिमा भी बढती जा रही थी। इसक दा कारण थे। एक तो बाबा दुल्ले की समाधि मे लोगो की अपार श्रद्धा दूसरे रामदास का स्नेहिल और मृदु स्वभाव। जिससे भी वह एक बार बात कर लेता उसे

अपना बना लना।

तालाब स सटा आधा किल्ला जो बाद का मिला था उसम एक बडा हॉलनुमा कमरा बनवा दिया गया। इसक कई दरवाज थ। गर्मियो म यह खुल रहत थ जाडो म बद रहत थ। साथ ही इसका फर्श पक्का बन गया था। इस हॉल म कइ तख्तपोश रख रहत थ आर कुछ चारपाइया भी। दिन म या रात म आए गए लोग यहा पड रहत थ। जब दुल्ल की बरसी मनाइ जाती थी तब इस कमर म दीवान लगाया जाता था। तब तख्तपोश आर चारपाइया हटा दी जाती थी।

खेतो क नाम भी दुल्ल का ढाब क साथ जुड गए। थम्मण वाल गाव क खत जो टिब्ब की ओर थ पहले उन्ह टिब्बे वाला खत कहा जाता था अब ढाब वाला खत कहा जान लगा। थम्मण वाल क जाट अपने साथियो म कहत आज ढाब पर हल जोतना ह भाइ। या कहते ढाब वाल खत म ता इस बार अनहोन फसल हुइ ह।

एक श्रद्धालु आया आर रामदास का मारूति कार ही भट कर गया यह कार कइ साल चली हुइ थी। अब इसका माडल भी पुराना हो गया था। रामदास ने कार की प्रशसा कर दी कार तो तुम्हारा बढिया ह भाइ। ऐसी कार हम भी कभी लगे।

यहा रख दीजिए महाराज जी यह लीजिए चाभिया।

श्रद्धालु के लिए यह कोइ बडी बात नही थी। उसक पास बहुतरा सम्पत्ति थी। वह तो कब से नई कार निकलवान की सोच रहा था।

रामदास ने चाभिया ले ली। पर बोला अकेली चाभियो का क्या करग। कार चलान क लिए आदमी भी चाहिए आर इसम तेल भी पडा करगा।

श्रद्धालु बोला एक साल म कितना तल खच कर दगे आप। यह एक साल के पस स्वीकार करे। रही बात ड्राइवर की तो इस ड्राइवर को भी यही छोड जाते ह। जितने दिन यह रहे उतने दिन रख। भाग जाए तो दूसरे की व्यवस्था कर लेना महाराज जी। ड्राइवर कम ही टिकते है।

कार यद्यपि पुरानी थी पर चलती अच्छी थी। रामदास को कभी-कभी कहा जाना पडता था। वह अधिक से अधिक रोडूशाह की मडी ही जाता था कभी कभी। कार के साथ दिया हुआ चालक तो चौथ दिन ही भाग गया था उसकी इतनी तन्खाह कौन देता। यह तो मठ था। फिर सत तो कभी कभी ही कार बाहर निकालते थे। वह वृक्षो क नीचे खाली बैठकर तिनके तोडता रहता था। टिब्बे का ही एक सनिक पेशनर था। वह कार चलाना जानता था। सतो का श्रद्धालु था। अधिक समय तक मठ म ही बैठा रहता था। जब सत को कही जाना होता तो वह उठकर चल देता। वह सत से वेतन आदि कुछ नहीं लेता था। उसका एकमात्र पुत्र कही बाहर नौकरी करता था। बहू और बच्चे भी उसी के साथ थे। टिब्बे मे तो केवल फौजी था और उसकी पत्नी थी। मान सिह दोपहर का भोजन मठ मे कर लेता था। वही दूध चाय पी लेता था। शाम का खाना घर

पर नाकर खाना था। सता का चालक हान क कारण मान सिह का खाना पाना ना पक्का था।

एक दिन रामदास बाला चलो भइ मान सिह गाडी निकालो। कही चला जाए।

मान सिह ने गाडी साफ कर ली। चलाकर दखा इजन ठीक था। राडूशाह का मा वाला सडक पर गाडा लगाकर मान सिह न पूछा कहा चलना ह महाराज जा?

बुढलाड की आर ल चलो। वहा से फिर हमीरगढ चलग।

अच्छा जा नगर जाना हे। यह तो बहुत अच्छी बात हे जी। हम भा देख आएग आपका जन्म स्थान।

हमीरगढ म उनके घर के आगे कार खडी देखकर पास पडोस क लोग पता लगान आ गए कि भइ इनके घर कान आया हे? यह तो राम था। पहले स बडा दिख रहा था आर तगडा भी। दाढी मूछ बढी हुइ थी। चहरे का रग साफ हो गया था। गाला पर लाली था। सिर पर दुपट्टा जसा लपेट था। बादामी रग का लम्बा चोगा पहन था। परो म कढा हुइ शानदार जूता थी। बाए हाथ मे साने क चन वाली घडी बधी थी। सीधे हाथ म स्टील की माला था। पडोसिन बुढिया उसके गले से लिपट गइ। अरे तू राम ह? पुरुष उससे हाथ मिला रहे थ।

रामदास न चाची क पावा मे सिर नवाया। बूढी ने उसे दाना बाहो म भरकर छाती स लगाया और प्यार किया। वह धरती को नमस्कार कर रही थी कि राम अपन घर आया ह।

चाचा गुरमल सिह अपनी सजा भुगतकर घर आ गया था। श्याम को पशन मिलन लगा था। उस हवलदारी के बाद पशन मिली थी। दाढी मे आधे बाल सफेद हा गए थे पर वह अपन बालो म खिजाब लगाता था। देखने मे अभी युवा लगता था। भीखीवाला फतह सिह कइ साल हुए यहा से चला गया था। वह जाते हुए मीतो का भी साथ ल गया था। भाखीवाला ने मीतो का विवाह कर दिया था। उसकी गोदी मे ता अब बच्चा था। सतोष अभी भी उनका साझी था। दो किल्ले गिरवी पडी जमीन फौजी ने आकर छुडा ली थी। सभी जन राम से ममतापूवक मिले। श्याम की आखे भर आइ। एक भाइ साधू दूसरा फाजी। फाजियो का रूदन ता जैसे नाक पर ही रखा होता है। फाजी भीतर भीतर रोता ह। उसका विवाह करवाने का सपना मर सूख चुका लगता था। अब बस चाची के हाथ का राटिया खानी थी। दारू पीने की ललक वह भीखी जाकर पूरी करता था। तेजो भाभा अभा ठीक ठाक थी। रामदास आर मानसिह न केवल चाय पी। रोटी वह मठ मे खाकर निकल थे।

घर से व चिब्भडदास के मठ की ओर चल दिए। जाते समय राम सबम सस्नेह मिलकर गया आर बाला कि वह मठ से उधर के उधर ही लाट जाएगा। उस जल्दी पहुचना हे उसे आग कहा भी जाना ह चाची कह रही थी अरे भई एक रात तो रुककर जाता। बात करत। इश्वर की कृपा से पूरा परिवार था।

गमदास न उत्तर दिया चाचा फिर कभी आऊगा। फुसत म।

चिब्भडदास वृद्धावस्था को प्राप्त हो चुके थ। वाणी शिथिल हो गई था। दिखाई दना और सुनाई दना भी कम हो गया था। धीर धीर बात करत थ। रामदास न उनके चरणा म अपना मस्तक रख दिया। उठाया ही नहीं। चिब्भडदास न उसकी पीठ पर अपना कापता हुआ कमजोर हाथ रखकर मरी हुई आवाज म पूछा कौन ह

चरणा स उठकर रामदास को जोर से बोलना पडा गुरु जी म रामदास ह।

चिब्भडदास को उसकी सूरत तो पहचान म नहीं आई पर आवाज पहचान ली फिर पूछा तू मरकर फिर कैसे जिंदा हो गया?

नहीं गुरु जी मे तो अब भी मरा हुआ हू। मेरा कौन सा हिस्सा जीवित ह रामदास न चुककर उत्तर दिया।

चिब्भडदास धीर धीर मुस्करा रहा था। आखो म आसू आ गए। वाणी कापने लगी। रामदास को पितृभाव मिल रहा था।

बाबा पृथ्वीदास की समाधि पर रामदास न माथा नवाया। दानपात्र म पैसे डाल दिए। उसे लगा कि यह मठ अब वह मठ नहीं रहा। उजाड जैसा हो गया ह। पुरानी रौनक कहीं भी नहीं दिखी। दोनो ने एक एक गिलास दूध पिया ओर चल दिए।

रात उन्होंने पटियाला जाकर इमलीवाले मठ म काटी। वहा स सुबह तडके नहा धोकर और भोजन करके वे हरिद्वार क लिए चल दिए। ऋषिकेश भी गए। रामदास उन सभी मठो म एक एक रात रहा जहा कभी विशम्भर मुनि उन्हें ले गए थ। इतन वर्षो बाद उन पुरान मठो को दखकर उसे अजीब प्रसन्नता और सतुष्टि मिली। पुराने साधुओ म कहा कोई था कहीं नहीं था। नए साधु भी अपन जेसे लगे। हरिद्वार ओर ऋषिकेश व आठ दस दिन रुके थ। मान सिह को कुछ पता नहीं था कि सत रामदास कब वापस चलगे उसका स्वय का भी मन लग गया था। हर जगह बढिया बढिया खान को मिलता था। थानो को मुफ्त म सैर करने को मिल रही थी।

वापस दुल्ल का ढाब पर पहुचे तो पता चला कि सुक्खू कहीं चला गया ह। किसी को बताकर भी नहीं गया। रामदास को उसक जान का कोई दु ख नहीं था। मठो म ऐसा तो होता ही रहता हे। कोई सेवक या साधु एक जगह टिककर नहीं बेठता। एक जगह तो टिककर कोई विरला ही रहता है। मठ मे जब कोई आता ह तो ऐसे रहने लगता ह जैसे वही उसका घर हो। सबक साथ अपनो की तरह रस बस जाएगा ओर फिर पता भी नहीं लगता कि वह कब उडन छू हो गया। यह भी पता नहीं लगता कि वह कहा गया ह। मठ भी दुनिया से न्यारे होते है। लोग अपनी अपनी आयु पूरी करक खिसकत चल जात ह।

रामदास न सुना तो बोला चलो ठीक ह एक सुक्खू गया कोई और घुक्खू आ जाएगा। यह तो चलता ही रहता हे। दुनिया मे आना जाना तो लगा ही रहता ह। हम तो मान सिह यहीं हे। हम तो अब कहीं नहीं जा सकते।

मघ्घे के सिवा और बड़ी लड़किया भी नही आ रही थी। नम्बरदार का डर लड़के भी नही जानते थे क्या करते थे सब पढ़ाने वाला तो कोई भी नही था। जब सबको पता लगा कि तीर्थ यात्रा से बाबा रामदास जी आ गए है तो छोटे बच्चे फिर आने लगे। बड़ी लड़किया भी आने लगी। नम्बरदार का मान वाले बड़े लड़को ने आना छोड़ दिया। रामदास हसकर कहता तुम बुयका अब बस करो। तुम्हे जितना पढना था उतना पढ माड्ड लिया। चिट्ठी पत्री भर के हो गए हो। सुक्खू होता तो समय देता रहता।

रामदास ने देखा कि मघ्घो नही आ रही थी। बूटा धन सिह ने बताया कि उसने तो सुक्खू के सामने से ही आना बदकर दिया था। रामदास चितित हुआ कि उसने आना क्यो बदकर दिया। उसे तो मठ से बहुत मोह था। किसी दिन भी नागा नही करती थी नित्य ही आती थी। मान सिह के हाथ रामदास ने तोता सिह के घर सदेश भेजा कि मघ्घो को भेजा कर। तोता सिह नही आया। मघ्घे की मा आइ। कुटिया मे आकर रामदास के सामने जमीन पर बैठकर रोती रही। बोली कुछ नही। वह मठ मे शायद ही कभी आई होगा।

रामदास ने पूछा कौन हो माइ तुम? मैने तो तुम्हे पहचाना नही।

उसने चुन्नी के किनारे से आसू पोछे फिर गला साफ करके बोली मै तो बाबा जी मघ्घो की मा हू। आपने खबर भेजी थी।

हा माई मघ्घो अब नही आता। क्या बात है?

क्या बताऊ बाबा जी आपको तो मै कोई दोष नही देती। ना मघ्घा बताती है कुछ। पर बुरा तो यही हुआ है उसके साथ और तो कही जाती नही थी वह।

रामदास अवाक रह गया। आखे चौडी हो गई। तुरन्त पूछा है! क्या बुरा हुआ माइ?

वह फिर रोने लगी। उससे बोला नही जा रहा था। रामदास भी परेशान हो गया। यह क्या घटित हो गया मेरी अनुपस्थिति मे! बोलो जल्दी बताओ माइ! मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा है।

उसे चौथा महीना लगा है बाबा जी। आपके सामने कैसी शर्म! उसने नि सकोच बता दिया।

रामदास एकदम सकते मे आ गया। उसकी जबान थल थलाने लगी। पूछा यह यह कि—किसने किया? वह वह किसका नाम लेता है?

नाम तो बाबा जी किसी का नही लेती है।

तुम माइ घर जाओ। नम्बरदार कहा है?

वह यहा कही बैठे होगे बाबा जी।

तुम माइ चलो। मै स्वय मघ्घो के पास आता हू। इसका पता लगाऊगा।

रामदास का दिमाग सुन्न हो गया था। दोपहर का समय था। गर्मी का महीना। उस समय लोग खेतो मे काम कर रहे थे।

नह मग्घा का मा चन्कार क घर पहुचत हा नहा पहुच गया। ताना सिह लागा क पास कहा बठा हागा नृक्षा की छाय म। उसे ना ता किसी बात का पता था आर ना चिता था। दाना बट जला आर कला उस समय खतो म थ। उह भा नहा पता हागा कि घर म चिता का कान सा पहाड खडा हा गया ह। उसने घर म प्रवश किया ता मग्घा खस आढ भीतर सबात म खाट पर लेटा थी।

बेटी इस गर्मी म उमस म पडी है। यह कोइ खेस ओढन का मासम ह? हे रामदास ने अपनत्व दशाते हुए पूछा।

मग्घो ने सत को देखा तो खूब जोर-जार स रोन लगी। नह उसका खाट पर जाकर बठ गया था। मग्घो का सिर सहलाकर पूछने लगा कौन है नह मुझ बताआ? लज्जा मत करो तुम्हारी मा ने सारी बात बता दी हे।

मग्घा की चीखे ओर तेज हो गई। वह वेसे ही बेठी बठी गठरी सा बनी खाट के एक ओर लुढक गइ। हिचकिया बोलने भी नही देती थी।

बेटा तुम नाम तो बताओ। ओर तुमसे हम कुछ नही कहगे। रामदास खाट से उठकर उसके सिर पर झुक गया।

बाबा तो मा बाप से भी ऊचे हे तेरे लिए बेटी। तू इनसे बता द। लो म हट नाती हू। चदकौर धीरे-धीरे बोल रही थी। गली की ओर भी झाकती जा रही थी कोइ सुन ना ले। यह भी डर था कि बाबा को देखकर कोइ अडोसिन पडोसिन घर मे न आ जाए।

बेटी मै जा रहा हू भई। मुझे देखकर यहा सब आकर भीड जमा लगे। तू रो मत। सब ठीक कर लेगे। बता दे वह कमीना कौन है? मे जाऊ फिर। रामदास ने मग्घो का कधा जोर से झिझोड दिया।

वह उठकर बैठ गई। रोना बदकर दिया। सिर का दुपट्टा सभाला। घर पर भी वह बालो का जूडा बनाकर रखती थी और सफेद दुपट्टा साफे की तरह बाधती थी। बोली सुक्खू छेडता था बाबा जी मुझे।

रामदास की आखे चौडी हो गई। अपने से ही बोला तभी साला कजर मठ से भाग गया। और फिर उसने मग्घो का सिर सहलाते हुए कहा अच्छा उसका नाम मत लना किसी के सामने। अपनी मा से भी मत बताना। किसी को भी पता न लगे। रोने धोने का जरूरत नही है बेटी। सब ठीक हो जाएगा। यू न रोती रहो।

नह सबात मे से बाहर निकलकर दूर बैठी चदकोर के पास गया लो भाइ मेने बात पूछ ली है। अब तुम इससे पूछताछ मत करना। मेने पूछ लिया है सब। तुम सुबह मरे पास मठ म आना। हम कोइ रास्ता निकालेगे। नम्बरदास आर लडका स बिल्कुल मत बताना नही तो बात बिगड जाएगी। मै अब चलता हू। मुझे देखकर लोग आ जाएगे।

भय ओर प्रसन्नता के मिले जुले अहसास मे रामदास देर रात तक न सो सका।

बाद को नीद आइ भी तो उखडी उखडा। सोया ही न हो। वह सूर्योदय स पहल जाग उठता था। उठकर पहले जगल पानी जाता फिर स्नान करके माला फेरने लग जाता। उस दिन वह पा फटन से भी पहले उठ गया। घडी दखी फिर दोबारा साया नहा। उसका ध्यान हमीरगढ मे था। चाची आर चाचा के बार म सोचते सोचत वह श्याम के विषय म सोचने मे मग्न हो गया। चाचा ओर चाची ता एक दिन समाप्त हा हा जाएगे। श्याम का क्या होगा? जिस घर के पास दस किल्ले भूमि हे सब कुछ हे। परिवार आगे बढना चाहिए। इन्ही विचारो मे डूबे डूबे पो फूटने लगी। टिब्बे की तरफ स मद्धिम-मद्धिम आवाज आन लगीं। मठ मे रात को सोए हुए लोग इधर-उधर खासने-खखारन ओर बोलने लग गए थे। धन सिह ने लगर के बतन खडकाने शुरू कर दिए थे। वह पतीले म चाय उबालने का प्रबध कर रहा होगा। रामदास अभी से चदकौर की प्रतीक्षा करने लगा।

चदकोर दिन चढने के साथ ही आ गई। उसे चैन कहा थी। उसकी तो जैसे इज्जत पर बन आइ थी। वह सोचती कि कब उसकी बेटी का सकट दूर होगा। इस मुसीबत से उसको कब छुटकारा मिलेगा। उसे स्वय कुछ समझ मे नही आ रहा था। पगली ने बताया भी तो तब जब किसी प्रकार का उपाय करना कठिन था। दूसरे महीने ही पता लग जाता तो होशियार बुढियो के पास सौ इलाज होते है। किसी के आगे पेट नगा कर लेती। अब चौथे महीने मे कोइ उपाय नही था। हाय रे वह कहा जाए अब? क्या करे? उसकी डोर अब बाबा रामदास के हाथ मे थी। वही उसका सहारा बनेगा। उसे सत पर पूरा भरोसा था। बाबा रामदास उसका भगवान था। वह ही उसको इस भव सागर से पार करेगा। गाय को गार मे से निकालेगा।

रामदास नहा धोकर अपनी कुटिया मे बैठा माला फेर रहा था। चदकौर ने चुन्नी के दोनो किनारे पकडकर उसके पावो का स्पर्श किया और नीचे ही बोरी पर बेठ गई। हसरत भरी निगाहो से रामदास की ओर देखने लगी।

रामदास न माला हाथ मे लपेटकर कहना शुरू किया मै तो माई रात भर बच्चा के बारे मे ही सोचता रहा। सच मानो नीद नही आई।

आपको तो बाबा जी रात को नीद नही आइ पर मे तो कितनी ही रात तक उल्लू की तरह बैठी ही रही। नीद कहा थी? क्या करे अब बाबा जी। वह बहुत उतावली थी।

मेने तो एक ही बात सोची है। बिटिया को किसी गैर के घर भेज दो। जहा भी बात बन जाए। बस यही इलाज रह गया है अब तो।

बेगाना कौन स्वीकारेगा इस इस दशा मे? फिर उमर ही क्या है इसकी। सोलहवा भी ता नही लगा हे अभी। ना घर मे पसा ह। फिर बोली, मै तो एक ही बात सोचती हू, गेहू म डालने वाली दवा पानी मे घोलकर पिला दू। मरी जान को भी शाति मिलेगी और उसकी जान को भी शाति हो जाएगी।

नहा भइ यह पाप हमस नहा हागा। रामदास ने बाए हाथ का तानो उगलिया नचाद।

तब फिर बाबा जी? चदकोर न लम्बी सास भरी।

आयु इसकी ठीक हे बहुत छोटी नहा ह। भाजर दन का पूरा खच हम कर ेग। लडका भी मने साच लिया हे। उसकी आयु बहुत बडा नही ह। ठाक हा हे। तुम नम्बरदार आर बेटो से यह बात मत बताना। बस अड जाना। तीना समय यही कहना कि म ता लडकी को आज ही विदा करूगी। कल आदमी ले आऊगा म। आदमा का म जिम्मदार हू, उसमे कोइ बुराइ नहीं है। ज्यादा क्या पूछती हा मेरा ही बडा भाइ हे। दस किल्ले जमीन का स्वामी है। तुम अब ज्योतिषी से मत पूछो। घर जाआ। म भा ेस लने जा रहा हू। सुबह सूरज निकलते ही यहा आ जाएगे। तुम लडका को तेयार रखना।

अच्छा बाबा जी जैसा आप कहते हे ठीक हे। आप हमे गलत जगह तो नहा पहुचाएगे। अगर आपका अपना भाइ हे तो इससे अच्छा क्या हे। मुझे तो इसे एक न एक दिन घर से विदा ही करना था। अब इस हालत मे जाती हे तो इसका भाग्य। वह फिर गहरी सासे भरने लगी।

रामदास ने उसी समय मान सिह के पास खबर भेजी। वह गाव से अभी आया नही था। कार लेकर वे हमीरगढ की ओर चल पडे। उसने जाकर श्याम को पूरी बात बताई। वह तुरत ही टिब्बे जाने को तैयार होने लगा। चाचा चाची प्रसन्न हो गए। रामदास जो कर रहा था ठीक था। रामदास ने कहा अभी नही। सुबह पौ फटने पर चलेगे। तू आज दाढी रग ले जितना रग सके। मूछे भी ठीक कर ले। एकदम काका ही लगने लगे।

नम्बरदार तोता सिह और उसके पोते जैला और कैला बिचके नही। आश्चय मे जरूर पडे कि एक ही दिन मे यह क्या कर दिया चदकोर ने। उन्होने किसी पास-पडोस वाले को भी नही बुलाया। वह आए पहले चाय पी। श्याम के साथ चाचा भी था। चदकोर ने मग्घो को नया सूट पहना दिया। सिर के बाल लडकियो की तरह काढकर चोटी गूथ दी। थाली मे चावल गुड और हल्दी रख ली। चदकोर ने पहले गुड की एक एक डली लडके लडकी के मुह मे डाली। फिर हल्दी के टीके माथे पर लगा दिए। टीको पर चावल के दाने चिपकाए। पाच रुपए लडकी को दिए और पाच रुपए लडके को दिए। ब्याह की सम्पूर्ण रस्म यही थी। कार लेकर वे उसी समय हमीरगढ को चल दिए। लोटते समय भी रामदास उनके साथ गया।

18

इस अनाखे ब्याह की चर्चा दाना गावा मे कइ दिनो तक चलता रहा। टिब्बे क लाग हरान थे आर शक कर रहे थे कि जरूर दाल म कुछ काला ह। इसीलिए नम्बरदार न अपनी पोती रातोरात ब्याह कर कही भज दी। उसकी तो उम्र भी ब्याह वाला नहा था। फिर किसी नाते रिश्तेदार को भी नही बुलाया। भीतर-ही भीतर साधु की ओर उगलिया उठ रहा थी। लोग कह रहे थे कि साधु रामदास की ही कोई चाल थी जो एक दिन म ही तोत ढिड्डल की पोती ब्याह कर ले गया। होती होती बात यहा तक भी पहुचा कि ब्याह कर ले जाने वाला व्यक्ति साधु का ही बडा भाइ है। कोइ साधु को गालिया दता और कोइ तोते ढिड्डल को। पर उन दोनो के विरुद्ध कही से कोई तूफान उठता नहा दीख रहा था। क्योकि एक भी व्यक्ति ना तो तोता नम्बरदार के मुह पर कोइ बात कहता आर ना सत रामदास से कोई कुछ कहता था। इन दोनो के लिए तो सब अच्छा ही हा गया था। समय के साथ धीरे-धीरे चचा कम होने लग गइ। तोता पहले की तरह ही मठ मे जाता था और भोजन करता था। जेला ओर कैला भी मठ जाने लगे। अब तो चदकोर भी जाया करती थी। चोरी छिप्पे जाती आर बाबा से अपनी बेटी का हाल चाल मालूम करती। पूछती बाबा जी हमीरगढ से नही आया कोइ इधर?

वहा सब ठीक है। तुम किसी बात की चिता मत करो। अब वह तुम्हारी बटा नही मेरी बेटी है। रामदास धीरजपूर्वक उत्तर देता।

लोग बेठको मे बाते करते अरे भाइ साधु की तो तोते से रिश्तेदारी हा गइ। भीतर ही भीतर क्या हुआ क्या नही हुआ हमे उससे क्या लेना देना है।

उधर हमीरगढ मे चाची जलकोर बहू को घर ही मे रखती। उसने घाट घाट का पानी पिया था उसे सब पता था। वह दिन निकलने से पहले ही बहू को जगल पानी के लिए ले जाती थी। लौटने के बाद दिन भर वह बाहर न निकलती। अडोस पडोस की और गाव की ओरते बहू का मुह देखने तो आती पर जलकौर उन्हे बहू से बाते न करने देती। कहती बहू पर ऊपरी रौ आ जाती हे। उससे बहुत बाते नही करते है।

मग्घो सबात मे बैठी रहती। वही से मुह दिखाकर जलकोर उन्ह वराडे मे ले आता ओर अन्य बाते करने लगती। बहू को समझा दिया था कि तू किसी के सामने खडा मत होना।

चाचा चाची के लिए भतीजो की इज्जत उनकी अपनी इज्जत थी। उनके लिए भतीजे कोइ दो नहा थे। शुक्र था श्यामा को रोटी पकाकर खिलाने वाली मिल गइ। बच्च भी हा जाएग। उनका खाली आगन भरा भरा दिखाइ देगा। राम बता कर गया था कि मग्घो क गभ म उसका ही बच्चा है। यह बात उसने मग्घो को ब्याह कर लान स पूव हा चाचा चाची और श्याम को बता दी थी। उन तीनो के लिए यह कोइ खराब बात नहा थी। बच्चा राम का हुआ या श्याम का एक ही बात हे। कहलाएगा तो श्याम का ही।

यह बात कोन याद रखेगा कि बच्चा विवाह से कितने महीने के बाद जन्मा है।

उसका लौटकर टिब्बे जाने का प्रश्न ही नही था। वह टिब्बे जाता तो पूरी पोल खुल जाती। अब उसे छठा महीना लग चुका था। टिब्बे से भी कभी कोइ उससे मिलने के लिए हमीरगढ नही आया था। नम्बरदार स्वय तो क्या आता जलकोर और फ्ला जला भी नही आए। चदकोर हिम्मत नही जुटा सकी थी। वह ढाब पर हो कभी कभी जाती थी ओर बाबा रामदास से मग्घो की राजी खुशी पूछ जाती थी। रामदास उससे बताता कि वह हमीरगढ जाता रहता है। यू ही कह देता अभी कल ही तो आए है वहा से। वह ठीक है खुश है। चाची तुमसे अच्छी तरह उसे रखती है। तुम चिता मत करो। कान मे कहता जब बच्चा साल छ महीने का हो जाएगा ना तब उसको इधर लाएगे। यही तो उसे आना जाना है और जाएगी कहा।

एक दिन सूर्योदय से पूर्व श्याम उसे बुढलाडे ले आया। छठा ही चल रहा था। उसे कोइ खास दिक्कत नही थी। बुढलाडे के आगे तो बस मिलती थी। वह अच्छी बस मे चढ गए। भीखी वाले घर मे पहुचे तो बच्चे शोर मचाने लगे चाची आ गइ आहा जी चाची आ गइ।

तेजो के बच्चे अब बडे हो चुके थे। मीतो ओर उससे छोटी दोनो लडकियो की शादी हो चुकी थी। एक बची थी। दोनो लडके खूब बडे हो गए थे। उन्नीस-बीस साल के होगे। तीसरी लडकी उनसे बडी थी। तेजो ने मग्घो को छाती से लगा लिया। प्यार किया। उसका मुह हाथ लगा-लगाकर देखने लगी। कहने लगी अरे श्याम यह तो गुडिया-सी हे। सुदर है। तुम तो भाग्यशाली हो। इतनी सुदर बहू मिल गइ।

बात भीखी तक पहुच चुकी थी। बोली छोटे ने कम कर दिया और उसे अब मा बाप ने बडे के गले बाध दी। तेजो हसने लगी। मग्घो के पेट पर हाथ फेरते हुए बोली अरी बलिहारी जाऊ! अब इसका जन्म तो मै यही करवाऊगी।

मग्घो की आखो मे आसुओ की बाढ तो थी पर वह बही नही। तल्ख सासो का धुआ भीतर ही कही भस्म हो गया।

श्यामा मग्घो को बहुत प्यार करता था। एक तो वह उमरदार दूसरे फोजी। उसे बाहो मे भरकर धीरे धीरे भीचता। जैसे उसे कोई रेशमी खिलोना मिल गया हो। मग्घो से उसने कभी कोइ बात नही पूछी थी। पूछता भी क्या राम स्वय ही बता गया था। पर मग्घो रोती रहती। उसके सभी तरफ प्रश्नो के तीर ठुके हुए थे। वह उस समय को याद करती जब वह मठ मे खूब उछलती कूदती रहती थी। फालतू मे बोलती रहती थी। उस बदमाश का यू ही बातो बातो मे सिर चढा लिया। उसका हसना दात निकालना चपर चपर बोलना आज उसके पल्ले रोना छोड गया। क्या उम्र हे उसकी अभी बच्चा पेदा करने का। ब्याह की भी कोन सी उम्र थी? क्या यह ब्याह उसका सचमुच का ब्याह था। यह तो पशुओ के गले मे रस्सी से लटकाया गया लकडी का टुकडा जेसा था। बाधकर रखने का एक जालिम उपाय। मग्घो को अपनी मा की याद आती तो वह फफक उठती। पर

नहा भाभा तुम्हे एसा लगता ह।

ऐसा क्यो दिखता ही हे अब। उठा लाया इस बचारी कल की छारा का। इसकी उम्र कस कटेगी रे तुम्हारे छूछ साड क साथ।

चला यू हा किसी तरह गुजर जाएगी भाभी। हम तो इससे दो चार बच्चे पदा करन ह आर क्या। परिवार ता चलता रहेगा। श्याम ने दो टूक जसा उत्तर दिया।

मग्घो न पुत्र जन्मा। हमीरगढ से जलकोर चाची पजीरी का पीपा लेकर आ गइ। ग दिन भाखा मे रही। लडके के होठा से अपनी उगलियो के पोरू छुआ कर लारिया देती रहती। बडी बडी देर तक उसे गादी मे लिए बेठी रहती। मग्घो बटे का मुह दखती वह हस रहा होता। मग्घा भी मुस्कराने लगती। उसकी आखो म अजीब भद होता अजीब मासूमियत होती। जलकोर और तजो आखा ही-आखे मे बाते करती। जलकौर का सकेत होता इसके हाथ पर इनकी तरह के तो हे नही। रग पक्का हे। हमार लडको का तो एसा रग है नही री।

लो बुआ यह केसी बाते करती हो तुम। अभी तो यह सो रग बदलगा। हाथ पेरो का भी अभी क्या पता। कइ बार बच्चे ननिहाल वाले पर चले जाते ह। टिब्बे वाला का हागा ऐसा या किसी अन्य का। तेजो बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर देती।

शिशु जब चार पाच महीने का हो गया तो श्याम मग्घो को हमीरगढ ले आया। अपना जान मे पूरे परिवार न यह स्पष्ट करना चाहा कि शिशु विवाह से ना महीने बाद हुआ है। सवा डेढ महीने का है। देखने मे ऐसे ही बडा सा लगता हे। गर्भ के समय से ही बहू घी दूध खूब खाती पीती रही हे। बच्चा पेट मे ही बढ गया था। जन्म के समय मा को बहुत कष्ट दिया था।

पर य बाते उनके अपने मन को समझाने के लिए ही थी। गाव के लाग सब जानते थे। मुह ही मुह बाते सब जगह पहुच जाती ह। दीवारो से की गई बाते भी एक दिन जग जाहिर हो जाती है। चौपाल मे कान से मुह लगाकर लोग बतियाते थे लडका राम का हे यार। उन्होने यहा पटक दिया और वह करते भी क्या?

वह तो साधु है। किसी ने कहा।

क्यो साधु आदमी नही होता। उसे उत्तर मिला।

नही वह लडका ऐसा नही है।

यह बाते तुम जाने दो। यह साल साधु कैसे साधु होते हे हमे बताओ। फिर टुडा मे एक सिफत ज्यादा हाती हे।

टुडा कैसे ह वह?

तुझे नही पता। उसका एक हाथ नही हे।

हाथ तो ह दो उगलिया नही ह। किसा तीसरे न कहा।

अरे चलो ठीक है। दोनो का गुजारा हो जाएगा अब। फौजी भी बूढा हो गया हे। वह तो निराश होकर बठा था। इस आयु मे औरत कहा मिलेगी।

यार उम्र क्रा बहुत अतर हे। मा बाप ने कुए मे ढकेल दिया। फाजा दुगुना भा नहा तीन गुना बडा होगा सन्यासिनी से।

जलकार के दो थे। अब इस के भी दो हे। सास-बहू एक ही सी हा गइ समय लो। किसी मनचल ने टुकडा कसा।

शुरू शुरू मे रामदास ने हमीरगढ के कइ बार चक्कर मारे थे। वह दा बार भाखा भी हो आया था। उसका क्या लगता था कार तो थी ही। वह मान सिह को आदेश दता आर वे चल पडते। दोपहर को आकर शाम को लोट जाते। कभी-कभी रात को भी रुक जाते थे। किसी को क्या पता था कि वह मग्घो का समाचार लेने आता है। बात करके उसको ढाढस देता हे। श्याम और चाची से कहता कि वह मग्घो को लाड प्यार से रखे। उससे कभी कोइ चुभती हुई बात न कहे। पर हमीरगढ के लोग यही पक्की तरह समझते थे कि वह उसकी है इसीलिए आता है। साले बाबा से रहा नही जाता। पीछे पीछे लगा रहता हे।

बाबा जी लडके तो मेरे कहने से नही जाते। मै उनके घर कैसे जाऊ। आप उनसे कहे वह मिल जाए कभी। मेरा मन तडपता हे। फिर भी पेट की जाइ है। मेने उसे जनम दिया है।' चदकौर एक दिन मठ मे आकर विनय करने लगी।

और फिर कार लेकर एक दिन रामदास हमीरगढ गया। उसने बुढलाडे जाकर दो-तीन तरह से खूब सारे फल खरीदे। टोकरी भर ली। मान सिह ने टोकरी कार की डिग्गी मे रख ली। मग्घो का बेटा एक साल का हा चुका था। रामदास लडके को देखने पहली बार जा रहा था। उस दिन उन्होने रात हमीरगढ मे ही बिताई। आते समय वह श्याम ओर मग्घो को टिब्बे ले आया। श्याम ने दाढी मूछा मे एक दिन पहले ही खिजाब लगाया था। हाथो लगी कालिख उसकी बडी आयु का होने की चुगली कर रही थी। चदकौर ने मग्घो को छाती से लगा लिया। वह रोने लगी। पास पडोसिने लडके को देखने आ गई। सभी ने मग्घो को कनखियो से देखा। जवाइ के सिर पर हाथ फेरते हुए नाक भा चढाती रही। उन्हे एकदम पसद नही था। यू ही केवल नाते रिश्तेदारी की लाज रखने के लिए आइ थी।

शाम को ताता सिह घर मे बनाइ शराब की बोतल ले आया। वे चारो पीने लगे। जैला और कैला शर्मा शर्मा पी रहे थे। कुछ बोल भी नही रहे थे। चदकौर ने मुर्गी के अडे मगवाकर आलू की सब्जी बना ली थी। उन लोगा ने एक एक पैग पिया था कि फौजी ने अपने झोले मे से रम की बोलत निकाल ली। यह वह अपने साथ लेकर आया था। बोला यह पीते है। इसका स्वाद भी देखो।

तोते के होठो पर मुस्कराहट खलने लगा। जेला ओर केला आश्चर्य से देख रहे थे। श्याम न स्वय ही चार पग बनाए। जसे फाजिया क्री बार मे बठा हो। वे पीते रहे। फोजी बोलने लग गया। तोता एक पैग रम चढाकर चलता बना। वह अधिक झेल नही पा रहा था। लडके बराबर पीते रहे। फोजी की लतडानिया सुनते रहे। फिर तीनो ने साथ

वठकर भोजन किया। चदकोर बड प्रम स भाजन खिला रही था। बार बार पूछ रहा था आर बेटा। एक राटी तो ओर ला बटा। तुमन ता कुछ भी नही खाया बटा।

मग्घा का बटा किलकारिया मार रहा था और हाथा मे से निकल निकल जा रहा था। मग्घा ने उसका नाम सुख रख दिया था।

चदकोर पूछती बेटी यह सुख भी कोइ नाम हे बेटे का। सुखवत कहो सुखदव कहो या सुखदशन कहो। सुख तो आधा नाम हे।

नही मा सुख ही ठीक हे। जल्दी जबान पर आ जाता हे। पूरे नाम ता कइ लोगा के हागे। यह सुख तो हमारा एक ही हे। क्यो सुख ठीक हे ना? वह बेटे को सबोधित करने लगती।

दूसरे दिन मग्घो मान सिह के घर कह आइ कि बाबा सत जी से कह दो कार भेज दे। हम मठ मे आएगे।

श्याम और मग्घो उफ मनजीत कौर कार मे बैठकर मठ मे गए। श्याम वहा पहली बार आया था। मठ का रग ढग देखकर और छोटे भाइ राम की मान मर्यादा प्रतिष्ठा दखकर श्याम बहुत खुश हुआ। दोनो भाइ कुटिया मे बेठकर इधर उधर की बात करने लगे।

मग्घो सुख को लेकर लगर के पिछवाडे चली गई। लगर की दीवार से सटकर बना यह एक गुसलखाना था। यह गुसलखाना रामदास ने बनवा तो लिया था पर यहा काइ नहाता नही था। कुइया से बाल्टी भरकर यहा लाना पडता था। इतना झझट कौन उठाए। इसी कारण यह गुसलखाना वैसे का वेसा ही पडा रहता था। और फिर यह गुसलखाना कडे रखने के लिए अधिक सुरक्षित स्थान था। एक ओर कडे रखे रहते थे और एक ओर सीमेट की खाली बोरिया रखी रहती थी। कुछ और खाली बोरिया कडो के ऊपर भी रखी रहती थी। अलमारियों मे रग-रोगन के खाली डिब्बे थे या घिसे हुए ब्रुश। इस गुसलखाने मे किवाड तो थे पर ताला कुडी नही लगती थी। दरवाजा भेड दो तो गुसलखाना बद दरवाजा खोल दो तो गुसलखाना खुला है मग्घो इस गुसलखाने के भीतर काफी देर तक खडी रही। जैसे कोई खोइ हुई चीज ढूढ रही हो। फिर उसकी निगाह नीचे की ओर गई। यहा लकडी के कोयले से कुछ लिखा हुआ था। कोई अक्षर था। उसे याद आया सुक्खू ने यहा कोयले से म अक्षर लिख दिया था। और फिर मग्घो ने सुक्खू के हाथ से वही कोयला लेकर म पर लकीर खीच दी थी। मग्घो ने गहरी सास भरी। इस गुसलखाने की दीवार पर म पर म एक हुए पडे थे। उसने अक्षर की कालिख पर उगली फेरी और एक छोटा सा काला टीका सुख के माथे पर लगा दिया। बोरियो मे एक पुरानी बोरी अभी भी पडी भी जिसमे कभी किसी ने लाल धागा बाध दिया था। एक गेहू की बडी बोरी थी। उसने यह बोरी वहा से उठा ली। उसकी चार तहे बनाइ ओर लाकर कार मे रख दी।

रामदास ने मग्घो के बेटे को ग्यारह सौ रुपए शगुन मे दिया। दूसरे दिन मान सिह

न अकेले जाकर उसे हमीरगढ मे छोड दिया।

श्याम ने पूछा मनजीत यह बोरी भी वहा से उठा लाइ इसका यहा क्या करगा?

यह ता मै यू ही पैर पोछने के लिए उस दिन कार मे रख ली थी। यह निपूता साथ ही यहा आ गइ। चलो क्या खाने को मागती हे पडी रहेगी। मग्घो ने भोलपन स उत्तर दिया।

19

फसल अभी कटी नही थी। एक दिन सबने मिलकर निश्चय किया कि खेती का काम छोड दिया जाए। बहुत मेहनत करनी पडती है। झझट भी बहुत हे। गुरमेल से अब पहल की भाति काम नही होता था। वह थक जाता तो दम मारने के लिए काम छोड दता। जेल मे इतने साल काटने के बाद उसका शरीर अब वैसा नही रहा था। काम ता वहा भी करना पडता था। पर कैदी चलताइ काम करते थे। धीरे धीरे खूरपी चलाते रहते थे और फिर जेल वाले तो उन्हे काम मे लगाए ही रहते थे। जब आदमी अपने खेत मे काम करता हे तो बात कुछ दूसरी होती है। गुरमेल कहता खेती के इस झझट को खत्म करो। पूरा खेती बटाई पर दे दो। खाने को अनाज आ जाया करेगा। पशुओ के लिए चारा उपजा लिया करेगे।

श्याम भी खेती का काम छोडने के पक्ष मे था। फौजी की नौकरी करन के बाद वह भी अब स्वतत्र रहना चाहता था। थकान तो उसे भी आ जाती थी। पहले तो बडी उम्र की थकान दूसरे युवा पत्नी की थकान। जूझे जाता निकालने-पाने के लिए इसम क्या बचा था। वह अपना बदन तोडकर भी मनजीत कोर को खुश करने की कोशिश करता रहता था। वह तो खुश ही थी जो यहा आ गइ उसके पल्ले बधकर। उसे अपन दिन तो काटने ही थे। खुश होने वाली इसमे कौन सी बात थी। समय पार करने के साधन थे। उसकी एकमात्र खुशी उसका 'सुख था। खेत पर जाने को उसका भी मन नही करता था। उसे उनके खेत से कोई मोह नही था। कभी कभी वह खेत पर रोटी लेकर जाती। खेतो की मिट्टी उसे पराई पराई सी लगती। अपने गाव के रास्ते याद आते। खेत की फसल से उसे क्या लाभ। रोटी खाने के बाद अन्य लोग तो काम मे लग जाते फोजी मनजीत कौर को खेत की मेढो पर टहलाने लग जाता। बाते करते हुए चलता रहता हमारी हद यह यहा तक जाती है। यह खेत अपना है। यह शीशम का पेड अपना ह हमारी हद के भीतर हे। यह शीशम बापू ने लगाया था। यह बजर बच गया हे साला इसे कभी ठीक कराएग। यहा कुछ नही उगता।

वह हा हू करती रहती। उसे श्याम की बातो मे कोइ दिलचस्पी नही होती थी। बतन माजती और टोकरा सिर पर रखकर घर लौट आती। मन मे कोइ चाव नही होता।

खत म काम करने वाल लोग उसे जाते हुए उठ उठकर दखत आर फिर फाजा का आर दख दखकर मुस्कराते हसते।

जलकार खती का काम छोडने के लिए पहले तो तयार नही थी। उसकी निगाह जमान की ओर कम आर सतोष की ओर अधिक थी। वह साचता थी जब खती का काम खत्म हो जाएगा तब सतोष भी नही रहगा। साझी न रहन के कारण सतोष का आना-जाना बद हो जाएगा। तत्क्षण वह सोचने लगती चलो यदि ये चाचा भतीजा खेती छाड द तो छोड दे। सतोष कौन सा अब उसके लिए धारदार रह गया ह। अब तो वह भी गुरमेल जेसा ही हा गया ह। ऊपर से टालता रहता है कुत्ता कही का। वह अपने शरीर की ओर भी देखती थी। सोचती उसके अपने शरीर मे भी अब क्या ह? मास ता कही है नही हडिड्यो का पिजर हे। पिजर तो बजेगा ही। क्या रखा हे इन कामो म अब? पूरी उम्र मे क्या खा लिया क्या पी लिया। एक बात और भी थी घर मे अब बहू थी। बहू की शर्म बहुत होती ह। यदि उसे मेरी किसी बात का पता लग गया तो क्या कहेगी पराए घर की बेटी। वह कब तक बहू को बहाने बना बनाकर खेत भेजती रहेगी आर पीछे से सतोष को घर बुलाती रहेगी। यह अच्छा है अगर खेती का झझट खत्म हो जाए तो सतोष भी यहा से दफा होए। जलकौर कभी चाचा भतीजा की बातो से सहमत हो जाती कभी उनका विरोध करती। उसका अपना कोइ इरादा ना होता।

प्रीतम हवलदार तो काफी बूढा हो गया था। उसका बेटा कृपाल खेती करता था। उनके पास थोडी सी जमीन थी। दो बेल थे और एक ऊट था। साझी भी था। उसका खेती का काम अच्छा था। कृपाल कोई व्यसन नही था। ना ही वह फिजूल खर्ची करता था। केवल खेती मे ही उसका ध्यान था। वह प्रतिवर्ष हिस्से ठेके की जमीन लता। काम करने की ऐसी योजना बनाता कि अनाज के ढेर लग जाते। उसके साथ हर एक व्यक्ति साझी होने को तैयार रहता था। गाव के सभी साझियो से ज्यादा अनाज कृपाल के साझी को मिलता था। पर वह साझी का खून चूस लेता था। कमजोर समजोर साझी उसके साथ काम निभा भी नही पाता था।

अगले साल के लिए उनकी जमीन कृपाल ने साझी मे लिखवा ली। दोनो परिवारो का पहले ही आना जाना था। बस इतना था कि प्रीतम हवलदार का घर दूसरी पत्ती मे था। उनकी अपनी जमीन भी दूसरी ओर थी। जब गुरमेल से सते की हत्या हो गइ थी तब पेश होने से पहले उसन प्रीतम की ही झोपडी मे दिन गुजारे थे। गाव मे किसी को काइ शक नही हुआ था कि गुरमेल प्रीतम की झोपडी मे है। प्रीतम का खेत गाव से दूर था। अन्य खेतो से अलग ही था यह खेत। इधर का क्षेत्र तो उजाड जैसा ही था। पशुओ का चरागाह थी और पथरीली धरती थी। दूसरे खेतो के लोग उधर उनक इस खेत की आर कम ही आत जाते थे। झापडी मे रहने वाले का किसी को पता नहा लगा होगा। किसा का पता होगा भी तो उसन किसी को बताया नही होगा। ऐसी बात कोइ करता भी नहा ह बापू से दुश्मनी हो जान का डर रहता था। पुलिस के मुखबिर से तो सभी

नफरत करत हे। पास स थूकते हुए निकल जात ह।

प्रीतम हवलदार ने जब गुरमेल को अपनी झोपडी मे शरण दी थी तब उसने इस बात का भय नही खाया कि अगर उसे पुलिस पकड लेगी तो क्या होगा? शरण देने क अपराध मे उसे भी पकड सकते थे। वह तो गुरमेल का वक्त बेवक्त पर खाना पाना भा पहुचाता रहता था और बिस्तर भी वही देकर आया था। खेत पर जाकर उसकी दख भाल भी रखत थे। यदि कोई व्यक्ति झोपडी की ओर जाता दिखता तो उसके पीछे कुत्ता हुस्का देते थे। उनके पास शेर के जसा एक काला कुत्ता था। वह खेत मे जानवर ओर आदमी को तो क्या चिडियो को भी नही फटकने देता था। खूब तेजी से झपटता आर पशुओ को भगा देता था। उसने कइ आदमी पकडे थे। डर के मारे कोई प्रीतम के खेत मे नही जाता था।

गुरमेल ने कृपाल से कहकर अपनी जमीन मे एक बीघा मक्का की बुवाइ करवा दी और एक बीघे मे पशुओ के लिए चारा। शेष सभी भूमि पर अमरीकी कपास। एक बीघा जो ऊचा स्थान था और रेतीला टीला सा था वहा ग्वार बो दी। दोनो बेल बेच दिए। खेतो से चारा लाने के लिए एक बैलगाडी खरीद ली ओर एक वृद्ध बैल खरीद लिया। गाडी खीचने मे कौन-सी ज्यादा शक्ति लगती है। इसी बैल से काम चल रहा था। भेसे दो ही रखी। दूध-दही का सारा काम जलकौर देख लेती। एक भैस से पूरा नही पडता था। मग्घो खूब घी दूध खाती पीती थी। सुख भी अब बहुत बडा हा रहा था। चलने तो कभी का लग गया था। अब तुतला-तुतलाकर सब बोलने लगा था। बाते करता और शोर मचाता। उगलियो मे से चूते हुए घी वाला मलीदा जलकौर उसे खिलाती थी। शेष लोग भी जी भरकर खाते पीत थे। जलकौर घी का बर्तन भरे रखती थी।

दो साल तक जमीन कृपाल के पास ही रही। तीसरे वर्ष उन्होने जमीन बदल दी। यह कोई कानून था या लोगो मे यू ही वहम था कि यदि किसी के पास लगातार तीन वष तक जमीन साझे-ठेके पर रहे तो वह स्थाई रूप से उस पर अपना अधिकार कर सकता है। मालिक का फिर कोइ जोर नही रहता। तीन साल खेती करने के बाद जमीन जो हल जोतता है उस किसान की हो जाती है। यद्यपि हवलदार प्रीतम सिह से उनका कोइ विवाद नही हुआ था फिर भी वहम तो वहम ही है। कानून तो-कानून होता ह। आदमी की नीयत बदलने मे कितना समय लगता है। सगे भाइयो मे खाई पड जाती है। ये तो फिर भी दूर के थे।

जाडे के दिन थे। एक दिन दोपहर को गुरमेल खेत मे चक्कर लगाने गया। देखना चाहता था कि गेहू की कैसी फसल हुई है। इस वर्ष गेहू की उपज अच्छी हुइ थी। जिन्होने गोबर की खूब खाद डाली थी उनके यहा काली स्याह बालिया खडी थी घटा जेसी उनके जड-तने भी मजबूत थे।

टीले पर चने उगे थे। दोना ऋतुओ मे यहा कुछ न-कुछ बो दिया जाता था। पानी बरसने पर एक बार गोडकर घास फूस निकाल दिया जाता। दूसरी वर्षा होने के बाद जोत

क पटरा चलाकर बान बो दिया जाता आर जपा हान पर थाटा थान फसल तयार हा जाता। आधिया पाध समत रत उडाकर ले जाया करता था। या यह इतना ग्न मिट्टा उडा ल जाता कि जड नगा हा जाता आर य पाध खड खड हा सूख जात। मावन क दिना म अधिकतर इस टील पर ग्वार हा बाते थ आर कातिक म भा यहा जाया जाता था।

पहले जह टाल पर ही चढ गया। चने क पाध कहीं कहा पर ही थ। मगर उनम जन अच्छ निकल थे। उसने देखा कि कहा कहा तारेमीर क भा पाधे थे। उनका ऊचाइ ज्यादा नहा थी। जब वह टील क शिखर पर पहुचा ता शू की सा आवाज आइ। उसका पाव साप पर पड गया था। साप न उस डसा था या नही डसा था पर उसका पिंडला म काटा सा अवश्य चुभा था। जेसे बरी या कीकर का काटा चुभा हो। उसन दखा था साप वहा अपना बाबी मे पानी की धार की तरह घुस गया था। उसने अनुमान लगाया साप अपनी बाबी मे से निकलकर धूप सेक रहा होगा। उसने अपनी पिडली पर हथेली फेरा। पतले लहू से उसकी हथली गीली हो गइ थी। उसकी समझ मे नहा आ रहा था कि यह उसकी टाग मे साप ने कुछ कर दिया ह या ओर कुछ लगा हे। टीले पर कहा-कही झखरी के पोधे भी थे। जब साप ने शू किया था तब वह उसके पेर के नीच आ गया था। वह ता उछलकर पीछ हट गया था। साप उसे कब डस गया यह तो उसका वहम ह। उसकी टाग पर यह तो कुछ आर हा चीज लगी हे। उसने अपने मन को यह भी समझाया कि यह साला कौन सा साप हागा' चूहे खाने वाला साप है। चूहे का बिल हथियाए बैठा हे। यदि इसने डस भी लिया होगा तो क्या है। उसका जी किया कि वह पास क किसी खेत से फडुआ ल आए ओर चूहे का बिल खोदकर उसमे से उस साप को निकाले ओर फडुए से मार मार के उसके टुकडे-टुकडे कर दे।

इन्ही विचारो मे उलझा वह आग निकल गया। गेहू सचमुच बहुत अच्छा हुआ था। एक ओर से थाली फेकी ता दूसरे सिरे तक ऐसे निकल जाएगी जेसे तालाब के पानी पर कागज की नाव तैर जाती हे। उसने सत के साथ साझी किया गया वह भाग भी दखा जहा कीकर का पड था। यही उसने सते को गडासे से मारा था। साला जाट बदमाशी पर उतर आया था पा गया मजा। उसने मर खप चुके सते को गाली दी। उधर दूर अपने खेत मे सते के दोनो बेटे ओर उनका साझी कोइ काम कर रह थे। शायद गहू को पानी लगा रहे हो या घास फूस साफ करने आए हो। उनकी ओर देखकर उसका मन काप गया। साथ ही उसकी टाग मे दद हुआ। उसने लुगी उठाकर देखा पिडला मे कुछ नही हुआ था। कोइ तरल पदाथ भी नही रिसा था। बस जरा सी सूजन थी। उसके सिर मे एक झटका लगा तो वह गाव की ओर लोट पडा। गाव क रास्ते म चलत हुए उसे चक्कर आने लगा। उसे विश्वास हाने लग गया कि यह तो सचमुच साप डस गया ह। वह सीधा चला जा रहा था कि उसका पैर गाडी के पहिए स बने गड्ढ मे चला गया। वह गिरत गिरते बचा। अब जल्दी से घर पहुच जाना चाहता था। गाव बहुत दूर नही था। वह जल्दी जल्दी चलने लगा। आखो के आगे अधेरा आता जा रहा था।

जाडे का निखरा हुइ तज धूप उस मरा मरी लगन लगी। जस आसमान म बादल छाय हुए हा। रास्त म उसे दा तीन लोगा न बुलाया। सुना ता जरूर पर वह काइ उत्तर देन की हिम्मत नहा कर सका। उसन तुरत घर पहुचना हा ठीक समझा।

वह भातर आगन मे आया ता सुख दाडकर उसका टागा स लिपट गया। भराइ हुइ आवाज स उसने जलकार का आवाज दी कहा हो। इधर आओ।

लडका उसकी टागो स छिटककर नीच गिर पटा था आर रोन लगा था। वह स्वय आगन म पडी खाट पर लुढक गया। जलकार घर म नहा थी। श्याम भी उस समय पता नही कहा था। मनजात कार न सुना ता दोडकर आ गइ। पूछा क्या ह चाचा वह उधर चूल्ह के पास से चबूतरे पर धूप मे बठी श्याम का कमीज का टूटा बटन लगा रही था। गुरमल सिह न पानी मागा। मनजीत कोर ने गिलास मे पानी ला दिया। घडे का ठडा पानी उस बेहद खराब लगा। सिहरन भी हुइ। बोला अपनी चाची का जल्दा स बुला ला कहा ह?

सुख राना बद करके फिर गुरमेल क पेरो की ओर आकर खडा हो गया था। पहल वह राज लडके को कितना बुलाता चलाता था। गादी मे उठाकर उसकी मिट्ठिया लेन लगता था। उसस लाड करता। पर आज उसने सुख को बुलाया क्यो नही मनजीत को कुछ शक हुआ। वह जूती पहनकर तुरत घर स बाहर निकल गइ। जलकोर पडासिन के घर मे थी।

सास बहू आइ तो वह बेचेनी मे उठकर बेठ गया। बाला मुझे घी गम करके दे। घूट मारकर पियूगा। दिल मे विष उतर रहा ह। मुझे तो साप ने डस लिया है।

हाए रे! देखू तो कहा? जलकौर एकदम स तडप उठी।

गुरमेल ने टाग पर से कपडा हटाया। पिडली खूब सूज गइ थी। पत्थर की तरह सख्त हो गइ थी। ना तो अगुली से दबती और न दुखती थी। पर टीस उठ रही थी। जेसे टाग के भीतर कोइ चीज घुसकर बैठ गइ हो।

मनजीत कोर घा गर्म करने लगी। जलकोर दाडकर चोपाल पर गइ। श्याम वहा बेठा ताश खेल रहा था। वह जोर स चिल्लाइ श्यामा दोडकर आ। तेरा चाचा खेत से पता नही क्या करवा आया।

उसन तुरत ताश के पत्ते पटके ओर उठकर चाची के साथ चल पडा। इतने मे चार पाच पडोसिन बुढिया उनके आगन मे गुरमल का खाट को घेर कर खडी हो गई। कटारी मे घी डालकर बहू न उसके मुह से लगाइ। उसने जल्दी जल्दी दो तीन घूट पिया और लेट गया। पर दूसरे ही क्षण ओ ओ करके सब बाहर निकाल दिया। उसमे हरा हरा कुछ था। बुढिया बोली निकाल लेने दो बेटी। जितना विष निकल जाएगा उतना ही आराम होगा।

श्याम ने उसकी टाग देखी तो चितित हो गया। आश्चय से आख फाडकर देखता रह गया। उसे कुछ सूझ नही रहा था कि क्या किया जाए।

बुढिया गुरमल का कधा पकडकर बठाता आर घी की कटारा मुह स लगाता। कहता मलू पा ल भइ दा घूट दिल कडा करके फायदा करगा।

उसन जितना वार भी घी पिया उसी क्षण बाहर निकल गया। हर बार हरा हरा झाग सा बाहर निकलता। मुह म स गाढी लार हाठा की कार स लटकन लगता। वह हाय हाय करन लगा। उसका सिर चकरा रहा था। दिखना बद हा गया था। बोला नहा जा रहा था। कोइ हाश नहा था।

बेटी बुढलाडे भज किसी को। वहा काइ सयाना ह। कहत ह मनका लगाता ह साग विष खीच लता हे। कोइ बुढिया कह रही थी।

किसी का कुछ नही सूझ रहा था कि क्या किया जाए। मुहल्ले का ही एक आदमी आया बोला जलता हुआ कोयला लाकर उस स्थान पर रख दो जहा डसा ह जहर इकट्ठा हाकर जल जाएगा।

चूल्हे मे कडे की आग थी। लकडी के कोयले भी थे। वही व्यक्ति मिट्टी क ढक्कन मे कोयले ले आया। एक कोयला चिमटे स पकडकर उसकी टाग पर रख दिया। गुरमेल को कोइ कष्ट नहा हुआ। उसने कोइ ऊह आह नही की। उसका मास चर चर करके जलने लगा। उसन दो कोयल ओर धरे। रुपऐ जितना स्थान जला डाला। गड्ढा हा गया। लहू नही निकल रहा था। उस समय गुरमेल को कोइ सुध नही थी।

उसकी यह दशा दखकर जलकार छाती पीटने लगी। मनजात कार उस सभालन लगी। वह रोती भी जा रही थी। श्याम भयभीत होकर खडा था। क्या करे वह कहा जाए' बुढियो ने देखा गुरमेल की नाडी बद थी।

20

यद्यपि जलकार ने उम्र भर तक गुरमेल को नाक के नीचे नहा लाइ थी पर उसकी मृत्यु के पश्चात वह उसके विछोह को अपने मन से लगा बेठी। जेसे किसी ने उसके सिर पर से छाव एकदम से चादर मे लपेटकर बगल म दबा ली हो। पति के बिना अब वह मरूस्थल मे मेगनी की भाति भुज रही थी। भट्ठी की खील की तरह। पुन्नण व तेरीआ कित ना पैदीआ दस्सा। गुरमेल के कारण ही वह इस घर की रानी बनी हुइ थी। अब वह सब तरफ से बाझ हो गइ है। वह था तब कभी महसूस ही नही हुआ था कि उनकी कोइ सतान नही हे। अब वह नही हे तो कुछ भी नही ह। वह अब खाखली हो गइ ह।

उसकी जिदगी म तीन व्यक्ति बाहर से आए थे। पहला उसका जेठ भजना फिर सताषा चमार ओर फिर भीखीवाला फतह सिह। फतह सिह तो जेस आया ना आया बराबर था। आधी के झोके मे कटीली टहनी की तरह उससे आ टकराया था। बाद को

यह उसके काट बीनता रह गइ। पुराना जाट का कटाला टहना हा था वह। एकदम स नला आर चुप गइ। पता नहा उस पगल क मन म क्या आया छाडकर चला गया। साथ म भताजा का भा ल गया। शायद उम सतोप क बार मे भा मालूम था। उसन मुच अच्छा ना समझा हो।

सताप म भी क्या बचा था। नदा क पानी क साथ आइ गाली चिकना मिट्टा का तरह था ना बदन पर पटी चाट का तरह चिनचिनान लगती ह। सतोपा किराए का चाज का तरह आता था ओर उसका मेर साथ क्या रिश्ता था। किराए म चमार खाता पाता भी ता कितना था। उसको डिब्ब भर भरकर घा दती थी वह। घर आकर भी वह कान सा कम खाता पाता था। उसकी पत्नी भी चीज बस्त ल जाती थी।

अब तो वह श्याम आर उसकी बहू क रहम पर थी। उम्र के अतिम वर्षो म ता वह हे ही क्या पता इनसे भी खराब दिन आएगे जब उसका अतिम सहारा ये बहू बटा ही तो हाग। दिन पर दिन रिश्तेदारी म उसकी बात कम हाती जा रही थी धीरे धीर मनजीत कार का दबदबा बढ रहा था। बस इतना था कि वह हर बात म सास से पूछती अवश्य थी उसका सलाह ले लती थी। बुढापे मे इतना हा बहुत होता ह कि कोइ उससे पूछकर तो काम करता ह।

वह सुख को खिलाती रहता थी। उसे हद से ज्यादा प्यार करती थी। रात का अपने पास सुलाने लग गइ। अब वह सुख ही उसे व्यस्त रखता था। सुख ही उसका मन बहलाता था। सुख के कामो मे ही जलकोर का दिन पार हो जाता था। दोना भेसो का दूध मनजात कार दुहती थी। दूध दही भी वही करती। रोटी दूध से लेकर गोबर कडा तक घर का सभी काम मनजीत कोर करती थी। श्याम खेत से चारा ले आता था। मनजीत कोर मशीन मे चारा डालती आर फाजी मशीन चलाता था। पर पेसा-धेला जलकौर के हाथो मे ही रहता था। श्याम जानबूझकर ऐसा करता था। घर की मालकिन अभी भी जलकार थी। श्याम ने मनजीत कोर को समझा रखा था कि पाच किल्ले की मालिक अब चाची ह। यदि उसे आगे रखेग उसकी बात मानेगे तब ही यह अपनी होकर रहेगी। आदमी के मन का कुछ पता नही लगता। चाची का मन बदल गया तो यह अपनी जमीन जिसको चाहे दे दे अपना कोइ वश नही हागा। चाची को अपने पक्ष मे रखना बहुत जरूरा ह।

हवलदार प्रीतम सिह ओर गुरमेल पहले एक साथ बठकर शराब पिया करते थे। कभी प्रीतम के घर ओर कभी उनके घर। कभी बुढलाडे जाते तो मडी से शराब पी आते। गुरमेल उसका अहसान नही भूलता था। हवलदार प्रीतम न कत्ल के केस के समय गुरमल के पक्ष मे गवाही भी दी था। प्रीतम भी तो उसे अपना समझता था। जब गुरमेल बठिडा की जेल मे था तव वह जलकोर के साथ दो बार उससे भेट करने गया था। दोना बार उसे हिम्मत बधाकर आया मलू, हिम्मत मत हारना। हम तेरे साथ है। आठ दस साल क्या होते है। यू ही बीत जाएगे। जलकोर की चिता भी मत करना।

नसा तरफ कोई आख उठाकर नहा दख सकता। एस ही गुरचरन सिह नम्बरदार उसस न कम्न नाता था। उसने भा गवाही दी थी। गुरमल क हक म बालत समय वह किमा म बिचका नहा था। डटकर गवाही दी था। वह भी जब कभा जाता गुरमल का हिम्मत बधाकर आता।

पहल अगर प्रातम हवलदार आर गुरमल दारू पात थ ता अब श्याम आर कृपाल एक साथ बठते थ। एक तो पहले प्रीतम आर गुरमल का लिहाज था फिर उन्हान दा साल तक उनका जमीन साझ म जोती था। सबध आर घनिष्ठ हा गए। दाना घरा का एक दूसरे क यहा खूब आना-जाना था। एक साल जमीन बदलकर अब फिर दा साला म कृपाल क पास उनकी जमीन था। अधिकतर वह श्याम क घर पर बठकर हा शराब पिया करत थे। मनजीत कार सब्जिया दाल छाक छाककर देती थी। जब व बठे हात ता उनकी सेवा म चकरघिन्नी की तरह डोलती रहती था। श्याम बठ बठे हुक्म चलाता मनजीत यह ला मनजीत वह ला। जब कृपाल घर आता ता सुख का गादी म लकर बठ जाता। खाते समय वह उसकी गादी मे एस बठता जस कृपाल हा उसका पिता हो।

जलकोर श्याम को टाकती या मना नही करती थी। पर कृपाल का इस प्रकार उनक घर बठकर दारू पीना ओर बहू का इस प्रकार उनक आग पाछ लगे रहना उस पसद नही था। कभी वह अपने मन को समझाती—यदि प्रीतम ओर गुरमल एसे यहा बठकर दारू पी लते हे तो इसमे क्या बुराइ ह। श्याम भी ता उनके घर जाता ह। पर श्याम जब जाता ह तो दो घटे से ज्यादा समय वहा नही रुकता हे। दारू हा पीता ह रोटा अपन घर आकर खाता ह ओर यह बेशम कृपाल दारू भी यही पाता ह आर राटा भा यही खाता हे जेसे कि मेहमान हो। कितनी कितनी दर तक बेठा रहता ह आर जब राटी खा ली दारू पी ली तो अपन घर जाओ। पर नही वह खाना खाने के बाद भी बठकर बातें करता रहता हे। भीतर सबात म आकर बैठ जाता ह। जलकार से पागला जसी बाते करने लगेगा। हमेशा वही उसस कहती ह भाइ कृपाल रात बहुत हा गइ हे अब घर जाओ। जसमल कौर बठी प्रतीक्षा करती हागी। यह क्या श्याम तो राटी खाकर शराब म धुत्त होकर वहा वराडे मे ही खाट डाल लेता ह ओर यह कृपाल ससुरा उसे वराडे मे अकेला छोडकर यहा मेरे पास सबात म क्यो आकर बेठ जाता ह? वह इन सभा बातो पर अपने मन मे विचार करती ओर चुप हो जाती। उससे वह क्या कहती। चाची चाची कहता कृपाल उस अच्छा नही लगता था। चाची तो श्याम भी कहता ह पर उसक चाची कहने मे फक हे अपनापन ह। यह कृपाल जब बुलाता हे तो इसम उसे काइ गज छुपी लगती हे।

कृपाल की पत्नी जसमल कार टिबियल जसी आरत था। ना तो उसका कद काठा ठीक थी ओर न ही सेहत अच्छी थी। सूखी जैसी थी। झाका दकर चलती थी। अपना समझ से नाज नखरे से चलती थी। पर शरीर मे उसके कुछ नहा था। उस दम की

यह उसके कोट बोनता रह गइ। पुराना वाड का कटाला टहना हा था यह। एकम्म म नन्ला आर चुप गए। पता नहा उस पगल के मन म क्या आया छाडकर चला गया। साथ म भताना का भा ल गया। शायद उस सताप के बारे म भा मालूम था। उमन मुझ अच्छा ना ममझा हो।

सताप म भा क्या बचा था। नदा के पानी के साथ आइ गाली चिक्नी मिट्टा का तरह था जा बदन पर पडा चाट का तरह चिनचिनान लगती ह। सतोपा किराए का चान की तरह भाता था आर उसका मर साथ क्या रिश्ता था। किराए म चमार खाता पाना भा ता कितना था। उसको डिब्ब भर भरकर घा दता थी यह। घर आकर भा यह कान सा कम खाता पाता था। उसकी पत्ना भी चान बस्त ल जाता थी।

अब तो यह श्याम आर उसका बहू क रहम पर था। उम्र के अतिम वर्षो म ता वह हे हा क्या पता इनसे भा खराब दिन आएगे जब उसका अतिम सहारा ये बहू बटा ही तो हाग। दिन पर दिन रिश्तेदारा म उसका बात कम होती जा रहा थी धीरे धीर मनजात कार का दबदबा बढ रहा था। बस इतना था कि वह हर बात म सास से पूछती अवश्य थी उसकी सलाह ले लती थी। बुढाप मे इतना हा बहुत होता ह कि काइ उससे पूछकर तो काम करता ह।

वह सुख को खिलाती रहती थी। उसे हद स ज्यादा प्यार करती थी। रात का अपने पास सुलाने लग गइ। अब वह सुख ही उस व्यस्त रखता था। सुख ही उसका मन बहलाता था। सुख के कामो मे ही जलकोर का दिन पार हो जाता था। दोना भेसो का दूध मनजीत कार दुहती थी। दूध दही भी वही करती। रोटी दूध से लेकर गाबर कडा तक घर का सभी काम मनजीत कोर करती थी। श्याम खेत से चारा ले आता था। मनजीत कौर मशीन मे चारा डालती ओर फोजी मशीन चलाता था। पर पसा धेला जलकार के हाथो मे ही रहता था। श्याम जानबूझकर ऐसा करता था। घर की मालकिन अभी भी जलकार थी। श्याम न मनजीत कोर को समझा रखा था कि पाच किल्ले की मालिक अब चाची ह। यदि उस आगे रखेगे उसकी बाते मानेगे तब ही यह अपनी होकर रहेगी। आदमी के मन का कुछ पता नही लगता। चाची का मन बदल गया तो यह अपनी जमीन जिसको चाह दे दे अपना काइ वश नही हागा। चाची को अपने पक्ष मे रखना बहुत जरूरी हे।

हवलदार प्रीतम सिह ओर गुरमेल पहले एक साथ बेठकर शराब पिया करत थे। कभी प्रीतम के घर ओर कभी उनके घर। कभी बुढलाडे जाते तो मडी से शराब पी आते। गुरमेल उसका अहसान नही भूलता था। हवलदार प्रीतम न कत्ल के केस के समय गुरमल क पक्ष मे गवाही भा दी था। प्रीतम भी तो उसे अपना समझता था। जब गुरमेल बठिडा की जेल म था तब यह जलकार के साथ दो बार उससे भेट करन गया था। दोना बार उसे हिम्मत बधाकर आया मलू, हिम्मत मत हारना। हम तेरे साथ है। आठ दस साल क्या होते है। यू ही बीत जाएगे। जलकोर की चिता भी मत करना।

सका तरफ कोई आख उठाकर नहा देख सकता। ऐसे ही गुरचरन सिह नम्बरदार उससे नए रिश्ते नाता था। उसने भा गवाही दी थी। गुरमेल के हक म बयान समय वह किसी से ड़िझका नहा था। डटकर गवाहा दी था। वह भा जब कभी जाता गुरमेल का हिम्मत बंधाकर आता।

पहले अगर प्रीतम हवलदार ओर गुरमेल दारू पीते थे तो अब श्याम और कृपाल एक साथ बैठते थे। एक तो पहले प्रीतम ओर गुरमेल का लिहाज था फिर उन्होने दो साल तक उनका जमीन साझे मे जोती था। सबध ओर घनिष्ठ हो गए। दोना घरो का एक दूसरे के यहा खूब आना-जाना था। एक साल जमीन बदलकर अब फिर दो सालो से कृपाल के पास उनकी जमीन था। अधिकतर वह श्याम के घर पर बैठकर ही शराब पिया करते थे। मनजीत कौर सब्जिया दाले छोंक छोंककर देती थी। जब वे बैठे होते तो उनका सेवा मे चकरघिन्नी की तरह डोलती रहती थी। श्याम बैठे-बैठे हुक्म चलाता मनजीत यह ला मनजीत वह ला। जब कृपाल घर आता तो सुख को गोदी मे लेकर बैठ जाता। खाते समय वह उसकी गोदी मे ऐसे बैठता जैसे कृपाल ही उसका पिता हो।

जलकौर श्याम को टोकती या मना नही करती थी। पर कृपाल का इस प्रकार उनके घर बैठकर दारू पीना ओर बहू का इस प्रकार उनके आगे पीछे लगे रहना उसे पसन्द नही था। कभी वह अपने मन को समझाती—यदि प्रीतम और गुरमेल ऐसे यहा बैठकर दारू पी लेते है तो इसमे क्या बुराई है। श्याम भी तो उनके घर जाता हे। पर श्याम जब जाता ह तो दो घटे से ज्यादा समय वहा नही रुकता हे। दारू ही पीता हे रोटा अपने घर आकर खाता है ओर यह बेशर्म कृपाल दारू भी यही पीता हे ओर रोटी भी यही खाता हे जैसे कि मेहमान हो। कितनी कितनी देर तक बेठा रहता हे ओर जब रोटा खा ली दारू पी ली तो अपने घर जाओ। पर नही वह खाना खाने के बाद भी बैठकर बाते करता रहता हे। भीतर सबात मे आकर बैठ जाता हे। जलकोर से पागलो जैसी बाते करने लगेगा। हमेशा वही उससे कहती हे भाइ कृपाल रात बहुत हो गई हे अब घर जाओ। जसमेल कौर बेठी प्रतीक्षा करती होगी। यह क्या, श्याम तो रोटी खाकर शराब मे धुत्त होकर वहा वराडे मे ही खाट डाल लेता है ओर यह कृपाल ससुरा उसे वराड मे अकेला छोडकर यहा मेरे पास सबात मे क्यो आकर बैठ जाता हे? वह इन सभा बातो पर अपने मन मे विचार करती और चुप हो जाती। उससे वह क्या कहती। चाची चाची कहता कृपाल उसे अच्छा नहा लगता था। चाची तो श्याम भी कहता हे पर उसके चाची कहने मे फक है अपनापन हे। यह कृपाल जब बुलाता हे तो इसमे उसे कोइ गरज छुपी लगती हे।

कृपाल की पत्नी जसमेल कौर टिबियल जेसी औरत थी। ना तो उसकी कद काठी ठीक थी ओर न ही सेहत अच्छी थी। सूखी जैसी थी। झोका देकर चलती थी। अपनी समझ से नाज नखरे से चलती थी। पर शरीर मे उसके कुछ नही था। उसे दमे की

बीमारा थी। कभा कभी ता एकदम स सास उखट जाती था। हाथ परो की पन नाता। रोटी दूध का काम भी कठिन हो जाता था। वह कृपाल का धक्का भी नहा झल सकता थी। दो लडकिया पता नहा कसे ओर कब हो गइ थी। नही तो कृपाल उस पशु नमा लगता। ऐस एसे हाथ पेर पशुआ जेसे हा। रग पक्का था। कीकर की अनगढ बिना तराशा डाली जसा। कितनी विशाल शरीर था कृपाल का। जसमेल कौर काने भस भा कृपाल मे कोइ अतर नही समझती थी। दारू बहुत पी जाता तो खाता भी जानवरा का तरह हा था। जिस दिन से वह श्याम क पास जाने लगा था जसमेल को आराम मिल गया था। वह रोटी भी उन्ही के घर खा आता था। यद्यपि अब दोना बेटिया रोटा पकान के काबिल हो गइ थी पर शराबी का समय कु समय आकर रोटी मागना किसी का भा बुरा लगता हे। कृपाल की मा नही थी नही तो वहा उसको समझाती कि समय स घर आ जाया कर। प्रीतम सिह की बात तो वह सुनता ही नही था। कहता फौजी ह भाक्ता रहता ह। फौजियो का दिमाग तो अफसर निकाल लेते है शेष शरीर उनका वर्दी म भूस सा भरा होता हे।

मग्घो को पहले दिन ही कृपाल सुक्खू जेसा लगा था। जब उन्होने पहल साल उनकी जमीन साझे मे ली थी तो वह उस दिन उनके घर आया था और वराडे म बेठकर श्याम के साथ राराब पी थी। तब गुरमेल जीवित था। उन लोगो ने दो पैग गुरमेल का भी दिए थे। पर लौडे लिहाडियो की बाते सुनकर वह उनके पास अधिक देर नही बठा था। भोजन करके बाहर ही कही चला गया था। उस दिन उन्होने रम पी थी। जमीन हिस्से म देने की खुशी मे ही श्याम ने कृपाल को पिलाई थी। पहले कभी कृपाल उनके घर नही आया था। यदि आया भी होगा तो मग्घो ने उसकी ओर कोइ खास ध्यान नहा दिया था। पहले तो उसका पिता हवलदार प्रीतम ही आया करता था और गुरमेल के साथ बैठकर दारू पिया करता था। उस दिन कृपाल ने भोजन भी उन्ही के यहा किया था। श्याम न मुगा काटा था। मुर्गे के कारण ही कृपाल ने यहा भोजन किया था। चत का महीना था। यह ऋतु बहुत बढिया होती हे। जाडा खत्म हो जाता हे ओर गर्मी शुरू होने लगती हे। खेतो मे गेहू का सोना ठहाके लगाता हे। बैसाखी आने वाला होती ह। जाट पहले से ही फसल का हिसाब-किताब लगाने लगते है।

वे आगन मे ही खाटे बिछाकर बैठ गए थे। पहले वराडे मे बैठे थ। खाना खाने के लिए आगन मे आ गए थे। बीच मे छोटी सी मेज रख ली थी। वह उन्हे रोटी देन गइ थी। आगन मे दीवार की खूटी पर लटकी लालटेन का प्रकाश था। उसने जब थालिया मेज पर रखी थी। तक कृपाल ने उसके चेहरे को बहुत गौर से देखा था। श्याम तो नश मे नीची गदन किये बेठा था। जरा जरा सी देर मे उसका सिर झटके खा रहा था। जस मन ही मन म स्वय कोइ बात कहता ओर फिर स्वय ही उसका उत्तर दे देता हो। मेज पर थाली रखते ही कृपाल ने थाली की ओर अपना हाथ बढाया। उसने देखा कि यह हाथ तो एकदम सुक्खू के जैसा हाथ ह। कृपाल की आखे सुक्खू की आखे है। उसे लगा

जस सुक्खू ही बठा हा।

उस रात का वह सो न सकी। अगर आख लगती भी था ता उस सुक्खू का सपना आन लगता। वह जेसे उसके दरवाजे क बाहर खडा दूध की भिक्षा लन आया हा। दूसर हा क्षण वह दूसर रूप म उसके दरवाज पर बेठा श्याम के साथ शराब पी रहा आर फिर वह उसे खाना दे रहा होती। वह उसका हाथ पकड लेता। श्याम क बठ हाते हुए भा यह क्या होता था। उसकी आख खुल जाती ओर वह उठकर बेठ जाती। यही स्वप्न उसे तीन बार आया। स्वप्न आता और नीद उखड जाती। इसी मे पूरी रात बीत गइ। उसके इस सपने मे भटकटइया ओर अलेहा होता था। उसके इस सपने मे गहू की सुगध भी होता थी।

और फिर कृपाल को इस बात पर आश्चर्य हुआ था कि वह जब उनके घर पर हा मननीत कोर से पहली बार मिला था तो उसने खरैरी खाट पर एक बोरी क्या बिछा रखी थी। बोरी के एक किनारे पर एक लाल धागा बधा हुआ था।

मनजीत कोर तो उसे घर के लोग ही कहते थे पत्ती और गाव मे उसका नाम मग्घो साधवी था। जब कभी रामदास हमीरगढ जाता था तब वह उसे मग्घो कहकर ही सम्बोधित करता था। यह नाम पहले पत्ती की बुढियो और लडकियो मे गया ओर फिर पूरे गाव म फैल गया। साधवी वह रामदास के कारण थी।

सिर के बालो की चोटी उसने कुछ वर्ष तक ही बनाइ फिर वह अपने गाव के तरह का ही जूडा बाधने लगी। जूडा बाधकर साफा बाध लेती। केवल दो गज का सफेद साफा उल्टा सीधा करके लपेट लेती। हाथ मे छडी लिए रहती। भैसो को स्वय ही तालाब पर पानी पिलाने ले जाती थी। कुछ वर्ष तक सतोष का बेटा उसके यहा चरवाहा रहा। बाद को उसने उसे हटाकर दूसरे को रख लिया। सतोष का बेटा नुकसान करने लगा था। उसे चोरी की आदत थी। वह तालाब मे ले जाकर भेसे को कीचड मे सान लाता था। वह गालिया देने लगती सत्यानाशी सतोखे के बच्चे भैसो को नहलान ले गया था कि कीचड मे सानने ले गया था। क्या हाल कर दिया इनका?

मुहल्ले की कोइ ओरत उससे कुछ कहती ताने मारती या उसकी कोइ बुराइ करती तो वह चुप नही रहती थी। उल्टे उसको कोसने लग जाती थी। तब डर के मारे कोई उसस कुछ कहने की हिम्मत नही करती थी। मग्घो चोपाल के पास से होकर जा रही हाती और कोइ व्यक्ति उस पर बोली कसता तो वह पुरुषो की तरह ही खडी हो जाती ओर उसकी बोली का भरपूर उत्तर देती। उसने कितनो की टट्टी पतली कर दी थी। तब तो हर काइ उसे चाची कहकर सबोधित करने लगता। कोई उसकी ओर बुरी निगाह से नही दखता था। जेसे मुहल्ले की चोपाल म पीपल के नीचे तख्त पर बैठकर लडके बतियात थे—

अरे हमने कोन सा भूनकर बोया हे यार वह साला दूसर मुहल्ले से आता हे।

अर नही इस साला स ना डर लगता ह। छडा लकर जब चलती ह सिर पर पगडी बाधकर तो बस लगता हे कि अगर कुछ कह दिया तो सून डालेगी।

उस साली का बदन दख यार। गेद की तरह एकदम भरी भरा है। म तो किसा दिन इससे लिपट जाऊगा चाह यह छडी से पिटाड क्यो न कर दे।

देखना साले खाली मूली बरइया के छत्त मे हाथ मत डाल देना। यह कृपाल क सिवा ओर किसी से बात नही करती हे। उस साले मे पता नही कोन सा शहद लगा ह। थूथन तो दखो साले का घोडे जेसा है।

एक दिन वह भैसो को लेकर तालाब पर गइ। गमियो के दिन थे। पिछल पहर का समय था। गर्मी की वहज से भैस परेशान हो रही थीं। रस्सिया तुडाना चाह रही था और थूथन उठा उठाकर देख रही थी। भैसे तो दोनो तालाब मे धस तैरने लग गइ। उसके हो हो करने से भी बाहर नही निकली। उनको पानी मे बहुत आनद आ रहा था। वह स्वय तालाब वाले नीम के पेड की छाव मे खडी थी। छडी का सिरा कान के नीच लगाकर सहारा लिए थी। कही स पाखर का गुरदेव उसके पास आया और उसका हाथ पकडकर उस चारे के खेत की ओर घसीटकर ले जाने लगा। वह पुरुष आर यह स्त्री। उसने बहुतेरी गालिया दी शोर मचाया पर पास मे कही कोइ था नही। गुरदेव ने उसे अकेली खडी देखकर ताड लिया था। वह छोड नही रहा था। उसे चारे के खेत की आर घसीटे लिए जा रहा था। खीचातानी मे मग्घो की छडी उसके हाथ से छूट गइ। उसने हिम्मत करके शरीर की सारी शक्ति लगाकर झटका दिया। स्वय को उसकी पकड से छुडाकर दूर पडी छडी जाकर उठा ली ओर मर्दो की तरह सीधे वार करने लगी जैसे उस पर भूत सवार हो गया हो। उसके खीचने घसीटने मे ही गुरदेव हाफ गया था। वह हाफता रहा। फिर उसके सिर पर एक छडी ऐसी पडी कि उसका माथा फट गया। हाथ की अगुलियो और घुटनो मे भी काफी चोटे लगी।

स्त्री से हाथापाइ करते हुए वह किसी प्रकार भी अच्छा नही लग रहा था। कुछ ही देर मे उसका जुनून उतर गया ओर वह जान बचाकर भाग गया। भेसे तालाब मे से निकलकर घर जा रही थी। उनके बदन पर से पानी बहता जा रहा था। मग्घो के बदन से निकलता हुआ पसीना भी एसा ही था। उसने सिर के बालो का फिर से जूडा किया और जल्दी से साफा लपेटकर भैसो के पीछे पीछे चल दी। छडी कधे पर रख ली।

गुरदेव की मा का कहना था कि मेरा बेटा डगाल काटने के लिए शीशम के पेड पर चढा था वहा से गिर पडा। सिर फट गया।

शम के कारण वह कितने ही दिन घर से बाहर नही निकला। गाव के प्राइवेट डॉक्टर ने घर पर आकर ही उसके सिर पर पट्टी बाधी थी। मा ने गम इट से उसके हाथ पाव सेके थे।

जलकोर देखती थी घर वही था हाडी वही थी। अतर केवल इतना था कि पहले

य नौकर मनाप क घर नाया करना था अब य नौकर कृपाल क घर जाना ह। दिन रहा थ पहल य नलकार क दिन थ अब य मननान कार क दिन ह।

कृपाल उनक घर माना निकालकर भाता था नव मननान कार स्वय उस बुलाना था न कोइ माला क्या बात सकना था। नब श्याम बलगाडा लकर खन म चारा लेन जाता था उस समय वह घर आता था। चारा लन क लिए वह चाचा को भी भज दना था पर अधिकतर वह स्वय हा नाया करता था। वह मन का मालिक था।

उनको नलकार म कोइ डर या भय नहा था। उस सब पता था। नब वह आता था नलकार घर पर हा होता था। वह ना मुख का वहा म हटाकर कहा दूसरा आ ल जाता था। उस दुकान पर ल जाकर कोइ चाय दिलान लगता था।

मननान कार का नलकार क बार म पास पटास स सब पता लग चुका था। नलकार कुछ कहन का स्थिति म नहा था। क्या कहता वह तू अपन दिन भूल गई सामू ना मरा चाकरी करगा। फिर नलकोर को ता अब मननान कोर क हाथ म दिया हा खाना पाना था। उस ता अपन दिन काटन थ आर अब उसका था हा कान।

जिस दिन श्याम बठिड पशन लन जाता था उस दिन तो कृपाल का उनक घर म पक्का अड्डा हो जाता था। वह बठिडा पशन लेन जाता तो सनिक कटान स रम का बातल अवश्य लाता था। उसका काड बना हुआ था। चार बातल मिल जाता था। उसका महाना बढिया कट जाता था। वह अब पहल का भाति कृपाल क साथ बठकर दारू नहीं पाता था। अकला पाता थाडा पाता आर नित्य पाता था। एक बातल आठ दिन तक चलाता था। कवल एक पग भरकर रात पाता था आर शाम का खाना खा लता। पहले की तरह फालतू बात भा करना कम कर दा।

इश्वर की करना मुख क बाद मननान कोर क आर कोई आल बच्चा नहा हुआ। वह कहती थी कि वन म एक ही शर रहत ह आर मनान का क्या जरूरत ह।

21

गाव म प्राइमरा स्कूल था। श्याम लडक का स्कूल म छाडन गया ना वह वहा बठा ही नहा। उसक साथ हा घर लाट आया। घर आकर श्याम न चाचा म कहा यह ता लडका क पास भाचक्का सा खडा हाकर ताकता रहा। नब मन उनक पास बठन का कहा तो भागकर मरे परा स लिपट गया। मास्टर न बहुतरा पुचकारा पर इसन ता बदन स मास्टर का हाथ भी नहा लगन दिया। यह नहा पढना चाहता चाचा। यह ता मरा हा तरह रहगा गवार का गवार।

स्कूल जाया कर र सुख। दो अक्षर पट म पड जाएगे। दस जमात पास कर लगा ता किसी ठीहे स लग जाएगा। नहा ता जानवर का जानवर रहगा। टालता यू हा धक्क

खाता। मनजान कोर बेटे को गोद म लकर समझान लगी।

जानवर क्या होता है मा?

जानवर जिसमे अकल ना हा। जिसे अक्षरो का ज्ञान ना हो। अनपढ लाग जानवर ही होत हे आर क्या। फिर उस प्यार करने लगी मेरा बेटा तो खूब पढेगा।

मनजीत कोर ने फिर एक दिन चाची को भेजा अम्मा तुम जाओ। सुख को दाखिल कराके आओ। बहला फुसलाकर ले जाओ। तुम्हारे साथ तो चला जाएगा। मेन भी खूब समझा दिया हे। अब भागकर नही आएगा।

बसाखी बीत चुकी थी। अनाज का काम खत्म हो गया। वषा की आशा मे किसान अगला फसल बोने की तैयारी कर रहे थे। स्कूल मे यद्यपि पहली कक्षा का प्रवेश बैसाखा से पहले ही शुरू हो चुका था पर गाव के लडको को उन दिनो छुट्टी कहा होती है। मा बाप भी अषाढी का काम निबटाने मे लगे रहते है। उसके बाद छुट्टी मिलने पर ही लडके स्कूल जाना प्रारम्भ करने लगते है।

जलकौर लडके को स्कूल ले गइ। जाते समय बताशो का लिफाफा भी लेकर गइ। बोली शगुन होता है। लडका खूब पढेगा वह ठुमक ठुमक करता हुआ दादी के साथ जा रहा था। पर बुढिया रास्ते से ही वापस लोट आई। आकर बोली अरी बहू, हम इसे सुख सुख करते रहते है पूरा नाम क्या लिखाया जाए? सुख तो आधा नाम है।

मनजीत कोर के माथे पर बल पड गए। जेसे उसका दिमाग सुन्न हो गया हो। धरती की ओर देखे जा रही थी। फिर उसने आकाश की ओर देखकर धीरे से कहा सुखदयाल सिह कह देना।

सुखदयाल! लो भई सुख तुम अब सुखदयाल सिह हो। उसका पूरा नाम दुहराकर जलकौर प्रसन्न हो गई। सुख भी धीरे से हसने लगा।

मनजीत कौर गोबर कूडा साफ कर रही थी। दादी पोता तो स्कूल चले गए। पर मनजीत कौर से अन्य कोइ काम नही हुआ। वही-की वहीं बैठी रह गई। झाडू की बिखरी तीलिया ठीक करने लगी। सुक्खू का विचार उसे पानी पानी कर गया। वह लम्बी सासे लेने लगी। अत मे यह कहकर उठ खडी हुइ अरे अभागे तू चाहे जहा का भी रहा हो तेरा कोइ घर-बार भी था या नही अगर म तेरे ही पल्ले लग जाती तो पुरानी बाड की झाडी श्यामा फौजी काहे को मेरा नसीब बनता।

गाव से बाहर बाहर तालाब के किनार नए बने स्कूल मे दो मास्टर थे। एक मास्टर एक मास्टरनी। जलकोर सुख को मास्टरनी के पास ले गइ। नये लडके का प्रवेश वही करती थी। पहली कच्ची मे उनकी तरफ के और भी बच्चे पढते थे। लडके और लडकिया दोनो। सुख की ओर देख देखकर वे सब मुस्करा रहे थे। जिस दिन श्याम उसे स्कूल लकर आया था, उस दिन वे बच्चे नही थे। मास्टरनी ने सुख को गोद मे लेकर प्यार किया। पुचकारा भी बहुत। उसे दूसरे लडके लडकियो मे चटाई पर बैठा दिया। जलकोर से लिफाफा लेकर किसी और कक्षा की एक बडी लडकी से कहा कि पूरे स्कूल मे एक एक

बताशा सबका वाट द। पहल बताशा सुख का दिया गया। प्राइमग स्कूल था। स्कूल म लिफाफे के बताशे जितने ही विद्यार्थी थे।

मास्टरना ने उसका प्रवेश पत्र भर लिया ओर जलकार का अगूठा लगवा लिया। वह स्कूल स जान लगी ता सुख उदास हो गया। दादी की पीठ का ओर बुझा वुवा आखा स दखने लगा। मास्टरनी ने उसका ध्यान अपनी ओर किया आर उसे पास बुलाकर पूछा क्या नाम हे तुम्हारा भाइ?

सुख उसने उत्तर दिया।

नहा पूरा नाम बताओ।

सुखदयाल सिह। उसके मुह से उच्चारित यह नाम उसे बहुत प्यारा लगा। दूसर बच्चे खुश हो रहे थे और फिर वह जाकर टाटपट्टी पर बैठ गया। दूसरे बच्चे उसे बुलाने चलाने लगे। दादी को भूलकर वह उनमे ही हिलमिल गया। वे सब उसक घर के आस पास के ही बच्चे थे। व नित्य ही तो मिलते थे। एक साथ खेलत थे लडते भिडते थ।

वह रात को कभी मनजीत कार के साथ सोता। उसके मन मे कोइ भाव उठता ता वह उसे छाती से लगाकर भीच लेती। वह चीखने लगता। फिर भी वह उसे न छोडती। जलकौर जोर-जोर से कहती अरी बहू, क्यो तग कर रही है बच्चे को। सुख से कहती अब अलग खाट पर सोया कर रे। इतना बडा बकरा हो गया।

सुख के हाथो की उगलिया गिद्धो के पजो जेसी होती जा रही थी। वेसी ही आखे थी भेस की आखो जेसी मोटी-मोटी। नाक आर माथा वही था। उसकी आवाज म वही लहर थी। वह मनजीत कोर से लाड किया करता था। वह भागते दोडते सुख को पकडकर गोदी मे भर लेती। छोडती ही ना थी। लडके की चीख निकलने लगती। फिर वह उसे ढकेलकर दूर करते हुए कहती चल भाग जानवर कही का!

जलकोर मीठे तोर से झिडकती रहती बहू, तेरा लाड प्यार इस लडके को बिगाडकर रख देगा। इसे इतना मत दुलार किया कर। डाट के रखा कर।

जिस दिन उसने पहली बार कृपाल को पास से देखा था उसके हाथ दखे थे उसके हाथ की उगलिया देखी थी वे भी वेसी ही थी गिद्ध के पज जसी। कृपाल का चेहरा मोहरा सुक्खू जैसा था। फिर जब वह कृपाल के निकट हुइ, वह मिलते तो जेसे वह एकदम सुक्खू का प्रतिरूप लगता। वह आख बदकर लेती आर दिमाग मे सुक्खू का ध्यान करने लगती। उसके लिए बेगाना था तो श्याम बेगाना था।

श्याम उसका लोकाचारी पति था। उसका पति परमेश्वर था वह। उसका घरवाला उसका स्वामी। फोजी था फोजी के लिए औरत एक अलौकिक वस्तु होती ह। वह अब ब्याह कर आइ थी श्याम के लिए मात्र एक खिलाना थी। दिन रात उसा म लगा रहता था वह। कितना माह करता था पर श्याम का प्रेम उसे दिखावा जसा लगता था। उसकी हड्डियो मे तो सुक्खू रचा बसा था। वह बहुत प्रयत्न करती मन का समझाती कि श्याम

का अग प्रतिअग उस सुक्खू का अग प्रतिअग लग पर नहा। वह ना दूसरा हा व्यक्ति था ना उसके साथ बलात्कार करता रहता था। श्याम अपनी ही इच्छा की पूर्ति करता था। वह किसी माल का चाज का तरह बिकता रहता थी। मन भरा रहता देह झूठा का झूठा रहती। उसे ता पता भा नही लगना था कि किसी मद ने उसे भोगा हे।

आर फिर जब उसने सुख का जन्मा था तब उसके लिए एसा था जस उसके लिए लडक ने अवतार लिया हो। सुख का जन्म किसी अवतार का जन्म था। वह सुख क हाठा का उसका नाक के नथुनो को मत्थे को ओर हाथ परो का टा टोकर देखती रहता थी। वह उसके सुक्खू का अवतार था।

जलकोर जब सुख को गोदी मे लकर लोरिया देती तो मग्घो मन म हसती कितना भ्रम ह बुढिया को। श्याम बाहर से आता तो लडके के होठो पर उगली रखकर छी छा करता। लडका जसे व्यग से हसता रहता। वह चिंतित हो जाती पैदा होते ही कितना शेतान ह। हसकर किसी के भ्रम की खिल्ली उडा रहा हे। वह घबराकर लडके के होठो पर दो उगलिया रख देती। उसकी हसी रोकने का यत्न करती।

जलकार ओर श्याम को कोइ भ्रम नहा था। उन्हे पहले ही पता था कि बेटा रामदास का है। पर उन्हे और कुछ पता नही था। उनके लिए तो राम और श्याम एक ही बात थी। असली सच तो मग्घा के पास था। उसके मन का चोर कभी हसता था ओर कभी उदास हो जाता था। पर उसे भरोसा था कि यह भ्रम जैसा का तैसा ही बना रहगा ओर यू ही बना भी रहना चाहिए। फौजी इन बातो की चिता भी नही करते। जलकोर प्रसन्न थी कि उनके आगन मे उनका अपना बच्चा है।

मग्घो यानी मग्घो साधवी उर्फ मनजीत कोर को भली भाति ज्ञात था कि उसके बेटा जन्मने के बाद और उससे पहले हमीरगढ ब्याहे जाने के कारण पीहर और ससुराल दोना गावो मे उसके बारे मे कितनी ही अच्छी बुरी बाते हुइ थी और फिर जब उनके घर प्रीतम हवलदार का बेटा कृपाल आने लगा था मुहल्ले के लोगो ने केसी-कैसी गदी बाते नही उछाली थी। वह सोचती आर सोचती रहती पर अपना मन कडा रखती। लोग ता कुत्ते हे भोकते रहते हे। मेरा क्या बिगाड लेगे। क्वारी की तरह रहती हू। मुझे अपने शरीर का धम कायम रखना हे। इस जले मरे बेकार बेल का मै क्या करू? क्या इसके साथ ही लोथ बनकर जिदगी बिता देती? मनजीत कोर सरेआम कृपाल को घर बुलाती थी। उसकी सास जलकोर तो उसकी हिमायती थी अब। फोजी श्याम सिह बुद्धू बना रहता। जेसे उसे सब बाते पता हो। जेसे उसे किसी भी बात का पता ही ना हो। पाव म नागरा जूती कुर्ता सलवार ओर सिर के बालो का जूडा करके वह चार खाने के कपडे का साफा बाधती थी। दूर से देखन पर पुरुष लगती थी। पर पास आन पर उसका कुता सलवार बताता था कि वह स्त्री है। नाक कान मे वह कोड आभूषण नही पहनती थी। हाथो मे चूडिया भी नही। हाथो की उगलियो मे छल्ला अगूठी भी नही पहनती थी। सीधे हाथ मे वर्षो पुराना लोहे का कडा पडा रहता था। यह कडा उसके

विवाह से भी पहले का था। पहनावे से वह आधा औरत और आधा मर्द लगता था। स्वभाव और बोलचाल से भी पूरी मर्द था। पर शारीरिक अहसास से पूर्ण स्त्री। वह रूप की चाट पर पूर्ण नारी बनी रहती थी। उसे किसी का भय नहीं था। फिर भी उसकी सास पूरी सास थी वह उसकी सेवा करती थी। श्याम सिंह उसके सिर का छाता लिए था वह उसका स्वामी था। वह उसे भरपूर चाहती थी ओर उसका हक रखता था। सोने सा उसका बेटा था सुखदयाल। वह दस किल्ले जमीन की स्वामी थी। दूध घी पान खाने को भरा था। पूरी घर गृहस्थी उसकी थी। शरीर का धर्म निभाने के लिए कृपाल था।

और फिर जैसे वह सुक्खू को भूल ही गई हो। सुक्खू की एवज मे कृपाल आ गया। वह आख बद करके अनुभव करती कृपाल के अगो मे से उसे वही सुख मिलता। जैसे सुक्खू उसका कृपाल हो। वह चाहती कि कृपाल बोले ना कोई बात ना करे परम आनद दे और चला जाए। ऐसा ही वह अपने बेटे सुख की ओर देखकर अनुभव करती। बहुत ज्यादा मोह जागता तो उसे भागते दौडते को पकडकर बाहो मे भीच लेती। उसकी सास रुक जाती। वह चिल्लाने लगता। सुक्खू की उम्र भर की निशानी था उसका यह जरा सा सुख सुखदयाल।

कृपाल ओर सुख की मिश्रित अनुभूति ने जेसे उसे सुक्खू का अस्तित्व विस्मृत कर दिया था। जेसे सुक्खू तो कभी रहा ही नही। जेसे मग्घो ने उसे कभी सपने मे देखा हो। सपने मे उसे भोगा हो। आख खुलने पर सपना तो थोडी देर ही याद रहता है। दूसरे दिन तो यह भी याद नही रहता कि कभी ऐसा कोई सपना देखा था।

फिर भी कभी कभी उसका मन तरगित हो उठता। आखे भर आता। वह अकेली बैठकर रोती ओर सुक्खू के अस्तित्व को पानी की तरह बहाती रहती। उसकी हड्डियो मे से वह निकल नही पाता था। हड्डियो मे पारा बनकर बेठ गया था। दिन के समय उसका अहसास भुलाए रखती तो वह रात को स्वप्न मे दिखाई दे जाता। वह इस लोक धारा पर विश्वास करने लगती कि जो आदमी सपने मे दिखाई दे वह मर चुका होता है। एक प्रकार से सुक्खू उसके लिए मर खप ही चुका था।

यदि उसे इसी प्रकार भाग जाना था तो कम्बख्त ने इतना मोह क्यो किया। छाती ठोककर कहता कि मग्घा मेरा हे। चाहे वह मुझे कुए मे फेक देता। कहा भी ले जाता। मै तीन कपडो मे ही उठकर उसके साथ चल देती। रोटी कमाने के काबिल तो हम थे ही। कही भी मिल जाती। जाट का बेटा था थोडी बहुत जमीन भी होगी ही। हम गुजारा कर लेते। मन मे वह उसे बुरा भला भी कहने लगती। डरपोक था उसके कीडे पडे। दाग लगाकर भाग गया कहा। वह केवल शरीर का स्वाद लेना जानता था। घर क्या होता है यह अहसास तो उसके वजूद मे उसके दिमाग मे कही था ही नही। एक दिन भी उसने यह नही कहा कि हम घर बसाएगे।

वह स्वय को भी बुरा भला कहने लगती। तब मै भी अल्पज्ञानी थी इन दिनो का

न्य का कमा नहा ह। काइ भा काम कर ला। कमाइ करन पर ब्याह भा कभा हा न नाएगा। कान सारा दुनिया के पास जमान ह। जनिए बरूकाल भी तो किसी तरह गुनाग करत हा ह।

उसक जाजा न उसे एक साइकिल खरा दी। दूध वाले दा केन भी। शरपुा नाकर हलवाइ स बात करवा दा। फिर वह सुक्खू का लकर उसके गाव घनारा आया। वह ताऊ क घर हा रुके। ताऊ हमदद था। चार पाच घर जाकर उसका दूध बधवा दिया। ताऊ क पास अपनी भा भसे थीं। वह किसा अन्य दूधिय को दूध देता था। उस दिन से हा उस हटा दिया गया। ताऊ के यहा का दूध भी सुक्खू ठान लगा।

दा दिन क भीतर ताऊ न सबात खाली कर दा। सुक्खू बोला बाबा का यहा रहने दा। मरा मन भी लगा रहा करेगा।

सुक्खू का धधा अच्छा चलन लगा। हाथ परा का तो वह पहल से ही तगडा था। कनो स लनी साइकिल भी बहुत तज चलाता था। छ महाने म हा उसकी आथिक स्थिति ठीक हो गइ। पेसे बचन लगे थे। शेरपुर क एक बेक मे उसने अपना बचत खाता खोल लिया था। हर महीन रुपए जमा करके कापी मे लिखवा लता था। घर खूब साफ सुथरा रखता था। बत्ती वाला स्टाव ल आया था। रोटी टूक खुद बनाता था। यह सब कउ उसने मठो मे रहकर सीख लिया था। रात को बाबा के पास बैठक म सा जाता था। दादा पोता बाते करत रहते। बूढा उसे शिक्षा देता रहना कमाइ करनी चाहिए सुक्खू, काम कोइ भी हो। सब ठीक हो जाएगा। ब्याह भी हो जाएगा तेरा। इसकी जरा भी चिना मत करना। इश्वर सब का भला करता ह तेरा भी करेगा।

उसके दिमाग मे आर भी औरते थी पर टिब्बे वाली लडकी दिल म बठी रहता थी। उसने कइ बार साचा कि उससे किसी-न किसी तरह कभी मिला जाए। वह अभा भी टिब्बे म कही होगी? उसका विवाह हो गया होगा। उसके पास अब तो कइ बच्च भा हाग। पर क्या पता अभी शादी न हुइ। घर म ही बठा हो। साधुओ के मठो पर जाने वाली लडकिया अक्सर भगतिन बनकर ही रह जाती ह। उनका ब्याह कही नही हाता हे।

एक दिन रात को उसके मन मे हुन्क उठी कि वह रोडूशाह की मडी जाए आर वहा स मग्घा का पता लगाए। टिब्बे के बहुत से व्यक्ति वहा मिल जाएगे। वह टिब्बे क लगभग सभी लोगो को जानता था। पर वह दूध का क्या करे। अगर वह दा दिन क लिए कहा चला गया तो भेसो वाले गालिया देग। हलवाइ कान सा छोड देगा। यह साला बडी मुसीबत है। वह तो नित्य का बधुआ होकर रह जाता हे। आखिर उसने गाव के एक लडक को तेयार किया। वह लडका उनके मुहल्ल का ही था। उसके रिश्ते मे भी लगता था। उसकी तरह से वह भी कभी दूध का धधा किया करता था। बाद का सावे म जमीन लकर खेती करने लग गया था। वह कभी कभी उसक पास सवात म आकर बठ जाया करता था। दोना घर की बनाइ शराब पीत थे और अडे की भुजिया बनाकर राटी खात थे। रोटिया घुल्ला अपने से ल आता था। व आपस मे खुलकर वात कर लेते

थ। सुक्खू ने एक दिन रात को घुल्ला स अपना द ुखडा कहा। वह बोला तू काह की चिता करता ह यार। जा जितन दिन लगत ह लगा आ।

दूसर दिन दूध वाला क सभा घरा म उसने कह दिया कि कल से दा दिन तक घुल्ला दूध न लाएगा। उस कहा बाहर जाना है। बहुत जरूरी ह।

उसन स्वय का घाडे की तरह सजाया सवारा। पहले बरनाला गया। बरनाला स राडशाह की मडा गया। मडी म डरता डरता यू गया जसे काइ चोर हो ओर अपनी सेध दखन आया हा। उसका चार उसक मन मे घुसा बठा उसे बुरी तरह से डरा रहा था। उसे यह नहा पता था कि उसके बाद मग्घो का क्या हुआ। क्या उसका कोइ इलाज हुआ या कि उसका विवाह हो गया? या वह विष खाकर मर गइ? सब कुछ अधकार म था। जब वह यह सोचता कि क्या ह उसकी इस बात का किसी को पता ही नही लगा होगा। तब उसे राहत मिलती। शायद मग्घा का चुपचाप ही कही छुटकारा हो गया हो। उसका दिल कापने लगा जब उसे याद आया कि उस दिन मठ मे आकर लगर के पीछ बन गुसलखाने म उसन गुस्से मे आकर पहले तो अपनी छाती पीटी थी आर फिर उसके सिर क बाल खीच दिए थे। दातो से अपनी हथली चबाते हुए कह रही थी जी चाहता ह तुझ कच्चा ही खा जाऊ। बता अब म अपना क्या इलाज कराऊ? कहा जाऊ क्या करू? मुझे तीन महीने से महीना नही हुआ'

मडी क फाटक क भीतर एक आर जहा कपास के ढेर लगे हुए थे वही उसे टिब्बे क कइ लोग दिखाई दिए। वह तो उन सबको पहचान रहा था पर वे उसको नही पहचान पा रह थे। उसे कोई बुला नही रहा था। क्या बुलाता कोइ उसको वह सुक्खू तो यह था ही नही। यह तो कुता पाजामा पहने था। सिर पर टोटीदार पेचदार पगडी बधी हुइ थी। सीधे हाथ मे सोने का कडा था। बाए हाथ मे घडी बधी थी। यह तो काइ अच्छा भला व्यक्ति था। वह सुक्खू तो और था। सिर पर सफेद दुपट्टा लपेट हुए। गले मे घुटना तक लटकता बादामी रग का चोगा। परो मे टूटी हुइ पुरानी चप्पले। अब वाले सुक्खू के पावो मे तो कढी हुइ चमचमाती जूती थी।

भइ वाह' यह तो कमाल हो गया। आढती की दुकान से निकलकर धीरे धीरे चलता हुआ उसे धन्ना बुड्ढा दिख गया। दूध सी सफेद दाढी खुली हुइ। सिर पर अगोछा लपेटे था। बदन पर सफेद चोगा था पिडलिया तक का। पेरो मे चमरौधा जूती थी पुरानी पुरानी। यह तो वही है। सुक्खू जार से खखारा और उसने धन्ना की बाह पकडकर पूछा कहा बाबा धनसिह।

बुड्ढे की आयु अस्सी के आस पास होगी। दिखाइ भी कम दने लगा था शायद। इतने साला के बाद ओर फिर इस वेश म वह पहचान नही सका कि वह सुक्खू ह। उसकी आवाज से उसने कुछ अनुमान जरूर लगाया पर उल्टे पूछ लिया कोन हो भइ म तो तुम्हे पहचाना नही।

बाबा मे सुक्खा हू। याद करा। दुल्ले की ढाब पर था ना म। हम कितन दिना

न्य रा रूमा नहा ह। राइ भा राम रार ला। रामाइ ररन पर ब्याह भा कभी हा हा नाएगा। रान सारा दुनिया क पास नमान ह। ननिए बस्काल भी तो किसी तरह गुनाग ररत हा ह।

उसरा जाजा ने उस एरा साइकिल खरा दा। दूध नाले ना केन भी। शगपा नाकर हलनाइ स बात करवा दी। फिर नह सुक्खू का लकर उसके गान घनारा आया। नह ताऊ के घर हा रुके। ताऊ हमदद था। चार पाच घर जाकर उसका दूध बधना दिया। ताऊ रा पास अपनी भा भसे थीं। वह रिसा अन्य दूधिय रा दूध देता था। उस दिन स हा उस हटा दिया गया। ताऊ के यहा का दूध भी सुक्खू ठाने लगा।

दा दिन के भीतर ताऊ न सबात खाली कर दा। सुक्खू बोला बाबा को यहा रहने दा। मरा मन भी लगा रहा करगा।

सुक्खू का धधा अच्छा चलन लगा। हाथ परा रा तो वह पहल से ही तगडा था। रोनो स लदी साइकिल भी बहुत तज चलाता था। छ महीन म हा उसकी आर्थिक स्थिति ठीक हो गइ। पसे बचने लगे थे। शेरपुर के एक बरा मे उसने अपना बचत खाता खाल लिया था। हर महीने रुपए जमा करके कापी मे लिखवा लेता था। घर खूब साफ सुथरा रखता था। बत्ती नाला स्टाव ले आया था। रोटी टूरा खुद बनाता था। यह सब कुछ उसने मठा मे रहकर सीख लिया था। गत रो बाबा के पास बेठक मे सा जाता था। दादा पोता बाते करत रहते। बूढा उसे शिक्षा देता रहता कमाइ करनी चाहिए सुक्खू, काम कोइ भी हो। सब ठीक हो जाएगा। ब्याह भी हो जाएगा तेरा। इसकी जरा भी चिता मत करना। इश्वर सब का भला करता ह तेरा भी करेगा।

उसके दिमाग मे आर भी औरते थी पर टिब्ब वाली लडकी दिल म बठी रहना था। उसने कइ बार साचा कि उससे किसी-न किसी तरह कभी मिला जाए। वह अभी भी टिब्बे म कही होगी? उसका विवाह हो गया होगा। उसके पास अब तो कइ बच्च भी होग। पर क्या पता अभी शादी न हुइ। घर म ही बेठा हो। साधुआ के मठो पर जाने वाली लडकिया अक्सर भगतिन बनकर ही रह जाती ह। उनका ब्याह कही नही हाता ह।

एक दिन रात का उसके मन मे हुडक उठी कि वह रोडूशाह की मडी जाए आर वहा स मग्घा का पता लगाए। टिब्बे क बहुत से व्यक्ति वहा मिल जाएगे। वह टिब्बे के लगभग सभी लागो को जानता था। पर वह दूध का क्या करे। अगर वह दा दिन के लिए कही चला गया तो भैसो वाले गालिया देगे। हलनाइ कान सा छोड देगा। यह साला बडी मुसाबत ह। वह तो नित्य का बधुआ होकर रह जाता हे। आखिर उसने गाव के एक लडके को तैयार किया। वह लडका उनके मुहल्ल का ही था। उसके रिश्ते मे भी लगता था। उसकी तरह से वह भी कभी दूध का धधा किया करता था। बाद का साथ म जमीन लकर खती करने लग गया था। वह कभी कभी उसके पास सबात म आकर बठ जाया करता था। दोनो घर की बनाइ शराब पीत थे और अडे की भुजिया बनाकर राटी खाते थे। रोटिया घुल्ला अपने से ल आता था। वे आपस मे खुलकर बात कर लेते

थ। सुक्खू न एक दिन रात को धुल्ला स अपना दु खडा कहा। वह बोला तू काह की चिंता करता ह यार। जा जितन दिन लगत ह लगा आ।

दूसर दिन दूध वालो क सभा घरा म उसन कह दिया कि कल से दा दिन तक धुल्ला दूध ल जाएगा। उसे कहा बाहर जाना हे। बहुत जरूरी ह।

उसन स्वय का घाड का तरह सजाया सवारा। पहले बरनाला गया। बरनाला स रामपुरा शाह की मडा गया। मडी म डरता डरता यू गया जसे काइ चोर हो ओर अपनी सेध दखन आया हा। उसका चोर उसक मन मे घुसा बेठा उसे बुरी तरह से डरा रहा था। उसे यह नही पता था कि उसके बाद मग्घो का क्या हुआ। क्या उसका कोइ इलाज हुआ या कि उसका विवाह हो गया? या वह विष खाकर मर गइ? सब कुछ अधकार मे था। जब वह यह सोचता कि क्या ह उसकी इस बात का किसी को पता ही नहा लगा होगा। तब उसे राहत मिलती। शायद मग्घा का चुपचाप ही कही छुटकारा हो गया हो। उसका दिल कापने लगा जब उसे याद आया कि उस दिन मठ मे आकर लगर के पाछ बने गुसलखाने मे उसन गुस्से मे आकर पहले तो अपनी छाती पीटी थी आर फिर उसके सिर क बाल खीच दिए थे। दातो से अपनी हथली चबाते हुए कह रही थी जी चाहता ह तुझे कच्चा ही खा जाऊ। बता अब मे अपना क्या इलाज कराऊ? कहा जाऊ क्या करू? मुझे तीन महीन से महीना नही हुआ!

मडी क फाटक क भीतर एक आर जहा कपास के ढेर लगे हुए थे वही उसे टिब्बे क कइ लोग दिखाई दिए। वह तो उन सबको पहचान रहा था पर वे उसको नही पहचान पा रह थे। उस कोई बुला नही रहा था। क्या बुलाता कोइ उसको वह सुक्खू तो यह था ही नही। यह तो कुता पाजामा पहने था। सिर पर टोटीदार पेचदार पगडी बधी हुई थी। सीधे हाथ मे सोने का कडा था। बाए हाथ मे घडी बधी थी। यह तो काइ अच्छा भला व्यक्ति था। वह सुक्खू तो और था। सिर पर सफेद दुपट्टा लपेटे हुए। गले मे घुटनो तक लटकता बादामी रग का चागा। परो मे टूटी हुइ पुरानी चप्पले। अब वाले सुक्खू के पावो मे तो कढी हुइ चमचमाती जूती थी।

भई वाह! यह तो कमाल हो गया। आढती की दुकान से निकलकर धीरे धीर चलता हुआ उसे धन्ना बुड्ढा दिख गया। दूध सी सफेद दाढी खुली हुइ। सिर पर अगाछा लपेट था। बदन पर सफेद चौगा था पिडलिया तक का। पेरो म चमराधी जूती थी पुरानी पुरानी। यह तो वही है। सुक्खू जोर से खखारा ओर उसने धन्ना की बाह पकडकर पूछा कहा बाबा धनसिह।

बुड्ढे की आयु अस्सी के आस पास हागी। दिखाइ भी कम देने लगा था शायद। इतने सालो के बाद ओर फिर इस वेश मे वह पहचान नही सका कि वह सुक्खू ह। उसकी आवाज स उसने कुछ अनुमान जरूर लगाया पर उल्टे पूछ लिया कान हा भइ मे तो तुम्हे पहचाना नही।

बाबा मे सुक्खा हू। याद करा। दुल्ले की ढाब पर था ना मे। हम कितन दिना

नफ साथ साथ रह ह। उसन जल्दी नल्दी पर धाम स्वर म कहा।

धन्ना सिह न दाबारा उसके चहरे की आर दखा। आश्चय म हाकर बोला अच्छा। तू एसा एसा हा गया अब?

हा बाबा म गाव चला गया हू। मठ सठ सब छोड दिए ह। अपन घर पर हू। अपना काम करता हू। अच्छे दिन कट रह हे। फिर बोला तुम बाबा इधर आआ। मरे साथ चलो। हमे कुछ वात करनी ह। इधर टेशन की ओर चलते ह। किसी चाय की दुकान पर बठेग।

वहा जाकर क्या होग भाई। यही कर ला वाते। यहा हमे किसका डर हे। तू अपना हालचाल सुना। कहा रहता ह तू?

नही यहा नही ठीक हे। वह बाबा का बाह पकडकर ओर उसे धीर धीर चलाकर उधर रलवे स्टेशन की दुकानो की ओर ले गया। एक दुकान पर जाकर चाय मगवा ला। वह एक कोने मे जाकर बठ गए। सुक्खू पूछने लगा बाबा म तुम्हारा बच्चा हू। तुम मुझे दा तीन बाते बता दो। पहले तो यह बताओ कि मठ का महत आजकल कान हे? तुम मठ म ही रहते हो या कही और?

मरा आर कान हे। मे तो वही पर हू। अब शरीर नही रह गया हे। अब सत मुझे भिक्षा के लिए नही भेजते हे। खाना पीना खा पी लेता हू ओर पडा रहता हू। आज तो मुझे मडी के लिए बाबा ने ही भेजा है। एक काम था।

आजकल सत कोन है?

वही बाबा हे सत रामदास जी। वही है। ओर कोन आएगा अब वहा।

सत रामदास का नाम सुनकर सुक्खू को कपकपी छिड गइ। तुरत ही धन्ना सिह का पर छूकर बोला कि वह सत से यह बिल्कुल नही बताए कि सुक्खू से मिला था। फिर पूछा बाबा यह बातओ वह ताता ढिड्डल की पोती मग्घो एक लडकी थी ना

धन्ना सिह बीच म ही बोल पडा हा बता। पूछ उसके बारे मे क्या पूछना हे?

वह मठ मे पढा करती थी ना। फिर यू भी आती रहती थी। वह अब कहा ह

उसका तो विवाह हो गया था भइ।

कहा ब्याही गइ थी? सुक्खू ने जल्दी से पूछा।

बूढ धन्ना सिह को उसकी किसी बात का पता नही था। इसलिए उसने मन म जा बालने मे कोइ तत्परता नही थी। वह सीधे स्वभाव बता रहा था। उसने उत्तर दिया सत के बडे भाइ के साथ ब्याह हो गया था उसका। वह तो फोजी था। अब तो इश्वर का कृपा स उसक एक लडका भा ह। काफी बडा हा गया ह। मग्घो कभी कभी टिब्बे मे आता रहती ह। मठ का भी चक्कर लगा जाती ह।

बाबा का गाव कहा हे?

तुम सत का इतना जल्दी भूल गए। हमारगढ बुढलाड क पास ह।

धन्ना सिह धार धीरे चाय की चुस्किया भी भरता जा रहा था। सुक्खू की चाय ठण्डा हो गइ थी। उसन गिलास उठाया आर चाय पानी की तरह पी ली।

जब वह राढूशाह पहुचा था दोपहर हो चुकी था। उसका जी किया कि अभी बुढलाड जाकर वहा स हमीरगढ अपना मग्घा के पास पहुच जाए। उसके परो पर सिर रखकर राए। वह जब राए तो उसको अपनी बाहो मे भरकर चुप कराये। पर उसकी वुद्धि न सलाह दी कि वह अपने गाव लोट जाए। सुबह तडक उठकर वहा स चल आर फिर उसन यही किया। धन्ना सिह के पाव छुए। कहा बाबा तुम्ह हमारा कसम ह मठ म जाकर मेर बारे म सत स कोइ बात मत बताना।

अर नही कहेगे भाइ। हम ऐसी ऐसी बाते अपन मन मे दबाए बठ हे कि क्या बताए तुम्हे। एक तेरी बात पेट मे नही रखी जा सक्ती क्या।

दूसरे ही दिन वह घनौरी से चल पडा। दिन अभी निकला भा नही था। रात को आकर उसने घुल्ल स यह सब कहा था तो उन्हाने डटकर दारू पा थी। सुक्खू न घुल्ले से सभी बात बताइ। घुल्ला भावुक होकर उसस कह रहा था कि यदि उसे डर लग रहा हो तो वह उसके साथ चले क्या?

सुक्खू बोला तू क्या करेगा भइ मरे साथ चलकर। यदि मग्घो मुझे पहचानेगी मरी कद्र करेगी तब तो म अकेला ही ठीक हू। अगर जूतिया पडी तो मै चुपचाप लोट आऊगा। आर क्या हागा।

रान लगा पर यह बात पक्की हे कि वह लडका मेरा ही है।

अरे यह केसी बात कर रहा हे यार तू। तेरे साथ इतना रही ह तुझे क्यो नहा वह पहचानेगी। तू तो उसका ईश्वर है। एक बार जा तो सही। तुझे आने नही देगी वह। तुझे वह रख लगी। तू दूध की चिता मत करना। जितने दिन तू नही आएगा म स्वय यह काम करता रहूगा।

बुढलाड जाकर सुक्खू दोपहर स पहल ही हमीरगढ जा पहुचा। पैदल गया था बुढलाडे स हमीरगढ पास मे ही था। वह हवा की भाति गाव मे पहुच गया। उसे फोजी का नाम नही पता था। पूछा रामदास जो रोडूशाह की मडी के पास दुल्ले की ढाब के सत हे उनका घर कौन सा हे?

आदमी स्वय उसके साथ जाकर उसे श्याम के घर छाड आया। श्याम घर पर ही था और जलकौर चाची भी थी। सुख आगन मे खेल रहा था। उस दिन स्कूल नही गया था।

श्याम न उसे वराड मे खाट पर बेठा लिया। पूछा भाइ कहा स आए हो?

उसन बता दिया। घनारी स श्याम का उसके घर के किसी भी व्यक्ति का काइ सम्पक नही था। उसने भीतर जाकर चाची का बताया। मनजीत कौर ने भी सुना। आदमी का नाम सुखदयाल सिह है। आर वह घनारी खुद स आया है। कह रहा हे कि वह टिब्बे

जाला का जानता ह। बम जू हा मिलन चला आया ह। टिब्ब म दुल्ल का ढाव पर उसका आना जाना ह।

मनजात कार यह सुनकर कापन लग गइ। उसन आगन म खलत हुए सुख का आर दखा। ना जान क्या क्या क्षण भर म हा वह साच गइ आर फिर धीर धार चलकर वराड म आइ। वह एस खडा हा गया जसे उस बिजली का करेट लग गया हा। मनजात कार न उसम सत श्री काल कहा। उसका हालचाल पूछा। यह भा पूछा कि अब वह कहा ह। सुक्खू छाट छाट उत्तर द रहा था। माम की तरह पिघला हुआ था।

कुछ दर क बाद हा वह वराड स उठकर अदर सबात म आ गइ। चाचा स बाला कि वह उस आदमा क लिए चाय बना द। यह सत के मिलन जुलन वाला ह।

जलकार न चाय बनाइ आर गडवी गिलास लेकर वराड मे चली गइ। श्याम सबात म हा था। मनजात कार न श्याम का बताया कि यह आदमी अच्छा नही ह। दुल्ले का ढाव पर सत क मठ म रहता था। अब यह भेष बदलकर डोल रहा ह। इस चाय पिलाओ आर चलता करा।

राम सरूप अणखी

जन्म 28 अगस्त 1932

स्थान धाला निला सगरूर (पजाब)

शिक्षा एम ए (पजाबी)

प्रकाशन पजाबी म नौ उपन्यास ओर अढाइ सौ कहानियाँ। हिन्दी मे पाँच उपन्यास आर पाँच कहानी-सग्रह प्रकाशित। गुजराती म तीन उपन्यास ओर दो कहानी-सग्रह छपे ह। एक कहानी-सग्रह अग्रेजी मे भी। कोठे खडक सिह उपन्यास नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया की ओर स दस भारतीय भाषाओ मे अनूदित।

पुरस्कार 'काठे खडक सिह (कहानी एक गाँव की) उपन्यास पर 1987 का भारतीय साहित्य अकादमी पुरस्कार। भारतीय भाषा परिषद् कोलकाता का 1990 का पुरस्कार। पजाबी साहित्य अकादमी लुधियाना का 1992 का करतार सिह धालीवाल पुरस्कार।

सम्पादन 'कहानी पजाब (त्रैमासिक पत्रिका)

सम्पर्क गली न 11 कच्चा कॉलेज रोड बरनाला—148101 (पजाब)

फोन 0167-3933915 3935617